प्रकाशन की तिथि प्रत्येक माह की 23 तारीख वर्ष 15 अंक 8 Postal Registration No. RJ/UD/29-62/2015-2017 Posting Date : 27th-28th of Every Month RNI No. : RAJHIN/2003/9297 Posting Office : Shastri Circle, Udaipur

ISSN 2349-6614

अक्टूबर, 2017

मूल्य : 25 ₹

# प्रत्यूष

हिन्दी मासिक पत्रिका

न हो रोशन जब तलक, कोना-कोना
हर घर-देहरी दीप जलता रहेगा।
अंधकार से युद्ध, कोमल बाती का,
सदा चलता रहा है, चलता रहेगा।

# ST. MATTHEW'S
## SR. SEC. SCHOOL

**ADMISSION OPEN**

**NURSERY TO XII**

**(ARTS, SCIENCE, COMMERCE)**

A LIGHT TO THE NATION

Affiliated to CBSE

## OUR FEATURES

Academic Excellence
Expert Science & Commeres Faculty
Personalised Care
Enrichment Programmes
Scholarship for Meritorious Students

**Required : Dance Teacher**

OPP. SANJAY PARK, RANI ROAD, UDAIPUR, PHONE: +91-294-2433184 | www.stmatthews.in

'प्रत्यूष' के प्रेरणा स्रोत मात श्रीमती प्रमिला देवी शर्मा एवं तात श्री आनन्दी लाल जी शर्मा
प्रत्यूष परिवार का शत्-शत् नमन चरणों में पुष्प समर्पण

ज्योति पर्व दीपावली एवं 'प्रत्यूष' हिंदी मासिक पत्रिका के 16वें वर्ष में प्रवेश पर सहयोगियों, विज्ञापनदाताओं एवं शुभचिंतकों को हार्दिक मंगलकामनाएं।


अक्टूबर 2017
वर्ष 15, अंक 8

मूल्य 25 ₹
वार्षिक 300 ₹


प्रत्यूष
शुभ दीपावली

# प्रत्यूष


प्रधान सम्पादक विष्णु शर्मा हितैषी

सम्पादक रेणु शर्मा

प्रबन्ध सम्पादक नीरज शर्मा, डॉ. वीणा शर्मा

विपणन प्रबन्धक नितेश कुमार, नन्द किशोर मदन, भूमिका, उषा चन्द्रप्रभा, संगीता

टाइप सेटिंग जगदीश सालवी

Supreme Designs
कम्प्यूटर ग्राफिक्स विकास सुहालका

मुद्रक पायोराइट प्रिन्ट मीडिया प्रा. लि.
गुलाब बाग रोड, उदयपुर (राज.) फोन : 2418482, 241065

9

सलाहकार मण्डल
गोपाल शर्मा (गोपजी), वैभव गहलोत
पवन खेड़ा, नीरज डांगी, कुलदीप इन्दौरा
क्रष्ण कुमार हरितवाल, धीरज गुर्जर, अभय जैन
गजेन्द्र सिंह शक्तावत, लाल सिंह झाला
ओम शर्मा, अजय गुर्जर, आदित्य नाग
हेमन्त भागवानी, डॉ. राव कल्याण सिंह
अशोक तम्बोली, सुन्दरदेवी सालवी

छायाकार :
कमल कुमावत, जितेन्द्र कुमावत,
ललित कुमावत

चीफ रिपोर्टर : उमेश शर्मा

जिला संवाददाता
बांसवाड़ा - अनुराग वेलावत
चित्तौड़गढ़ - संदीप शर्मा
नाथद्वारा - लोकेश दवे
डूंगरपुर - सारिका राज
राजसमंद - कोमल पालीवाल
जयपुर - राव संजय सिंह
मोहसिन खान



प्रत्यूष में प्रकाशित सामग्री में व्यक्त विचार लेखकों के अपने हैं, इनसे संस्थापक-प्रकाशक का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

सर्व विवादों का न्याय क्षेत्र उदयपुर होगा।





प्रत्यूष
हिन्दी मासिक पत्रिका
प्रकाशक - संस्थापक :
Pankaj Kumar Sharrma
''रक्षाबंधन'', धानमण्डी, उदयपुर-313 001


## अन्दर के पृष्ठों पर...


06 ट्रिपल तलाक



मुस्लिम महिलाओं ने जीती ज़िंदगी की जंग

14 ज्वलंत प्रश्न



यातनागृह बनते स्कूल

12 चिंतन

स्वार्थ, परमार्थ और सद्गुरू



16 कीर्तिशेष



डेस्टिनी ऑफ इंडिया प्रियदर्शिनी इंदिरा गांधी

20 डर्टी पिक्चर



ब्लू व्हेल गेम नहीं मौत का मायाजाल



कार्यालय पता : 'रक्षाबन्धन' धानमण्डी, उदयपुर (राज)
दूरभाष : 0294-2427616, 2414933, 2413477, 2100408-09, फेक्स : 0294-2525499
मोबाइल : 94141-57703(विज्ञापन), वाट्सएप 75979-11992(समाचार-आलेख), 98290-42499(वाट्सएप), 94141-66737
visit us at : www.pratyushpatrika.com, E-mail : pankajkumarsharrma@pratyushpatrika.com
pankajkumarsharma2013@gmail.com



स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक, संस्थापक, स्वामी पंकज शर्मा की ओर से मुद्रक आशीष बापना द्वारा मैसर्स पायोराइट प्रिन्ट मीडिया प्रा. लि. गुलाब बाग रोड, उदयपुर से मुद्रित तथा 'रक्षाबन्धन' धानमण्डी, उदयपुर से प्रकाशित।

# अर्थ डायग्नोस्टिक्स

Meaningful Authentic & Dedicated

No. 1

उदयपुर में ही नहीं

## राज्य में भी सर्वप्रथम

रिसर्च, उच्च गुणवत्ता, मरीजों की संतुष्टि, सही ब्लड तथा डायग्नोस्टिक रिपोर्ट जैसे अन्य मानकों पर खरा उतरा उदयपुर से एकमात्र अर्थ डायग्नोस्टिक्स सेन्टर

माननीय मुख्यमंत्री **श्रीमती वसुन्धरा राजे जी सिंधिया** की उपस्थिति में माननीय इण्डस्ट्रीयल मंत्री **श्री राजपाल सिंह शेखावत** तथा भाजपा के प्रदेशाध्यक्ष **श्री अशोक परनामी**

**अर्थ डायग्नोस्टिक्स के CEO डॉ. अरविन्दर सिंह को उत्कृष्ट स्वास्थ्य सेवाओं के लिए राज्यस्तरीय बिजनेस लीडर अवार्ड-2017 से सम्मानित करते हुए।**

### उपलब्ध सुविधाएं

- पैथोलोजी जाँचे
- डिजिटल एक्स-रे
- ऑटोमेटेड ECG
- कलर सोनोग्राफी 3D/4D

दक्षिणी राजस्थान की सर्वप्रथम व एकमात्र 3 Tesla MRI व सी.टी. स्कैन

**4-सी, एपेक्स चेम्बर, भारतीय लोक कला मण्डल के पीछे, मधुबन, उदयपुर**

Ph. 0294-5102252, 70733-08880, 70738-18880, 74109-70970, 74109-80980

www.arthdiagnostics.com

शुभ
दीपावली

# डेरे-आश्रम और राजनेता

**समाज** परेशानियों का समाधान पाने के लिए बाबाओं के डेरों, आश्रमों और मठों की शरण में पहुंच कर उनके समक्ष घुटने टेके बैठा है और दायित्व से विमुख सरकारें, अंधविश्वास, लूट और शोषण के इस योजनाबद्ध खेल को शह दे रही हैं। धर्म और राजनीति का यह पतित तालमेल आसाराम से शुरू होकर गुरुमीत तक की ही कहानी नहीं है, धर्म की आड़ में शोषण और ठगाई का यह अन्तहीन सिलसिला काफी पुराना है। गुरुमीत मामले में हरियाणा सरकार की शर्मनाक भूमिका को हाईकोर्ट ने भी 'सांठ-गांठ' माना है। सरकार चाहे इस दल की हो या उस दल की, चाल, चरित्र और चेहरा लगभग सबका समान है। हरियाणा में पिछले दो दशक में गुरमीत राम रहीम ने ढोंग, पाखंड और ताकत के दम पर चांदी कूट कर जो पंचसितारा साम्राज्य खड़ा किया, उस दौरान क्रमशः कांग्रेस, लोकदल, भाजपा की सरकारें रहीं, जो मूकदर्शक उसके घिनौने कृत्य को नज़रन्दाज करती रही। मौजूदा मुख्यमंत्री मनोहरलाल खट्टर तो नीरो की तरह आंख बंद कर पंचकुला-सिरसा को जलने दिया और स्वयं धर्मराज बने बैठे रहे। ऐसे में राजनेताओं और लम्पट बाबाओं के आपराधिक गठजोड़ से बेकसूर जनता को यदि त्राण मिल सकता है, तो वह 'न्याय का मंदिर' ही है।

बाबाओं के डेरे, मठ, आश्रम धन-सम्पत्ति से सराबोर हैं। हरेक के पास करोड़ों की चल-अचल सम्पदा है। इनके ठिकाने फाइव स्टार होटलों को भी मात देते हैं। इनमें अत्याधुनिक आवासीय गृह, तरणताल, भोजनशालाएं, अत्याधुनिक लग्जरी वाहन व उनके गैराज, सुरक्षा के लिए लकदक वर्दीधारी कमाण्डोज, अर्दली, लाइसेन्सी और गैर लाइसेन्सी घातक हथियार, हाईटेक गुफाएं और संचार की सुविधाएं हैं। इन आश्रमों से बाबाओं के मुहलगे भक्तों, साधकों और चेलों का कारोबार भी गुलजार है। 'आस्था' के व्यापारी बाबा सरेआम श्रद्धा की हत्या का अक्षम्य अपराध कर रहे हैं और सरकारें हैं कि वे न केवल अभयदान दे रही हैं, अपितु इनके आडम्बर और पाखण्ड को सींच भी रही हैं। गुरुमीत राम-रहीम के डेरे में राजनेताओं का दण्डवत होना और विकास के लिए टैक्स के रूप में जनता से वसूला गया पैसा विधायकों और सांसदों द्वारा बपौती मानकर बड़ी बेशर्मी से इनके चरणों में रखना खुली आंखों देश की जनता देख चुकी है।

सेवा और धर्म की आड़ में बाबाओं के पनपने का प्रमुख कारण प्रशासन तंत्र की विफलता ही है। दरअसल जब व्यक्ति व्यवस्था से तंग आ जाता है तो वह पोंगा पण्डितों की शरण में पहुंचता है, जहां पाखण्ड और आडम्बर से आवेष्ठित वातावरण उसे ऐसा सम्मोहित कर जकड़ लेता है कि छूटना दुष्कर होता है। सरकारी संस्थाएं उत्पीड़न और भ्रष्टाचार के अड्डे बन चुकी हैं। निगम हो या विभाग, स्कूल हो या अस्पताल, पुलिस थाना हो या बैंक, कलक्टर या पुलिस कप्तान का दफ्तर, पंचायत समिति हो या तहसील इन सबमें आदमी की परेशानी को सुनने, समझने और समाधान तक पहुंचाने वाले लोग हैं ही कितने? राजनैतिक पार्टियां और जनता के वोट पर चुने सांसद-विधायक को अपने परिवारों के योगक्षेम से ही फुर्सत नहीं है। दुखी, शोषित और उत्पीड़ित व्यक्ति जब इन संस्थाओं अथवा जनप्रतिनिधियों के पास पहुंचते हैं तो अपने को उपेक्षित और अपमानित महसूस करते हैं। ऐसे में उनके कदम स्वतः इन डेरों, आश्रमों, मठों और धामों की ओर उठ जाते हैं, जहां उन्हें अपनी परेशानियों से किंचित राहत तो मिलती प्रतीत होती है, किन्तु शोषण और दासत्व का एक अदृश्य पंजा भी उन्हें शनैः शनैः दबोच लेता है। भारत की जीवन पद्धति वैदिक और सनातन संस्कृति से अनुप्राणित रही है, इसी जीवन शैली से भारत विश्वगुरु कहलाया। भारत की इस अध्यात्मिक चेतना को जहां जगद्गुरु शंकराचार्य से लेकर भगवान महावीर, गौतम बुद्ध, स्वामी दयानन्द सरस्वती, महर्षि अरविन्द, मंडन मिश्र, स्वामी विवेकानन्द, महात्मा गाधी, आचार्य विनोबा भावे आदि ने आगे बढ़ाया, उसी चेतना के छद्म वाहक ये ढोंगी बाबा समाज को विकृत मानसिकता की ओर धकेल रहे हैं। अलग-अलग धर्म, सम्प्रदायों और पंथ में अलग-अलग नाम से पुकारे जाने वाली पवित्र सर्वोच्च सत्ता के नाम पर ठगाई का यह अन्तहीन सिलसिला आख़िर कब तक चलेगा? महान् दार्शनिक और विचारक कार्ल मार्क्स ने धर्म को कोरा नशा कहा था। उनका यह सिद्धांत आज भी अपनी जगह सटीक है, धर्म अब कोरा नशा ही नहीं बल्कि नशे का ऐसा बड़ा बाजार बन गया है, जहां योजनाबद्ध और संगठित रूप से ठगी के बड़े केन्द्र तमाम तामझाम के साथ खड़े हैं। उनमें बैठे हैं, श्वेत-श्याम, लाल-भगवा, हरे-पीले और नाना रंगों के चोलाधारी, जिनकी कातिल आंखों के सामने है, ठहरा सा, सहमा-सा जनसमूह। जो इससे बेखबर है कि कब उसकी जेब कट जाए या जिस्म ही नोच लिया जाए। संत के लिबास में इन पाखंडी बाबाओं की करतूतों से उन संतों को हैरानी, परेशानी और बदनामी झेलनी पड़ रही है, जिनके जप-तप और साधना में सदैव समाज का हित चिंतन रहा।

बाबाओं के डेरे और आश्रमों से धन का प्रवाह इलेक्ट्रोनिक चैनलों की ओर भी स्पष्ट दिखाई देता रहा है। जो न केवल उनका महिमा मंडन करते हैं, बल्कि उन्हें 'मैसेंजर ऑफ गॉड' तक बना देते हैं। चैनलों पर प्रायः बाबाओं के दरबार गरीब, गाय, पीड़ित और वंचितों के प्रति संवेदना व्यक्त करते दान हासिल करने की जुगाड़ में प्रायः दिखाई दे जाते हैं। कई चैनल बाबाओं और तथाकथित प्रवचनकारों के ही कब्जे में हैं। जिन पर आसाराम, रामपाल, भीमानंद, गुरुमीत, रामवृक्ष, निर्मल बाबा, स्वामी नित्यानंद, परमानन्द, नारायण सांई आदि के फैलफितूर जनता ने देखें हैं, जो आज अपनी करतूतों से या तो सीखचों के पीछे हैं या जमानत पर मुंह छिपाए जेल से बाहर हैं।

यह अच्छी बात है कि चैनलों ने दुष्कर्मी बाबाओं के कानून के शिकंजे में फंसने पर अपने को नीर-क्षीर विवेकी सिद्ध करने की सामयिक चेष्टा जरूर की है। अखिल भारतीय अखाड़ा परिषद् ने 10 सितम्बर को अपनी बैठक में जिन चौदह तथाकथित बाबाओं को फर्जी घोषित किया है, उनमें से अधिकतर जेल में है या जमानत पर हैं, उन्हें अब फर्जी साबित कर परिषद क्या सिद्ध करना चाहती है, यह काम तो कानून पहले ही कर चुका है। यह अपनी दाढ़ी बुझाने का विफल प्रयास मात्र है। जनता को पहले यह क्यों नहीं बताया गया कि ये फर्जी हैं और इनसे बचकर रहें। परिषद् अथवा अखाड़ों ने जिन्हें बाबागीरी की मान्यता और डिग्रियां दी हैं, उन पर तो शायद वे नज़र डालना ही नहीं चाहते। आज भी कई तथाकथित गृहस्थ संत करोड़ों की सम्पदा हासिल कर खुद व परिवार के साथ ऐश की ज़िन्दगी जी रहे हैं। आए दिन विमानों में उड़ते दिखते हैं। इनके कर्म-धर्म का संपूर्ण ब्यौरा जनता के सामने रखना उनका दायित्व है। राजनीति को भी धर्म से बिल्कुल अलग रहना चाहिए और शुद्धिकरण के लिए तमाम डेरे, आश्रम, मठ और संस्थाओं को खंगाला जाना चाहिए। वास्तविक संत और सेवा पुरोधाओं की प्रतिष्ठा को बचाने के लिए भी यह आवश्यक है।

ट्रिपल तलाक

# मुस्लिम महिलाओं ने जीती ज़िंदगी की जंग

- रेणु शर्मा

**सुप्रीम कोर्ट ने वर्षों से प्रचलित तलाक-ए-बिदअत को असंवैधानिक करार दिया - सुन्नी समुदाय ने इसे धार्मिक मामलों में बताया दखल - शिया समुदाय ने किया फैसले का स्वागत - प्रधानमंत्री ने कहा - 'आधी आबादी की जीत' - कांग्रेस संहित प्रतिपक्ष का भी भरपूर समर्थन - इस जंग की पहली और बड़ी योद्धा रही शायरा बानो - 92 फीसद मुस्लिम महिलाओं का मिला समर्थन - सत्रह साल संघर्ष के बाद न्यायपालिका से मिल पाया संबल।**

सुप्रीम कोर्ट ने 22 अगस्त 2017 को ऐतिहासिक फैसले में तीन बार तलाक के उच्चारण के साथ मुस्लिम स्त्रियों को घर से बेदखल करने की परम्परा को असंवैधानिक करार दिया। पांच सदस्यीय संविधान पीठ ने 18 महीने तक चली सुनवाई के बाद बहुमत से इस प्रथा को गैरकानूनी घोषित किया और भारतीय संविधान के अनुच्छेद 14, 15 के विरुद्ध माना। अदालत ने माना कि तीन तलाक की प्रथा कुरान के मूल सिद्धान्तों के भी विपरीत है। कई इस्लामिक देशों में इस पर पहले से ही प्रतिबंध है और भारत की मुस्लिम महिलाओं को भी मौलिक आजादी से वंचित नहीं रखा जा सकता। कुछ ही पल में वैवाहिक जीवन खत्म हो जाने के भय में जी रही लाखों महिलाओं के लिए यह फैसला बड़ी राहत है। कोर्ट ने केन्द्र सरकार को आदेश दिया कि वह छः माह के भीतर महिला संरक्षण सम्बन्धी कानून संसद से पारित कराए। कानून नहीं बनने तक कोर्ट द्वारा पारित आदेश जारी रहेगा। केन्द्रीय कानून मंत्री रविशंकर प्रसाद का कहना है कि संविधान पीठ का फैसला ही अपने आप में कानून है, अतः सरकार को अलग से कानून बनाने की जरूरत नहीं है।

## मंज़िलें और भी, परन्तु परेशानियां भी

सुप्रीम कोर्ट के सख्त आदेश की सूत्रधार वे हिम्मतवर मुस्लिम महिलाएं हैं, जिन्होंने स्वयं अपमानित-प्रताड़ित होने तथा परिवार टूट जाने के बाद भी खुद को बिखरने नहीं दिया। उन्होंने बरसों तक संत्रास भोगा, परन्तु नारी जाति के मान-सम्मान की खातिर खतरे झेलते हुए भी संघर्ष किया। वे स्तुति योग्य हैं। नौ करोड़ मुस्लिम महिलाओं को अधिकार दिलाने के लिए शायरा बानो, आफ़रीन रहमान, आतिया साबरी, गुलशन परवीन और इशरतजहां ने सुप्रीम कोर्ट में अलग-अलग याचिकाएं लगाई थीं। इन्होंने ठान लिया था कि वे अपने हक़-हक़ूक पाकर ही दम लेंगी और अन्ततः उनका संघर्ष रंग लाया। लाखों मुस्लिम महिलाओं का इन्हें प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष समर्थन मिला। शायरा बानो ने अदालत में मुस्लिम पर्सनल लॉ में शामिल तीन तलाक और बहुविवाद को चुनौती दी थी। इन प्रथाओं के खिलाफ शाइस्ता अंबर, जकिया सोमन, नूरजहां, शफिया नियाज सहित हजारों महिलाओं ने उनका उत्साह बढ़ाया। ट्रिपल तलाक के खिलाफ अभियान के समर्थन पत्र पर 50 हजार से ज्यादा महिलाओं ने हस्ताक्षर किए। जिसे बाद में अदालत में भी पेश किया गया। महिला अधिकारों की पैरवी करने वाले कई संगठनों ने उनकी आवाज को बल दिया। हालांकि इंडियन मुस्लिम पर्सनल लॉ बोर्ड और शरीया कानून के पैरोकारों, कट्टरपंथी मौलानाओं व उलेमाओं ने प्रगतिशील महिलाओं के आन्दोलन की राह में कदम-दर-कदम कांटे बिछाए। वे हर बात को इस्लाम से जोड़कर और मर्जी मुताबिक मायने निकालकर भ्रम पैदा करते रहे। समय के साथ सामाजिक मान्यताओं में तब्दीली आती है और जो समाज परिवर्तन की धारा के विपरीत चलता है वह तरक्की की दौड़ में पीछे छूट जाता है। मरहूम असगर अली इंजीनियर ने कहा भी था कि कोई पर्सनल लॉ मुल्क और क़ौम के असर से अलग होकर नहीं बन सकता। मुल्ला-मौलवी कहते हैं तीन तलाक, बहुविवाह, निकाह हलाला मज़हबी व्यवस्था का एक अंग है और इसे बदलना या निरस्त करना धार्मिक मामले में दखल है। उनका तर्क है कि संविधान से सभी समुदायों को धार्मिक स्वतंत्रता की गारंटी प्राप्त है।

## मुस्लिम पर्सनल लॉ और शरीया

मुस्लिम पर्सनल लॉ को ब्रिटिश हुकूमत ने 'डिवाइड एंड रूल' फॉर्मूले के आधार पर 1937 में बनाया था। अंग्रेज तो क्रिश्चियन

### क्या है तीन तलाक?

तीन तलाक का सीधा आशय है कि कोई मुस्लिम शौहर अगर बीवी को तलाक लफ़्ज सिर्फ तीन बार एक साथ कह दे तो बीवी को वह घर छोड़ना होगा। भले ही ये लफ़्ज उसने किसी भी स्थिति में कहे हों। टेलीफोन, मोबाइल, वाट्सएप, इंटरनेट से भी तलाक होने लगा है। तलाक सामाजिक कलंक है। यह ऐसी घुन है, जो समाज को अंदर ही अंदर खोखला किए जा रही है। सबसे खराब और गैर-मानवीय प्रथा है निकाह हलाला। समझौते के बाद यदि कोई तलाकशुदा महिला पूर्व पति के घर फिर रहना चाहती है तो उसे जायज करने का तरीका है, हलाला। यानी पहले उस महिला को किसी और मर्द के साथ निकाह करना होगा और उसके साथ कुछ वक्त बिताना होगा। फिर वह पुरुष उसे तलाक देकर आजाद करेगा, तभी वह पूर्व पति से पुनः निकाह कर सकेगी। घर वापसी की यह कैसी प्रक्रिया?

थे, मुस्लिम विद्वान नहीं। उनकी समझ और तत्कालीन हालातों के मद्देनजर ही इसे तैयार किया गया होगा। शरीयत एप्लिकेशन एक्ट और मुस्लिम विवाह विच्छेद जैसे कानून भी अंग्रेजों ने ही बनाए थे। इन नियमों के अनुसार बीवी को घर में रखने या छोड़ने का अधिकार शौहर को है। विवाह को बचाए रखने की नैतिक जिम्मेदारी औरतों पर आयद की गई, जबकि उसे मिनटों में समाप्त करना मर्दों के हाथ है। मुस्लिम उलेमाओं ने भी कुरान की अपनी सहूलियत के हिसाब से तफ़सीर और तजुर्मानी की, जिसने कई तरह की कुरीतियों को जन्म दिया। इनका जिक्र कुरान में नहीं है। रही सही कसर ऑल इंडिया मुस्लिम पर्सनल लॉ बोर्ड ने पूरी कर दी, जो कट्टर उलेमाओं का एक संगठन बन चुका है और अपने को सम्पूर्ण भारत के मुसलमानों का नुमाइंदा भी घोषित करता है।

## हक़ीकत से दूर मौलवी

हालांकि अदालतों ने मुस्लिम समाज के रूढ़िवादी तबके को आईना दिखाने और मुस्लिम औरतों को हक़ देने वाले कई फैसले दिए थे, लेकिन कठमुल्लाओं ने हमेशा विरोध कर ऐसे निर्णयों का विरोध किया। 1994 में रहमतुल्ला बनाम स्टेट ऑफ ऑफ उत्तरप्रदेश के एक फैसले में इलाहाबाद हाईकोर्ट ने एकतरफा तीन तलाक को अवैध और कुरान के निर्देशों के खिलाफ बताया था। एक अन्य मामला अबरार अहमद बनाम शमीम आरा जब सुप्रीम कोर्ट पहुंचा तो बहुत पहले ही अदालत ने तीन तलाक देने को सिरे से खारिज कर दिया। आए दिन आने वाले फतवों के खिलाफ भी उच्चतम न्यायालय 2014 में अपना निर्णय दे चुका है कि मुल्लाओं को ऐसा करने का कोई अधिकार नहीं। मुस्लिम समाज का इतिहास देखें तो अर्से से ही बदलाव होता रहा है। पर कुछ लोग सुधारों को नहीं चाहते। ट्रिपल तलाक पर बैन जैसे ही एक अन्य ऐतिहासिक निर्णय ने सियासत की चौखट पर दम तोड़ दिया। 1978 में इंदौर की शाहबानो को पति मोहम्मद खान ने तलाक दिया था। पांच बच्चों की मां 62 वर्षीय इस महिला ने गुज़ारा भत्ते के लिए सुप्रीम कोर्ट में गुहार लगाई। अदालत ने उसके हक़ में फैसला दिया। लेकिन तत्कालीन राजीव गांधी सरकार ने संसद में मुस्लिम महिला (तलाक में संरक्षण अधिकार) अधिनियम पारित कर कोर्ट के फैसले को ही पलट दिया। यह अकल्पनीय है कि 31 साल पहले शाहबानो के साथ नाइंसाफी में सत्तापक्ष समेत कई ऐसे राजनीतिक दल भी शामिल थे, जो आज भी अपने को प्रगतिशील कहने का दम भरते हैं। सरकार ने ऐसा कट्टरपंथी और रूढ़िवादी बदलाव कठमुल्लाओं के दबाव में और इस समुदाय के वोटों की खातिर किया।

## विश्व के अन्य मुस्लिम देश और भारत

करीब तीस मुस्लिम देशों में तीन तलाक पर बैन हैं। वहां तलाक के अलग नियम हैं। तीन तलाक परिपाटी को रुखसत देने वाला पहला मुल्क मिस्र था। 1929 में ही वहां कुछ संशोधनों के साथ इसे 'बाय-बाय' कहा गया। अपने को विश्व के मुसलमानों का संरक्षक मानने वाले पाकिस्तान ने भी 1961 में तीन तलाक प्रथा को त्याग दिया। बांग्लादेश ने तो 1971 में अपने निर्माण के बाद इसे अपनाया ही नहीं। तुर्की, इराक, ईरान, ट्यूनीशिया, अल्जीरिया और मलेशिया जैसे मुस्लिम बहुल देश भी इसे अमानवीय मानते हैं। मुस्लिम पर्सनल लॉ दुनिया में एक-सा नहीं है। अनेक देशों ने अपनी सुविधा एवं प्रचलित मान्यताओं के आधार पर उनका निर्माण किया तो आवश्यकतानुसार समय-समय पर फेरबदल भी किए। वैसे भी भारतीय मुस्लिम पर्सनल लॉ तो औपनिवेशिक हुकूमत ने बनाया, जिसे कई लोग 'एंग्लो-मोहम्मडन लॉ' कहते हैं।

## पैगंबर मोहम्मद(स. अ) और कुरान

भारतीय मुस्लिम समाज के स्वयंभू संरक्षक और कट्टरपंथी मौलाना, उलेमा हर बात को कुरान और इस्लाम से जोड़ कर देखते हैं। ट्रिपल तलाक, बहुविवाह, निकाह हलाला और जेहाद को भी वे इसी से जोड़ते हैं। इसीलिए इनकी पृष्ठभूमि जानना जरूरी है ताकि ऐसे लोगों की असलियत का खुलासा हो सके। सुप्रीम कोर्ट ने भी कुरान का अध्ययन करवाने के बाद पाया कि कुरान में एकबारगी तीन तलाक का कहीं उल्लेख नहीं है। अदालत ने पवित्र कुरान-ए-पाक की तलाक संबंधी सूरा और आयतों को विस्तार से समझाया कि किस तरह कुरान महिलाओं के हक़-ओ-हकूक और इज्ज़त का सबक देता है। परम्परागत रूप से प्रचलित सुन्नत, जो हदीस में दर्ज पैगम्बर का आचरण है - भी ऐसे भावावेश में दिए तलाक़ को जायज़ नहीं मानता। न ही इज्मा, जो आम सहमति से बनी प्रथाओं का दस्तावेज है, में भी इसका उल्लेख है। 'टेल्स फ्रॉम कुरान' की ऑथर और हिस्टोरियन राना सफवी नफ़ीस लिखती हैं कि अबु याज़िद ने अपनी बेगम को गुस्से में तीन बार तलाक बोल दिया - हो गया तलाक़। रात बीती, सुबह हुई और गलती का अहसास हुआ। सीधे पैगम्बर के पास गए, पूरा किस्सा सुना दिया। उन्होंने कहा - जाओ, अभी तो दो बार कहना बाकी है। कोई तलाक नहीं हुआ। कैसे? मैंने तो तीन बार जोर से बोला था। 'नहीं', एक बार में कितनी भी बार बोलो - एक ही रहेगा। सूरा 4/35 में कहा गया है कि पति-पत्नी का झगड़ा होने पर दोनों परिवार के बड़े लोग मध्यस्थता करें। इसके लिए 90 दिन की इद्दत यानी वेटिंग पीरियड है। 1400 साल पहले बर्बर युग था। शादियों का कोई हिसाब नहीं क्योंकि मर्द कई बार संघर्ष व युद्ध में मारे जाते थे और औरतें किसी का आसरा चाहती थीं। तब पैगम्बर मुहम्मद ने चार शादियों की बंदिश लागू की थी। उन्होंने खुद 25 साल की उम्र में 40 साल की विधवा से शादी की थी। उन्होंने अपनी बीवियों को एक जैसा दर्जा और मोहब्बत दी, किसी को भी सताया नहीं और न तलाक दी। इसके अलावा इस्लाम में हलाला है ही नहीं। यह प्री-इस्लामिक पीरियड की बात है। अबु दाऊद बुक 12 वर्स 15 में है कि पैगम्बर मोहम्मद साहब हलाला को गलत मानते थे। वे कहते थे कि हलाला करने वाले और करवाने वाले दोनों पर अल्लाह का कहर बरपेगा। जेहाद शब्द के भी गलत मायने निकाले गए हैं। इसे युद्ध जैसा दुष्प्रचारित किया गया। जेहाद यानी संघर्ष करना। दूसरों के खिलाफ नहीं अपने खिलाफ़। पैगम्बर कहते हैं, जेहाद खुद से है यानी अपनी कमियों को दूर करना। सूरा 2/190 में कहा गया है जीवन में कोई गंभीर स्थिति भी हो सकती है तो भी कभी जुल्म करने वाले, बेगुनाह को मारने वाले मत बनो। फिर आजकल इसके जो मायने निकाले जा रहे हैं वे सबके सामने हैं। शरीयत का शाब्दिक अर्थ है, 'जो अनुकरणीय है'। अल्लाह के कुछ निर्देश अनिवार्य, कुछ अपेक्षित और कुछ वैकल्पिक। अल्लाह के इन्हीं निर्देशों को शरीयत कहा गया है। जहां तक इन पर आधारित कानून की बात है वह तो लोगों ने बनाए हैं, जिनमें बदलाव की हमेशा संभावनाएं रहती है। अल्लाह तआला ने भी कहा है देखो, समझो और अक्ल का इस्तेमाल करो। 1937 का शरीयत एप्लिकेशन एक्ट अंग्रेजी जजों ने बनाया, यह सबको पता है। फिर मुस्लिम समाज के कुछ ठेकेदार इसमें बदलाव क्यों नहीं चाहते हैं? भारतीय दंड संहिता, फौजदारी एवं दीवानी प्रक्रिया संहिता जैसी कई कानूनी धाराएं मुसलमानों सहित भारत के सभी नागरिकों पर लागू है, जिसका कहीं विरोध नहीं है। यदि शरीयत के अनुसार हो तो चोरी के मामले में जेल नहीं, मुज़रिम के हाथ काट दिए जाने चाहिए। मुस्लिम पर्सनल लॉ के अनुसार व्याभिचार करने वाली स्त्री को पत्थर मार कर खत्म करने का प्रावधान है, परन्तु आईपीसी के तहत यह ग़ैर-कानूनी है। खुद मुस्लिम समाज में काफी बड़ा तबका इन दकियानूसी परम्पराओं के खिलाफ़ है। इसमें बदलाव वक़्त का तकाज़ा है। इस्लाम बहुल देश इनमें बदलाव कर सकते हैं तो भारत में भी ऐसा इसलिए जरूरी है, क्योंकि इस समुदाय की एक बड़ी आबादी यहां मुख्यधारा के साथ मिलजुल कर रहती है। सुधार किसी भी संस्था, समाज, संगठन या धर्म में हो एक लंबी और कठिन प्रक्रिया है। कुछ हिम्मतवर और ज़िदादिल लोग ही इसे अंज़ाम तक पहुंचा सकते हैं।

# मेवाड़ से मोदी का चुनावी शंखनाद

***प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने अगस्त के अन्तिम सप्ताह में मेवाड़ की भूमि से 15 हजार करोड़ के 11 राष्ट्रीय राजमार्गों के निर्माण कार्यों का शिलान्यास व लोकार्पण कर राजस्थान में अगले साल होने वाले विधानसभा चुनाव के लिए शंखनाद किया। प्रधानमंत्री बनने के बाद उनकी यह पहली उदयपुर यात्रा थी। बारिश की झमाझम में उदयपुर संभाग सहित राजस्थान के कई जिलों से भारी तादाद में लोग उन्हें देखने-सुनने आए। प्रधानमंत्री की इस यात्रा के बाद दो बातें भाजपा में पक्की मानी जा रही हैं, पहली वसुंधरा राजे का चुनाव तक मुख्यमंत्री बने रहना और गृहमंत्री गुलाब चन्द कटारिया को आठवीं बार विधानसभा में भेजने को हरी झण्डी।***

प्रधानमंत्री बनने के बाद नरेन्द्र मोदी पहली बार 29 अगस्त को उदयपुर आए। खेलगांव में लाखों की भीड़ उमड़ी। उन्हें देखने-सुनने आदिवासी अंचल से परम्परागत वेशभूषा में मादल-थाल बजाते नाचते-गाते लोग खिंचे चले आए। आसपास जिलों से भी लोगों को लाने के लिए पार्टी नेता कई दिनों से जुटे थे। प्रधानमंत्री ने रोड डवलपमेन्ट थैरेपी के जरिए लोगों को सम्मोहित करने में कोई कसर नहीं छोड़ी। राज्य विधानसभा चुनाव अगले वर्ष होने हैं। भाजपा ने मेवाड़ की इस सभा से चुनावी शंखनाद कर दिया। ऐसा करना उसके लिए शायद इसलिए भी जरूरी था कि कुछ माह पहले ही प्रतिपक्षी दल कांग्रेस वागड़ की धरती पर कांग्रेस उपाध्यक्ष राहुल गांधी की जबरी सभा करवा चुकी है। खेलगांव की सभा उसी का प्रत्युत्तर थी।

## रोड डवलोपमेंट थैरिपी

कभी झमाझम बारिश तो कभी सुनहरी धूप के बीच प्रधानमंत्री ने अपने चिर-परिचित अन्दाज वाली भाषण शैली से जन मेदिनी को अभिभूत करते हुए सभास्थल से ही रिमोट के जरिए प्रदेश की 5610 करोड़ रुपए वाली सड़क परियोजनाओं का लोकार्पण तथा 9490 करोड़ के 11 राष्ट्रीय राजमार्ग निर्माण कार्यों का डिजिटल भूमि पूजन किया। उन्होंने कहा कि स्वर्ण चतुर्भुज योजना से देश को हर गांव-शहर से जोड़ने का जो काम अटल बिहारी वाजपेयी ने अपने प्रधानमंत्रित्व में किया था उसी का परिणाम है कि देश अब तेजी से विकास की ओर बढ़ रहा हैं। नई परियोजनाओं से राजस्थान के 12 जिले लाभान्वित होंगे। उन्होंने 11 साल लंबित रहे कोटा के हैंगिंग ब्रिज का उदाहरण देकर कहा कि पिछले समय की सरकारें सिर्फ काम का शिलान्यास कर और बाद में उन्हें लटका कर चुनाव जीतती रही। भाजपा देश का तेज विकास करने और जनता को ज्यादा से ज्यादा सहूलियत देने में विश्वास रखती है। हम जिस काम को शुरू करते हैं, उसे तय अवधि में पूरा भी करते हैं। यही फर्क है काम करने और बिना काम श्रेय बटोरने वाली सरकारों में। पिछली सरकार के प्रोजेक्ट की बॉटलनेक को दूर कर हम उन्हें पूरा कर रहे हैं। हमने चुनौतियों को स्वीकार कर देश को मंजिल की ओर बढ़ाने का संकल्प लिया है। केन्द्रीय सड़क परिवहन मंत्री नितिन गडकरी ने कहा कि प्रधानमंत्री मोदी के नेतृत्व में देश में 3 लाख 85 हजार करोड़ रुपए की 403 सड़क परियोजनाओं में से पिच्चानवे प्रतिशत पर तीव्र गति से काम हो रहा है। पूर्ववर्ती सरकारों ने प्रदेश में रोड प्रोजेक्ट पर जितना काम सत्तर सालों में किया, उतना इस सरकार ने तीन साल में कर दिखाया है। पुराने डेड प्रोजेक्ट को पुनर्जीवित कर कई

परियोजनाओं पर काम शुरू किया गया है। प्रदेश में अगले डेढ़ साल में करीब 50 हजार करोड़ के रोड नेटवर्क पर काम शुरू होगा। सभास्थल पर गडकरी ने कई घोषणाएं की, जिनमें उदयपुर में 1.60 किमी लम्बा 400 करोड़ रुपये की लागत वाला एलिवेटेड रोड और जिले के कुंडाल ग्राम से ईडर(गुजरात) वाया झाड़ोल-सोम-गुजरात सीमा तक 758 करोड़ का बहुप्रतीक्षित 2 लेन रोड भी सम्मिलित है।

## मेवाड़ के मजबूत समीकरण

मुख्यमंत्री वसुन्धरा राजे ने उज्ज्वला व भामाशाह योजना, शिक्षा, रोजगार, महिला सशक्तीकरण, कन्या स्वावलम्बन, बेटी-बचाओ-बेटी-पढ़ाओ, स्टार्टअप, ओडीएफ, पंचायतराज, आदिवासी व जनजाति कल्याण, किसान सहायता जैसे कई कार्यक्रमों के क्रियान्वयन पर खुद ही अपनी पीठ थपथपाई। सभा से गृहमंत्री गुलाबचंद कटारिया ने मेवाड़ में कमजोर पड़ती सियासी जमीन फिर पुख़्ता कर ली। भाजपा उच्च सूत्रों का मानना है कि इस सभा ने वसुंधरा राजे को चुनाव तक अभयदान और कटारिया को 2018 में फिर से विधानसभा में प्रवेश का संकेत दिया है। मेवाड़ में नए शक्ति केन्द्र के रूप में उभरी उच्च शिक्षा मंत्री किरण माहेश्वरी का भी रुतबा बढ़ा है। आदिवासी और ग्रामीण अंचल से भारी भीड़ खींच कर सांसद अर्जुनलाल मीणा, सीपी जोशी, जनजाति मंत्री नंदलाल मीणा, राज्यमंत्री सुशील कटारा, धनसिंह रावत ने भी अपना दम दिखाया। सभा में राजस्थान के राज्यपाल कल्याण सिंह, केन्द्रीय मंत्री पी पी चौधरी, अर्जुनलाल मेघवाल, राज्यवर्द्धन सिंह राठौड़,

उदयपुर में आयोजित प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की सभा में उमड़ी भीड़।

सांसद हरिओम सिंह राठौड़, प्रदेश के मंत्री श्रीचंद कृपलानी भी उपस्थित थे। राजनीतिक पर्यवेक्षक मेवाड़ में मोदी की सभा को गुजरात के विधानसभा चुनाव से भी जोड़ कर देख रहे हैं। मेवाड़ का गुजरात से निकट का रिश्ता रहा है। वहां दिसम्बर में चुनाव होने जा रहे हैं। यहां की राजनीतिक धमक का गुजरात में साफ असर दिखाई पड़ेगा। प्रदेश राजनीति में माना जाता है कि जिसने मेवाड़ को फतह कर लिया सरकार उसी दल की बनेगी। अगले साल के आखिर में प्रदेश के चुनाव होंगे, इसलिए हर पार्टी मेवाड़ को रिझाने में ताकत झोंक रही है।

**-महिम जैन**

प्रत्यूष

शुभ दीपावली

# भाजपा का मिशन जी-150 और एच-45

**लाल किले की प्राचीर पर 2014 में राष्ट्रीय ध्वज फहराने के साथ ही प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी और अध्यक्ष अमित शाह के करिश्माई नेतृत्व से भारतीय जनता पार्टी देश के बीस राज्यों में अपनी अथवा सहयोगियों के साथ सत्ता में है। पिछले महीनों यूपी और उत्तराखण्ड में धमाकेदार जीत के बाद भाजपा ने बिहार का खोया गढ़ भी पुनः हासिल कर लिया है। भाजपा ने आंध्र-तेलंगाना को तो साध लिया ही अब अन्नाद्रमुक के तीन में से दो धड़ों में एका करवा वहां भी सियासी जमीन लगभग पुख्ता कर ली है। इस साल के अंत में गुजरात और हिमाचल प्रदेश विधानसभाओं के चुनाव होने हैं। भाजपा दोनों ही राज्यों में अपनी जीत पक्की मान रही है, वहीं प्रमुख विपक्षी दल कांग्रेस भी दोनों राज्यों में अपनी सरकार बनाने की जुगत में हरसंभव कोशिश में जुटी है। राहुल गांधी व प्रभारी महासचिव अशोक गहलोत गुजरात का गढ़ जीतने का शंखनाद कर चुके हैं।**

**गुजरात** की धरती निराली है, जिसने महात्मा गांधी जैसा आदर्श जननायक और सरदार वल्लभभाई पटेल जैसा लौह पुरुष देश को दिया। गुजरात ऐसा इकलौता राज्य है, जो क्षेत्रफल में ज्यादा बड़ा तो नहीं, परन्तु जिसकी समुद्री सीमाएं देश में सर्वाधिक लंबी है। गुजरात ने पिछले तीन दशक में इस तेजी से विकास की राह पकड़ी कि वह मॉडल रूप में पूरे देश में चर्चित हुआ। 2014 के आम चुनाव में गुजरात के ही नरेन्द्र दामोदरदास मोदी राष्ट्रीय फलक पर उभरे और मज़बूत इरादों वाले प्रधानमंत्री बने, जिनकी धमक आज समूचे विश्व में है। गुजरात में पिछले पांच बार से भाजपा की सरकार है। जिसमें से तीन बार तो नरेन्द्र मोदी ही मुख्यमंत्री बने। 2012 के विधानसभा चुनाव में उन्होंने यह हैट्रिक बनाई। इस जीत ने मोदी को हीरो बना दिया। गुजरात में लगातार पांचवी बार भाजपा की सरकार बनी। भले ही पिछले विधानसभा चुनाव से दो सीटें घट कर 115 रह गई। कांग्रेस की दो बढ़कर 61 सीटें हो गईं थी। अन्य के खाते में 6 सीटें गई। भाजपा के पूर्व मुख्यमंत्री केशुभाई पटेल की गुजरात परिवर्तन पार्टी फ्लॉप रही। केशुभाई के प्रभाव वाले सौराष्ट्र-कच्छ की 54 सीटों में से भाजपा ने 32 सीटें जीती थी। वहीं मुस्लिम बहुल क्षेत्र की 32 में से 24 सीटों पर भाजपा ने जीत दर्ज की। प्रधानमंत्री बनने के बाद मोदी ने 2014 में मुख्यमंत्री पद आनन्दी बेन पटेल को सौंप दिया। पटेल-पाटीदार आरक्षण और दलित अत्याचार मुद्दा आनंदी के गले की हड्डी बना तो 2016 में मुख्यमंत्री की कमान विजय रूपाणी को सौंपी गई। एक समय था, जब गुजरात कांग्रेस का दमदार गढ़ हुआ करता था। 1995 के बाद से उसे प्रायः चुनावों में पराभव का मुंह देखना पड़ा। कांग्रेस रीढ़विहीन पार्टी नहीं है। वह खोया वजूद पाने की जी-तोड़ कोशिश में है। कांग्रेस के उत्कर्ष का एक दौर 1996 में तब देखने को मिला जब भाजपा-संघ पृष्ठभूमि के ताकतवर नेता शंकर सिंह बाघेला विद्रोह कर कांग्रेस की सहायता से मुख्यमंत्री पद पर काबिज हुए। लेकिन वे भी कांग्रेस की नैया पार नहीं लगा सके और अन्ततः चुनाव से ऐनवक्त पहले राज्य में पार्टी से अलग हो गए। कांग्रेस ने पूर्व मुख्यमंत्री माधव सिंह सोलंकी के पुत्र भरत सिंह सोलंकी को राज्य की कमान सौंपी हुई है। अगस्त में हुए राज्यसभा चुनाव के दौरान कांग्रेस की केन्द्रीय राजनीति में असर रखने वाले दिग्गज नेता अहमद पटेल ने जीत प्राप्त की। इससे कांग्रेस को संजीवनी मिली, परन्तु वह राज्य विधानसभा चुनाव में जीत जाने का करिश्मा करेगी, यह अभी भविष्य के गर्त में है। कांग्रेस भाजपा के असंतुष्टों से हाथ मिला कर अपना खोया जनाधार पाने में जुटी है। उनके लिए पटेल-पाटीदार आन्दोलन के अगुआ हार्दिक पटेल आशा की एक किरण हैं। भाजपा यहां लगातार जीत की कोशिश में है। नरेन्द्र मोदी और अमित शाह की प्रतिष्ठा दांव पर है। यहां हार का मतलब राष्ट्रीय स्तर पर भाजपा को बड़ा आघात, क्योंकि दोनों दिग्गज गुजरात से ताल्लुक रखते हैं। पटेल-पाटीदार आरक्षण आन्दोलन एवं दलित विरोधी भावना के कारण भाजपा की जान सांसत में है। 2001 में केशुभाई पटेल को मुख्यमंत्री पद से हटाने से नाराज चल रहे पटेल समुदाय को बाद के वर्षों में साथ लिया गया और अब शंकरसिंह बाघेला के साथ कांग्रेस छोड़ने वाले नेताओं से गलबहियों का अवसर ढूंढा जा रहा है। भाजपा का मानना है कि केन्द्र में मजबूत सत्ता के बल पर गुजरात में यूपी की तरह ही चमत्कार होगा और कांग्रेस का सूपड़ा साफ हो जाएगा।

**हिमाचल** प्रदेश में 1977 से ही कांग्रेस और भाजपा के बीच सरकारों की अदला-बदली होती रही है। देखना दिलचस्प होगा कि यह परम्परा इस बार भी कायम रहती है या टूटती है। 2012 में विधानसभा चुनाव कांग्रेस ने वीरभद्र सिंह के नेतृत्व में लड़ा और वे मुख्यमंत्री बने। वे उससे पहले यूपीए सरकार में केन्द्रीय मंत्री थे, जिन्हें सीडी कांड के आरोप में मंत्रिमण्डल से हटाया गया और प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष बनाया गया था। उन्होंने शानदार प्रदर्शन करते हुए कुल 68 सीटों में से 36 पर कांग्रेस को जीत दिलाई। भाजपा को मात्र 26 सीटों पर सब्र करना पड़ा और अन्य 6 सीटें ले गए। इस पहाड़ी राज्य में उद्योग-धंधों की कमी है, परन्तु वनोपज और पर्यटन से आर्थिक ताकत मिलती है। 2007-12 के बीच भाजपा सरकार और मुख्यमंत्री प्रेम कुमार धूमल द्वारा पूंजीपतियों को जमीनें बांटी गई। बिल्डर्स और अन्य भूमाफियाओं ने बेशकीमती संपदा को लूटा। जेपी ग्रुप और अन्य उद्योगपति खूब फले-फूले। पुत्र मोह में धूमल द्वारा अनुराग ठाकुर को आगे बढ़ाने से भी पुराने दिग्गज भाजपाई नाराज हो गए और नतीजतन जनता ने सत्ता परिवर्तन कर दिया। जनता ने कांग्रेस में आस्था जताई। पिछले पांच सालों में कांग्रेस ने आपसी फूट और आन्तरिक मतभेदों के चलते जनता के बीच विश्वास खोया है। पूर्व केन्द्रीय मंत्री आनंद शर्मा और ठाकुर कौल सिंह शुरू से ही वीरभद्र के लिए गहरी खाइयां खोदने में लगे रहे हैं। आनंद शर्मा भले ही दिल्ली के सियासी गलियारों में धांसू प्रदर्शन दिखाते रहे पर प्रदेश की राजनीति में फिसड्डी ही साबित हुए। ठाकुर कौल सिंह भी 2012 से पहले प्रदेश अध्यक्ष रहते कांग्रेस को एकजुट नहीं रख पाए। वीरभद्र सिंह बतौर मुख्यमंत्री एक अच्छे प्रशासक सिद्ध हुए और उनकी निष्ठा भी हाई कमान के प्रति रही। आन्तरिक कलह से जूझते वीरभद्र सिंह ने इस साल के अंत में हो रहे चुनाव से पहले ही हाईकमान को स्पष्ट कह दिया है कि वे न तो चुनाव लड़ना चाहते हैं और न ही वे चुनाव अभियान की अगुआई करना चाहते हैं। दरअसल वीरभद्र सिंह अरसे से प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष सुखविंदर सिंह सक्खू को हटाने के लिए आलाकमान पर दबाव डाल रहे हैं। सक्खू पर राहुल गांधी का वरदहस्त है। वीरभद्र के बिना चुनाव जीतना पार्टी के लिए खासा मुश्किल होगा। इसलिए उन्हें मनाने की कोशिशें हो रही हैं। भाजपा के लिए हिमाचल चुनाव अहम है। पड़ोसी राज्य उत्तराखंड में भाजपा शानदार विजय हासिल कर चुकी है। केन्द्रीय मंत्री जे पी नड्डा वहां जमीनी आधार बनाने में काफी दिनो से जुटे हैं। हालांकि प्रदेश के पूर्व मुख्यमंत्री प्रेम कुमार धूमल का भी मजबूत आधार है। चूंकि केन्द्र में भाजपा की सरकार है और भाजपा राष्ट्रीय अध्यक्ष भी यहां मिशन-45 पर फोकस कर रहे हैं। उन्होंने इसे नाक का सवाल बना रखा है। पिछली बार भाजपा 26 सीटों पर ही सिमट गई थी और इस बार 20 सीटें बढ़ाने के चक्रव्यूह को पुख्ता किया जा रहा है। यदि इन दोनों राज्यों में भाजपा विजयश्री का वरण करती है तो 2018 में देश के आठ राज्यों राजस्थान, मध्यप्रदेश, छत्तीसगढ़, कर्नाटक, मिजरोम, मेघालय, नागालैंड व त्रिपुरा में होने वाले विधानसभा चुनावों में वह महायोद्धा बन कर उभरेगी।

**- सनत जोशी**

# विवादों के घेरे में गरिमा

पद्म पुरस्कारों के मामले में साल दर साल विवाद उठते रहे हैं, यही नहीं इस सम्मान को पाने वाले कई लोगों पर उंगलियां भी उठीं और प्रश्न चिन्ह भी लगे। ऐसी स्थिति में इस सम्मान के वास्तविक हक़दारों की गरिमा बजाय बढ़ने के अपने कार्य क्षेत्र में उनके विशिष्ट अवदान का अवमूल्यन ही करती प्रतीत होती है। समय-समय पर विविध सेवा क्षेत्रों की नामचीन हस्तियां पद्म सम्मान की चयन प्रक्रिया पर सवाल खड़े करती रही हैं, लेकिन सरकार ने कोई ध्यान नहीं दिया, नतीजा यह हुआ कि राजनेताओं और उच्च पदस्थ नौकरशाही से येन-केन तालमेल कर वे लोग ये सम्मान झटकने में सफल हो गये, जो लेश मात्र भी उसके हक़दार नहीं थे। सन् 2017 के पद्म पुरस्कारों के लिए केन्द्रीय गृह मंत्रालय को करीब उन्नीस हजार आवेदन मिले थे। आप यह जानकर चौंक उठेंगे कि इनमें से सर्वाधिक यानी 4200 लोगों ने गुरमीत राम रहीम सिंह को यह सम्मान देने की पैरोकारी की। इस स्वयंभू बाबा ने इससे पहले भी पद्म सम्मान पाने के लिए खुद पांच बार प्रस्ताव केन्द्रीय गृह मंत्रालय को भेजा था। पद्म पुरस्कार साहित्य कला, शिक्षा, चिकित्सा, संस्कृति, खेल, सामाजिक सरोकार, विज्ञान एवं अभियांत्रिकी, व्यापार, उद्योग, फिल्म सहित विशिष्ट क्षेत्रों में असाधारण उपलब्धियां हासिल करने वालों को प्रदान किये जाते रहे हैं। अब तक ये पुरस्कार जिन लोगों को मिले हैं, यदि उनका आज तत्कालीन परिप्रेक्ष्य में ही सही पुनर्मूल्यांकन किया जाए तो संभव है, अनेक लोगों के बारे में मुंह चिढ़ाती सच्चाई से रूबरू होना पड़ सकता है। यही कारण है कि दिनों-दिन इस पुरस्कार अथवा सम्मान की गरिमा कम होती जा रही है। इन पर विवाद के चलते ही सर्वोच्च न्यायालय ने भी राष्ट्रीय चयन समिति गठित करने का सरकार को परामर्श दिया था, लेकिन रेवड़िया बांटती सरकार के कान पर जूं तक नहीं रेंगी है। समझ में नहीं आता कि वह ऐसे गरिमामय राष्ट्रीय सम्मान की छिछालेदार कराने पर क्यों अड़ी है? 1954 में जब ये पुरस्कर आरंभ किए गए तब इनका मकसद था विविध क्षेत्रों में विशिष्ट योगदान देने वालों का राष्ट्र निर्माण के गौरवमयी इतिहास में शुभ नामांकन। आशा है इस राष्ट्रीय सम्मान की गरिमा को बचाने के लिए चयन प्रक्रिया को और अधिक सख्त व पारदर्शी बनाया जाएगा।

प्रत्यूष

शुभ दीपावली

# स्वार्थ, परमार्थ और सद्गुरु

**क्या** है स्वार्थ ? और क्या है परमार्थ ? स्वार्थ शब्द का जब संधि विच्छेद करते हैं तो अर्थ स्वत: स्पष्ट हो जाता है स्व + अर्थ = स्वार्थ। 'स्व' अतिशय आत्मकेन्द्रित है, जिसके मूल में है 'मैं और मेरा'। अर्थ से तात्पर्य है 'हित साधना'। यानी मेरा हित पूरा हो। यही स्वार्थ है। अर्थ का तात्पर्य धन भी है। अतएव स्वार्थ का मतलब सांसारिक भोग विलास की चाहत भी है ठीक इसके विपरीत है नि:स्वार्थ अर्थात् स्वार्थहीन, बिना किसी व्यक्तिगत हित अथवा लाभ के। इससे भी ऊपर है परमार्थ। 'परम + अर्थ'। परम यानी महान सर्वश्रेष्ठ सर्वाधिक, सर्वोच्च। आत्मकेन्द्रित 'स्व', 'परम' तक आते-आते समाप्त हो जाता है। 'परम' में सब कुछ है, सभी का है, सबके लिए है, इसलिए वह 'वसुधैव कुटुम्बकम्' है।

स्वार्थ से परमार्थ तक की यात्रा ईश्वर तक पहुंचने का एक रास्ता है। अपने को उस 'विराट' का एक परमाणु मान कर उसी में विलीन होने की आकांक्षा ही वह पहला पड़ाव है, जहाँ से आध्यात्मिक यात्रा शुरू होती है। ज्ञान, भक्ति, सोच और समर्पण। इसकी प्रेरणा देता कौन है ? सिर्फ 'सच्चा गुरु'। वह मन को साधने, जीतने की प्रेरणा देता है। मन को जब जीत लिया तो स्वार्थ रह ही कहाँ गया ? 'सतगुरु' जब परमार्थ भाव देता है तो हमारी सारी आवश्यकताएं भी वही पूरी करता है। हमारा काम जब सही, श्रेष्ठ और परमार्थ से सम्बद्ध है, तो ईश्वर हमारी खोज-खबर लेगा ही। कष्ट का निवारण भी करेगा।

**संत कबीर ने कहा है -**

**सांई इतना दीजिए, जामें कुटम समाय।**
**मैं भी भूखा ना रहूँ, साधु न भूखा जाय।**

पूर्वजन्म के कर्मों से प्रारब्ध का दिया तो हर किसी को मिलता ही है, 'सद्गुरु' के आशीर्वाद से उसमें कुछ जुड़ ही जाता है। परमार्थ की राह चलने वाले को गुरुकृपा मिलती है किन्तु उसके लिए कुछ हमारे भीतर कुछ जगह भी तो हो। मन के आंगन में संबंधों की इतनी भीड़ न हो कि सद्गुरु के लिए ही न हो। यह खुद ही तय करना है कि क्या चुनना है, सम्बन्धों का स्वाद या सद्गुरु के सान्निध्य से मिलने वाली परम शांति और सुख ? दुनिया की चकाचौंध में आँखें मिचियाते घूमते ही रहना है या सद्गुरु की दिव्य आभा में अनिमेष, अनिर्वचनीय आनन्द की अनुभूति करना है ? स्वर्ण-रजत और हीरे-मोती से लकदक शरीर चाहिए या परमात्मा से मिलने की छटपटाहट ? संसार में जन्म लिया है तो संसारी कर्तव्य का पालन भी करना है। सद्गुरु 'प्रभु बा' संदेश देती हैं कि 'संसार और अध्यात्म' आत्मारूपी पक्षी के दो पंख है जिनके सहारे उसे आकाश की ऊचाईयाँ पार करनी है। संसार में रहकर भी उसमें लिप्त नहीं होना है। सत्संग, भक्ति, ध्यान और परमार्थ के लिए जीवन है। जीवन में यदि सद्गुरु नहीं तो इनका मिलना भी संदिग्ध है। तभी तो कहा गया है -

**संत समागम हरि भजन, जग में दुर्लभ दोय।**
**सुत, दारा और लक्ष्मी तो पापी के भी होय।**

सद्गुरु कुम्हार की तरह शिष्य का जीवन गढ़ता है। कच्ची मिट्टी के लौंदे से सुन्दर बर्तन, खिलौने, सजावटी सामान, कुम्हार कैसे बना लेता है ? सिर्फ अभ्यास और साधना से। मिट्टी को रौंधता हैं, चाक पर आकार देता है, पीटता है लेकिन अन्दर से थामे रहता है, आग पर अपने सृजन को पकाता हैं तब कहीं कुछ उपयोगी बर्तन या सजावटी वस्तु बनती है। ठीक इसी तरह सद्गुरु के ज्ञान से शिष्य की गढ़त होती है। वह शिष्य को सहारा देता है, साधता है, कभी प्रेम से, कभी डाँटकर, कभी समझा कर तो कभी सिर्फ खामोशी से। गुरु की नाराजगी में भी शिष्य के प्रति स्नेह का झरना बहता है। उनके क्रोध में भी कल्याण की कामना है।

**गुरु कुम्हार, सिस कुंभ है गढ़ि-गढ़ि काढ़े खोट।**
**अन्दर हाथ सहार दे, बाहर बाहे चोट।।**

माता-पिता और संतान के पवित्र रिश्ते की तरह ही पवित्रतम रिश्ता गुरु शिष्य का है। शिष्य भले ही सद्गुरु से दूर हो पर सद्गुरु कभी शिष्य का परित्याग नहीं करता। जन्मों तक गुरु अपने शिष्य को ढूंढता है, पुकारता है, प्रेरणा देता है, रास्ता दिखाता है।

स्वार्थी व्यक्ति सांसारिक लाभों के लिए संत, सद्गुरु से जुड़ता है। लेकिन ऐसा अवसर भी इस दौरान आता है कि सद्गुरु उस व्यक्ति का पूर्ण कायाकल्प कर देते हैं। वह कब परमार्थ के रास्ते पर चलने लगता है, वो स्वयं भी नहीं जान पाता। सद्गुरु की कृपा, आशीष और स्नेह की कोई सीमा नहीं। वे तो पारस हैं जो लोहे को कंचन बना देते हैं। वे हमें सिखाते हैं -

**सुख जब भी आता है, कुछ लेकर जाता है।**
**दु:ख जब भी आता है, कुछ देकर जाता है।।**

सुख-दु:ख में समभाव सद्गुरु की कृपा से ही रहा जा सकता है। उनके सान्निध्य से जीवन को अर्थ और उद्देश्य प्राप्त होता है। सद्गुरु का मिलना जीवन का सबसे बड़ा सौभाग्य है।

**सद्गुरु ही जीवन की अनमोल पूंजी हैं -**

**यह तन विष की बेलड़ी, गुरु अमृत की खान।**
**शीश दिए गुरु मिले, तो भी सस्ता जान।।**

इसलिए धन्य हैं वे, जो सद्गुरु की शरण में हैं, और उनके निर्दिष्ट मार्ग का अनुसरण कर जीवन को सार्थकता प्रदान कर रहे हैं।

**- भगवान लाल शर्मा 'प्रेमी'**

*दीपावली की हार्दिक शुभकामनाएं*

डॉ. अजय सिंह चुण्डावत
**M.B.B.S., M.D.**
एनेस्थिसियोलोजिस्ट

डॉ. (श्रीमती) कौशल चुण्डावत
**M.B.B.S., DGO**
स्त्री एवं प्रसूति रोग विशेषज्ञ
गायनिक, सोनोलोजिस्ट

# संजीवनी हॉस्पीटल

50 बेड का मल्टी स्पेशलिटी हॉस्पीटल आधुनिक मोड्यूलर ऑपरेशन थियेटर एवं सभी आधुनिक उपकरणों से सुसज्जित प्रसूति कक्ष

*साधारण, हाई रिस्क डिलीवरी, गर्भाशय का ऑपरेशन, सिजेरियन डिलीवरी, निसंतानता का निवारण, गर्भवती एवं समस्त प्रकार की स्त्री रोगों की नियमित जांच व इलाज*

पाठों की मगरी, सेवाश्रम चौराहा, उदयपुर (राजस्थान)

फोन :- 0294-2418575, 9899934770, 9829229350, 9571327528

**Email:sanjivanihospitaludaipur@gmail.com**
**Website : www.sanjivanihospitaludaipur.org**

# शिक्षा माफिया को अभयदान

# यातानागृह बनते स्कूल

*अपनी ही मस्ती में चहकते, धमाल करते स्कूल आते-जाते बच्चों के समूह देखकर हर राह गुज़र और पड़ोसी खुश हो जाया करते थे। प्रकृति भी इन्द्रधनुषी परिधानों में झूमती हुई बचपन की इस बहार को देखकर निहाल हो जाती थी। माता-पिता भविष्य के सपने संजोए, उन्हें जाता हुआ दूर तक देखते रहते, तो स्कूल से लौटने के समय देहरी पर उन्हें अपने अंक में समेटने के लिए बाट तका करते थे। मशहूर शायर निदा फाज़ली भी कभी ऐसे ही माहौल में उछलकूद करते स्कूल जाती पड़ौसी बच्चों की खुशनुमा टोली को देखते हुए कह उठे थे-*

*हुआ सवेरा, ज़मीन पर फिर अदब से आकाश*
*अपने सर को झुका रहा, कि बच्चे स्कूल जा रहे हैं ....।*
*हवाएं सरसब्ज डालियों में दुआओं के गीत*
*गा रही हैं, महकते फूलों की लोरियां,*
*सोते रास्तों को जगा रही हैं, घनेरा पीपल*
*गली के कोने से हाथ हिला रहा है, कि बच्चे स्कूल जा रहे हैं।*

ऐसे खुशगवार माहौल को तथाकथित सभ्य समाज और उसके द्वारा शिक्षा के नाम पर खड़े किए गए उद्योग लीलने लगे तो आम आदमी की चिंता स्वाभाविक है। 8 सितम्बर को गुरुग्राम(हरियाणा) के निजी स्कूल रेयान इन्टरनेशनल में दूसरी कक्षा के 7 वर्षीय मासूम छात्र प्रद्युम्न के हत्या की घटना ने पूरे देश को स्तब्ध कर दिया। कहा जा रहा है कि आरोपी कातिल ने उससे दुष्कर्म की कोशिश की और जब मासूम ने हल्ला किया तो चाकू से उसका गला रेत दिया। पिता वरुण ठाकुर कुछ समय पहले ही उसे स्कूल छोड़ कर घर आ बाइक खड़ी कर ही रहे थे कि बालक के साथ दुर्घटना की खबर आ गई। बदहवास माता-पिता स्कूल पहुंचे, उससे पहले ही प्रद्युम्न अस्पताल ले जाया जा चुका था, आख़िरी सांस ले चुका था। स्कूलों में बच्चों के साथ जुल्म और अत्याचार की यह पहली घटना नहीं है। पहले भी ऐसी दर्दनाक, अमानवीय और क्रूर घटनाएं होती रही हैं, लेकिन उन पर लीपा-पोती या उन्हें ठण्डे बस्ते में डालकर जिम्मेदार लोग हर बार बच निकले हैं। रेयॉन की घटना के अगले ही दिन 9 सितम्बर को दिल्ली के ही टैगोर पब्लिक स्कूल में पांच वर्षीया छात्रा के साथ दुष्कर्म किया गया। दरिंदा स्कूल कर्मी विकास ही था। जिसने उसे स्टोर रूम में बंद कर मारपीट की और फिर दुष्कृत्य कर स्टोर रूम में ही बंद कर चला गया। रोने की आवाज पर किसी ने दरवाजा खोला। डरी-सहमी बच्ची घर चली गई। पैरों पर खून रिसता देख माता-पिता अस्पताल ले गए। वहां से बड़े अस्पताल में रैफर किया गया। इन घटनाओं से पहले एक जगह शिक्षक व प्राचार्य की डांट से छात्र ने आत्महत्या की कोशिश की। एक बच्चे को फीस न चुका पाने के कारण बंधक बनाया गया। गाजियाबाद के एक स्कूल में कुछ समय पहले ही एक बच्चे की रहस्यमय मौत हो चुकी है। नई दिल्ली के वसंत कुंज में रेयान स्कूल की ही एक अन्य शाखा में छह साल के बच्चे की वाटर टैंक में डूबने से मौत हुई थी। रेयान जैसा ही एक हादसा फरीदाबाद के सीकरी गांव के सरकारी स्कूल के सातवीं कक्षा के बच्चे के साथ भी हुआ, कुकर्म के बाद उसकी हत्या कर दी गई। पहचान छुपाने के लिए आरोपी ने पत्थर से उसका चेहरा कुचल डाला और शव को स्कूल के पिछवाड़े झाड़ियों के बीच दफ़न कर दिया। राजस्थान में भी छात्रों के साथ ज्यादती और यौन-उत्पीड़न की घटनाएं सामने आई हैं। 14 सितम्बर को बाड़मेर के एक स्कूल में छह वर्षीया मासूम के साथ दुष्कर्म हुआ। उदयपुर के एक कॉलेज में भी कहासुनी और निदेशक को चाकू मारने के बाद एक छात्र ने झील में छलांग लगा कर खुदकुशी कर ली।

## ये किस मोड़ पर आ गए हम

ज्ञान-अर्जन, स्वविकास, उज्ज्वल भविष्य के लिए हर बच्चा स्कूल भेजा जाता है। लेकिन जब वहां छुरे-चाकू से नौनिहालों का गला रेता जाए और कलियों सी नाजुक बच्चियों के साथ दरिंदगी कर असमय लम्पट शिक्षक ही यौनाचार में कामांध हो रहे हैं। ऐसे माहौल को बदलने के लिए सरकार व समाज को आगे आना होगा। स्कूल गए बच्चों की शाम ढले लाश घर पहुंचे तो, ऐसे में पुलिस, प्रशासन, स्कूल प्रबन्धन और जनता के नुमाइंदे कब तक मूकदर्शक रहेंगे ? प्रश्न यह नहीं कि जिम्मेदारी किसकी है ? प्रश्न यह है कि ऐसे विषयों पर मौन कौन और क्यों हैं ? हर सेकंड में बच्चों के साथ अपराध हो रहा है, उनकी हंसी और मासूमियत छीनी जा रही है। निजी स्कूल छोटी-छोटी

कक्षाओं के लिए भी मनमानी फीस और मोटी रकम वसूल कर अनुशासन के नाम पर उन्हें भयाक्रांत कर रहे हैं। जितनी फीस ले रहे हैं, उसके अनुपात में न सुविधाएं मिलती और न ही सुरक्षा। अभिभावकों की सुनने वाला वहां कोई नहीं। मामूली वेतन पर नियुक्त स्टाफ दक्षता, कर्तव्यपरायणता और जिम्मेदारी के नाम पर शून्य है। शिक्षा व्यवसाय बनता जा रहा है। सरकार भी इन्हें बेशकीमती ज़मीनें, अनुदान और अन्य सुविधाएं दे रही हैं। सुप्रीम कोर्ट ने ताज़ातरीन मामलों में केन्द्र और राज्य सरकारों के साथ ही मानव संसाधन विकास मंत्रालय, सीबीएसई, और सीबीआई से भी न सिर्फ कुछ बिन्दुओं पर जवाब मांगा है, वरन् देश भर के निजी स्कूलों में मानकों की पड़ताल कर बच्चों की सुरक्षा सुनिश्चित करने को कहा है।

अदालत की पहल देश भर के स्कूलों पर नकेल कसने की शुरूआत मानी जा सकती है। लेकिन असल नकेल तो तब मानी जाएगी, जब न सिर्फ इनकी मनमानी फीस बढ़ोतरी पर अंकुश लगेगा बल्कि एक ऐसी देशव्यापी नीति बनेगी, जो इनके मालिकों को नौनिहालों की सुरक्षा के लिए सीधे जिम्मेदार ठहराती हो। राइट टू एजुकेशन को और व्यापक व जवाबदेह बनाने के लिए बच्चों की सुरक्षा को इसमें सर्वोपरि रखा जाना चाहिए?

बाल अधिकार संरक्षण आयोग(एनसीपीसीआर) को बच्चों की सुरक्षा को लेकर समग्र दिशा-निर्देश जारी करने चाहिए। निजी स्कूलों की चार दीवारी के भीतर होने वाले हर क्रियाकलाप की जानकारी शिक्षा विभाग, सरकार और समाज को होनी चाहिए। सरकार को किसी भी स्तर पर निजी स्कूलों को बच्चों के लिए असुरक्षित वातावरण अभिभावकों के आर्थिक शोषण की मंजूरी नहीं दी जानी चाहिए। इन स्कूलों द्वारा आए दिन अभिभावकों से मोटी-मोटी राशियां मंगलवार ऐसे उत्सव प्रायोजित किए जा रहे हैं, जिनका हमारी सांस्कृतिक मान्यताओं एवं परम्पराओं से दूर तक कोई लेना-देना नहीं, इन्हें बस पैसा चाहिए और अपने साम्राज्य का विस्तार। रेयॉन जैसे कई स्कूल कुकुरमुत्तों की तरह हर छोटे-बड़े शहर में उग रहे हैं, जिनकी गतिविधियों पर नज़र रखना समाज की भी जिम्मेदारी है। **-प्रकाश जोशी**

Happy Diwali

DHL

DHL EXPRESS INDIA PVT. LTD.

53, Panchwati, Udaipur, Tel. : 0294-2414388, Tele Fax : 0294-2414388
E-mail : savvyan2006@yahoo.co.in I savvyan@sancharnet.in

## डेस्टिनी ऑफ इंडिया

# प्रियदर्शिनी इंदिरा गांधी



अंतर्मुखी इन्दु से आत्मविश्वास से भरपूर इंदिरा बनने की कहानी भारी उतार-चढ़ाव वाली डगर की विपथगा है। भारत की प्रथम महिला प्रधानमंत्री इन्दिरा गांधी, ऐसी बेमिसाल महिला थी, जो न सिर्फ भारतीय राजनीति बल्कि विश्व राजनीति के क्षितिज का दैदीप्यमान नक्षत्र बनकर चमकी। 19 नवम्बर, 1917 को स्वाधीनता सेनानी पंडित जवाहर लाल नेहरू के घर और मां कमला की कोख से जन्मी प्रियदर्शिनी इंदिरा ने संघर्ष और मेहनत से वह मुकाम हासिल किया, जिसे विरले ही प्राप्त कर पाते हैं। इन्दिराजी की इस वर्ष देश भर में जन्मशती मनाई जा रही है। जनवरी 1966 में लाल बहादुर शास्त्री के निधन के बाद जब वे प्रधानमंत्री बनी तब उन्हें 'गूंगी गुड़िया' तक कहा गया। लेकिन 71 में जब इन्होंने पाकिस्तान के खूनी चंगुल से पूर्वी पाकिस्तान को मुक्त करवा कर नव राष्ट्र के रूप में बांग्लादेश को विश्व मानचित्र पर उकेरा तो न केवल भारत ने इनमें देवी दुर्गा के स्वरूप को देखा बल्कि समूचे विश्व ने लौह महिला के रूप में स्वीकारा। ऐसा साहस उन्होंने तब कर दिखाया, जब अमेरिकी राष्ट्रपति रिचर्ड निक्सन और चीनी नेता माओत्से तुंग आए दिन भारत को धमकियां दे रहे थे। पाकिस्तान आज भी अपने अंग विभाजन की चरमराहट को नहीं भूला है। ऐसा ही साहसिक कदम पार्टी में नेतृत्व के विरुद्ध सिर उठाने वाले निललिंगप्पा और एस के पाटिल जैसे दिग्गज नेताओं को पार्टी की मुख्यधारा से खदेड़ कर उठाया था। उन्हीं नेताओं के बूते पर राष्ट्रपति बने का ख्वाब देखने वाले संजीव रेड्डी तकते रह गए और वीवी गिरि चुन लिए गए। सिक्किम के छोग्याल ने आँखें तरेरी तो सिक्किम का ही भारत में विलय कर दिया। भूतपूर्व राजे-रजवाड़ों के प्रिवीपर्स बंद करने और बैंकों के राष्ट्रीयकरण जैसे दृढ़ कदम उठा कर उन्होंने साबित कर दिया कि उनके व्यक्तित्व में नेहरू जैसी दूरदर्शिता तो पटेल जैसी दृढ़ता थी। उनके नाम से ही पाकिस्तान की घिग्घी बंध जाती थी। 1974 में पोकरण में पहला परमाणु विस्फोट किया तो अमेरिका सहित कई बड़े देशों का घमण्ड चूर हो गया और वे मूर्छा की स्थिति में आ गए। इन्दिराजी गरीबों की हितैषी और जनकल्याण को समर्पित नेता थीं। हालांकि आपातकाल उनका एक गलत निर्णय था। सिक्खों के पवित्र स्थल हरिमंदिर साहिब परिसर में भिण्डरावाले द्वारा सुरक्षित ठिकाना बना लेने और एक पुलिस अधिकारी की हत्या के बाद उन्होंने स्वर्ण मन्दिर में सेना भेज कर आतंक का नाश किया तो सिक्खों में नाराजगी बढ़ी। क्रोध की एक दबी सी चिंगारी उनके मन में सुलगती रही। लाख मना करने के बावजूद इंदिराजी ने अपनी सुरक्षा से सिक्ख सुरक्षाकर्मियों को नहीं हटाया और अन्ततः गुमराह अंगरक्षक सतवंत और बेअंत ने इन्दिराजी को गोलियों का निशाना बना कर धराशायी कर दिया। इस महिला की रात के पुल पर ठहरी आधे चांद सी जिंदगी की कहानी 31 अक्टूबर 1984 को समाप्त हो गई। जन्मशती पर शत-शत नमन।

**- डॉ. वीणा शर्मा**

---

## सपनों को लगे पंख

## ढाबे में बर्तन धोने वाला पढ़ाएगा बेजिंग विवि में

मुजफ्फरपुर में मंसूरपुर के निकट जाट बहुल गांव सोंटा में गरीब सोमपाल सिंह और वेदो देवी कश्यप के परिवार में जन्म लेने वाले अनुज ने कभी भी छोटे सपने नहीं देखे। पिता एक ढाबे में मजदूरी करते थे, तो भाई जूस का ठेला लगाता था। पिता के असमय निधन के बाद अनुज को भी पेट पालने के लिए मंसूरपुर में ही एक ढाबे में बर्तन धोने जाना पड़ा था। देर रात वह घर लौटता था। अनुज के हाथों कई बार धोते हुए चीनी-कांच के बर्तन टूटते तो कई बार लगातार मेहनत से शरीर टूट जाता था। कभी बुखार आ जाता, तो कभी उंगलियां बर्तन धोते-धोते फट जाती और खून रिसने लगता। बावजूद इसके रात को कभी डिबिया में, कभी लालटेन में, कभी मोमबत्ती में अनुज ने घर जा कर पढ़ना न छोड़ा। इसी मेहनत और लगन से उसने मंसूरपुर स्थित सर शादी लाल इंटर कॉलेज से हाईस्कूल की पढ़ाई की, फिर मुजफ्फरपुर के जाट कॉलेज से इंटर। डीएवी डिग्री कॉलेज से बीएससी और श्रीनगर स्थित गढ़वाल यूनिवर्सिटी से एमएससी के बाद उसने केमिस्ट्री इलेक्ट्रो विषय में गुरुकुल कांगड़ी यूनिवर्सिटी से पीएचडी की। इस तरह अनुज अब डॉक्टर अनुज बन गया। पीएचडी में अनुज का विषय था 'सिंथेसिस एंड कैरेक्टराइजेशन ऑफ मैक्रो साइकिलिक कॉम्पलेक्स ऑफ बायोलॉजिकल सिगनिफिकेंस एंड देअर रिडक्स स्टडीज।' अनूप ने जो सपने देखे वे उसकी काबिलियत के सामने स्वतः बौने होते गए। बेजिंग यूनिवर्सिटी में वैज्ञानिक के तौर पर पढ़ाने के लिए ढाई लाख रुपए वेतन का हाल ही उससे अनुबंध हुआ है। अन्य सुविधाएं अलग।

# पी.आई.एम.एस. हॉस्पिटल

## उमरड़ा, उदयपुर

**डॉ. प्रवीण झंवर**
एम.एस. ( जनरल सर्जरी )
एम.सी.एच. ( पिडियाट्रिक सर्जरी )
कन्सलटेन्ट-पिडियाट्रिक सर्जन
पेसिफिक इंस्टीट्यूट ऑफ मेडिकल साइंसेज

**डॉ. सुभाष जाखड़**
एम.एस. ( जनरल सर्जरी )
एम.सी.एच. ( न्यूरो सर्जन )
कन्सलटेन्ट-न्यूरो सर्जन
पेसिफिक इंस्टीट्यूट ऑफ मेडिकल साइंसेज

**डॉ. विकास गुप्ता**
एम.एस. ( सर्जरी )
डी.एन.बी. ( यूरोलॉजी )
कंसलटेन्ट-यूरोलॉजिस्ट
पेसिफिक इंस्टीट्यूट ऑफ मेडिकल साइंसेज

**डॉ. विक्रम सिंह राठौड़**
एम.एस. ( ईएनटी )
कन्सलटेन्ट-ईएनटी सर्जन
पेसिफिक इंस्टीट्यूट ऑफ मेडिकल साइंसेज

**450** बेडेड हॉस्पिटल

**14** ऑपरेशन थिएटर

**65** बेडेड गहन चिकित्सा ईकाई

**24/7** आपातकालीन सेवाएं

**ICU • ICCU • PICU • NICU • SICU • BURN ICU**

Separate Male & Female General Wards, Deluxe Rooms, Modular Operation Theatres, ICU, ICCU, PICU, NICU, Burn ICU
Neuro ICU, Dialysis Center, Endoscopy & Colonoscopy, CSSD, Canteen, Laundry, Morgue,

**1.5 TESLA MRI & 128 SLICE C.T. SCANNER**

भामाशाह स्वास्थ्य बीमा योजना

**भामाशाह स्वास्थ्य बीमा योजना के अंतर्गत 3 लाख तक का निःशुल्क उपचार**

कैशलेस सुविधा | तुरन्त भर्ती एवं जाँच | तुरन्त उपचार | निःशुल्क दवाईयाँ

राजस्थान सरकार से अधिकृत संभाग का एकमात्र
**DOT - ART Center**

सेवाओं में विस्तार के साथ निम्न इंश्योरेन्स कम्पनियों हेतु टी.पी.ए. विपुल मेड कॉर्प द्वारा अधिकृत संस्थान

IFFCO-TOKIO GENERAL INSURANCE | Apollo Munich | Reliance | Max Bupa

**साई तिरूपति यूनिवर्सिटी**
उदयपुर

| | | |
|---|---|---|
| पेसिफिक इंस्टीट्यूट ऑफ मेडिकल साइंसेज | MBBS | 0294-3010000, 9587890082 |
| वेन्केटेश्वर कॉलेज ऑफ नर्सिंग | B.Sc. N.Sc. | 0294-3010015, 9587890063 |
| वेन्केटेश्वर स्कूल ऑफ नर्सिंग | GNM | 0294-3010015, 9587890063 |
| वेन्केटेश्वर इंस्टीट्यूट ऑफ फार्मेसी | D.Pharma | 0294-3010015, 9587890082 |

PIMS **पेसिफिक इंस्टीट्यूट ऑफ मेडिकल साइंसेज**

अम्बुआ रोड़, ग्राम उमरडा, तह. गिर्वा, उदयपुर-313015 ( राज. ) 0294-3010000 www.saitirupatiuniversity.ac.in

# कितना कारगर फेरबदल?

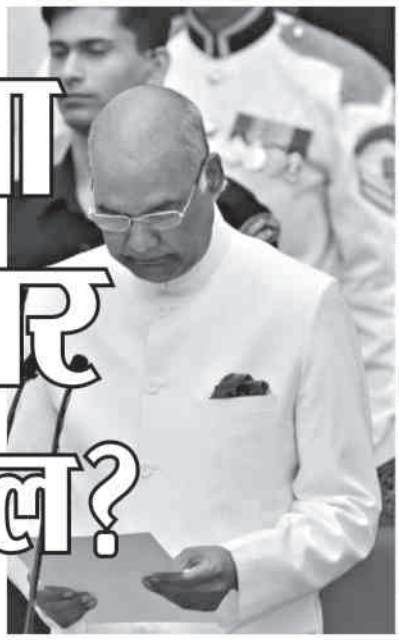

–नंद किशोर

निर्मला सीतारमन

पीयूष गोयल



मुख्तार अब्बास नकवी

धर्मेन्द्र प्रधान

**मोदी मंत्रिमण्डल का तीन साल में यह तीसरा फेरबदल है। जो 2019 के लोकसभा चुनाव तथा उससे पहले कुछ राज्यों में होने वाले विधानसभा चुनावों को ध्यान में रखकर किया गया है। हालांकि मंत्रियों को हटाने और नयों को पदस्थापित करने की कवायद में 'न्यू इंडिया' के लक्ष्य को भी फोकस करने का संदेश है। तीन साल में मोदी मंत्रिमंडल सिवाएं चौंकाने या आम आदमी को परेशानी में डालने वाले फैसलों के अलावा कोई विशेष छाप नहीं छोड़ पाया है।**

अगला आम चुनाव उन्नीस महीने दूर है। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने अभी से ऑपरेशन-2019 शुरू कर दिया है। चीन यात्रा से ठीक पहले उन्होंने केन्द्रीय मंत्रिमंडल का विस्तार व पुनर्गठन कर राजनैतिक समीकरणों और संतुलन को साधने की कोशिश की है। 3 सितम्बर को हुए विस्तार में नौ नए मंत्रियों को लिया गया, लेकिन एनडीए के अन्य किसी घटक से कोई भी मंत्रिमण्डल में शामिल नहीं किया गया। हालांकि एनडीए का हाल हिस्सा बने जदयू और अन्नाद्रमुक के दो धड़ों से कुछ मंत्रियों के सम्मिलित होने की चर्चा थी, पर ऐसा न हो पाया। मोदी की दबावों के आगे न झुकने और चौंकाने वाली शैली इस विस्तार और पुनर्गठन में भी दिखाई पड़ी।

## मानदण्ड की उपेक्षा

इस बार परफोरमेन्स की चर्चा थी, पर ऐसा पूरी तरह न हो पाया। पिछले वर्षों जिन केन्द्रीय मंत्रियों ने अच्छा प्रदर्शन किया, उन्हें प्रमोट किया गया। वहीं अपेक्षा के अनुरूप परिणाम न देने वालों को बाहर का रास्ता दिखाया गया। रेलमंत्री सुरेश प्रभु के इस्तीफे की अनदेखी कर उन्हें वाणिज्य व उद्योग मंत्रालय दिया गया। बदलाव का शिकार हुए लोगों को संगठन में लिया जा सकता है। अच्छे रिपोर्ट कार्ड वालों में निर्मला सीतारमन को न सिर्फ पदोन्नति मिली, बल्कि रक्षा जैसे अहम मंत्रालय का कार्यभार मिला। उन्हें दक्षिणी भारत में भाजपा के नए चेहरे के रूप में देखा जा रहा है। गुड परफार्मेंस वाले नितिन गडकरी को अतिरिक्त प्रभार मिला। वहीं प्रभावी पीयूष गोयल जैसे मंत्री को भारी-भरकम बजट वाला रेलवे मंत्रालय मिल गया। सरकार के अल्पसंख्यक चेहरे मुख्तार अब्बास नकवी को कैबिनेट मंत्री बनाया गया है। उड़ीसा में भाजपा के फैलाव को दृष्टिगत रखते हुए धर्मेन्द्र प्रधान को पदोन्नति मिली है। मोदी सरकार की हर जगह आँख व कान माने जाने वाले अरुण जेटली तथा औपचारिक क्रम में नम्बर दो माने गए राजनाथ सिंह अपना रुतबा कायम रखने में सफल रहे हैं। गंगा सफाई में फिसड्डी कैबिनेट मंत्री उमा भारती संघ के दबाव में मंत्रिपरिषद् में तो बनी रही, परन्तु महत्वपूर्ण विभाग छीन लिया गया। मोदी कैबिनेट में जिन नौ ताकतवर महिलाओं का दबदबा है, उनमें सबसे वरिष्ठ सुषमा स्वराज हैं।

## जातीय संतुलन की जुगत

बिहार में राजपूत नेता राजीव प्रताप रूडी को हटाया गया, उन्हें बिहार में पार्टी की कमान सौंपी जा सकती है। बिहार के पूर्व नौकरशाह आर के सिंह को राज्यमंत्री बनाया गया है। यूपी के जाट नेता संजीव बालियान को विदा कर स्वजातीय एस पी सिंह को लिया गया। ऐसा ही संतुलन यूपी के ब्राह्मण नेता कलराज मिश्र को हटाकर उसी समुदाय के शिवप्रताप शुक्ल को लेकर साधा गया है। यूपी के दमदार नेता महेन्द्रनाथ पांडेय को मंत्रिमंडल से हटा कर यूपी भाजपा की कमान सौंपी गई है। इसी तरह बिहार में सुशील मोदी को राज्य स्तर पर फ्री हैण्ड करने के लिए उनके प्रतिद्वंद्वी अश्विनी कुमार चौबे को केन्द्रीय कैबिनेट में सम्मिलित किया गया है। अल्पसंख्यक ईसाई समुदाय को भाजपा में जोड़ने के लिए केरल के अल्फांस कन्नाथनम को राज्यमंत्री और सिख समुदाय का प्रतिनिधित्व बढ़ाने के लिए दिल्ली के हरदीप पुरी को भी राज्यमंत्री बनाया गया है। अगले साल होने वाले कर्नाटक चुनाव में जीत हासिल करने की दृष्टि से अनंत कुमार हेगड़े का चयन हुआ है, जो राज्य के ताकतवर लिंगायत समुदाय से आते हैं। नौ नए चेहरों में से चार नौकरशाह रहे हैं यानी दो आईएएस, एक आईपीएस और एक आईएफएस को मंत्रिमंडल में जगह मिली है। ब्यूरोक्रेसी पृष्ठभूमि वाले अब काफी मंत्री हो गए हैं। ऐसा भी नहीं कि भाजपा में सियासी और प्रतिभाशाली लोगों का अकाल है। मोदी जब गुजरात के मुख्यमंत्री थे तो उन्होंने कई पूर्व प्रशासनिक अधिकारियों को अहम् जिम्मेदारियां दी थी। इससे इस बात की खुले आम स्वीकृति मिली है कि भाजपा के 282 सांसदों में प्रतिभा का टोटा है। विपक्ष का आरोप है कि ऐसा करने से पार्टी के निष्ठावान कार्यकर्ताओं का मनोबल कमजोर होगा और लोकतंत्र में नौकरशाह हावी होते जाएंगे।

## राजस्थान की अनदेखी

पुनर्गठन के बाद भी राजस्थान से अब भी कोई कैबिनेट मंत्री नहीं है, जबकि पहले राजस्थान से केन्द्र सरकार के कैबिनेट में पॉवरफुल मंत्री हुआ करते थे। इस बार गजेन्द्र सिंह शेखावत को सम्मिलित करने से मारवाड़ क्षेत्र से तीन राज्यमंत्री हो गए, परन्तु मेवाड़ एवं हाड़ौती से एक भी मंत्री नहीं है। बीकानेर और जयपुर से जरूर एक-एक राज्य मंत्री पहले से हैं।

## ज्वलंत मुद्दों से हटाया ध्यान

देश की विकास दर घटी है। निर्यात में अभूतपूर्व गिरावट आई है। नोटबंदी और जीएसटी से अर्थव्यवस्था कराह रही है। हालांकि सरकार इन मसलों पर अपनी पीठ भले ही थपथपाती दिख रही है, परन्तु आम लोगों बेरोजगारों तथा छोटे व्यापारियों के हालात बदहाल है। दु:ख की बात यह है कि सरकार रोजगार के संकट की ओर से आंखें मूंदे हुए हैं। मोदी सरकार के साढ़े तीन साल में तो देश के हालात जस के तस हैं। विश्लेषकों का मानना है कि मोदी अपने ड्रीम प्रोजेक्ट्स पर तेजी से आगे बढ़ने के लिए ही मंत्रिमंडल को चुस्त-स्फूर्त बनाने में जुटे हैं। आगामी दिनों में और भी बदलाव देखने को मिल सकते हैं। 2017 के अंत में दो राज्यों और 2018 के अन्त में सात राज्यों के चुनाव हैं। यही नहीं 2019 के आरंभ में कुछ और राज्यों तथा देश के आम चुनाव भी मई से पहले होने हैं। मोदी मंत्रिमंडल में अब 27 कैबिनेट मंत्री, 11 स्वतंत्र प्रभार वाले राज्यमंत्री और 37 राज्यमंत्री सहित कुल 76 मंत्री हैं। पहले 73 मंत्री( प्रधानमंत्री सहित) थे, जिनमें से 6 से इस्तीफा लिया गया था। अधिकतम 81 मंत्री हो सकते हैं। इसलिए संभावना है कि जदयू, शिवसेना और एआईडीएमके से भी मंत्री बनाए जा सकते हैं। मोदी ने मई 2014 में प्रधानमंत्री पद की शपथ ली थी। अब तक तीन बार मंत्रिमंडल विस्तार हो चुका है। पहला 9 नवम्बर 2014 को, दूसरा 5 जुलाई 2016 को और तीसरा हाल ही में 3 सितम्बर 2017 को।

| | |
|---|---|
| शिवप्रताप शुक्ला(यूपी) | वित्त राज्यमंत्री |
| अश्विनी कुमार चौबे (बिहार) | स्वास्थ्य व परिवार कल्याण राज्यमंत्री |
| वीरेन्द्र कुमार(एमपी) | महिला, बाल विकास व अल्पसंख्यक मामलात राज्यमंत्री |
| अनंत कुमार हेगड़े (कर्नाटक) | कौशल व उद्यम राज्यमंत्री |
| आर के सिंह(बिहार) | बिजली, नवीकरण ऊर्जा राज्यमंत्री (स्वतंत्र प्रभार) |
| हरदीप पुरी(दिल्ली) | आवास व शहरी मामलात राज्यमंत्री (स्वतंत्र प्रभार) |
| गजेन्द्र सिंह शेखावत(राजस्थान) | कृषि व कृषक कल्याण राज्यमंत्री |
| सत्यपाल सिंह(यूपी) | मानव संसाधन व नदी विकास राज्यमंत्री |
| के जे अलफांस(केरल) | पर्यटन मामलात राज्यमंत्री(स्वतंत्र प्रभार) |

शुभ दीपावली

# ब्लू व्हेल गेम

# खेल नहीं मौत का मायाजाल

यह सच है कि इंटरनेट दुनिया अब स्मार्ट गैजेट्स के जरिए हमारी मुट्ठी में आ गई है। लेकिन आभासी संसार का एक कटु सत्य यह भी है कि साइबर संसार में ऐसे मछली कांटे भी मौजूद हैं, जिनसे सतर्क और सजग रहने की जरूरत है। मोबाइल पर खेले जाने वाले ब्लू व्हेल चैलेंज गेम से भारत ही नहीं, बल्कि पूरे विश्व में दहशत है। दुनिया भर में तीन सौ अल्पवय बच्चे मौत की आग़ोश में समा चुके हैं। भारत भी इससे अछूता नहीं है। यहां पहला मामला कुछ समय पहले ही सामने आया जब मुंबई में चौदह साल के बच्चे ने इस खेल के चक्कर में पांचवी मंजिल से छलांग लगा कर अपनी जान दे दी। फिर पूणे, भोपाल, इन्दौर, जोधपुर जैसे शहरों से भी इस चमकदार आभासी गेम के झांसे में आने की खबरें आई। मोबाइल की लत के शिकार कई बच्चे बुलंद व शक्तिमान बनने के चक्कर में सोशल मीडिया पर ब्लू व्हेल एप तलाशते हैं। यह दरअसल न गेम है और न ही एप, बल्कि आपराधिक किस्म के शातिर लोगों का एक हनी ट्रैप है।

सवाल गंभीर है कि स्वस्थ समाज में रुग्ण मनोदशा को बढ़ाने वाली इस ट्रिक पर तत्काल कदम क्यों नहीं उठाए जा रहे हैं। ऑनलाइन खेल में मशगूल बच्चे आखिर किस मन:स्थिति में पहुंच जाते हैं कि उन्हें खेलने और जान दे देने में कोई फर्क नज़र आना ही बंद हो जाता है। बच्चे तो कोरी स्लेट की मानिंद हैं, जिस पर कुछ भी उकेरा जा सकता है। अभिभावक, शिक्षक, पथ-प्रदर्शक, समाज और राष्ट्र के पहरूए आखिर होते किसके लिए? क्या उन्हें सृजन और विनाश के बीच फर्क नहीं दिखलाई पड़ता हैं? करीब चार साल पहले रूस में ब्लू व्हेल गेम को बनाने का दावा करने वाले फिलिप बुडेकिन ने स्वीकारा कि उसने जान-बूझकर किशोरों को मौत के मुंह में धकेलने के लिए यह गेम बनाया। हाथ की नसों को काटने जैसे काम दिए जाने वाले इस खेल में टास्क को पूरा करने के दौरान ऐसे कई मौके आते हैं, जो बच्चों को आत्महत्या के लिए उकसाते हैं। जैसे ही कोई यूजर गेम शुरू करता है उसे एक मास्टर माइंड मालिक मिलता है, जो कदम-कदम पर यूजर को बहुत कुछ अज़ब-गज़ब करने को उकसाता है।

पचास दिन का यह सुसाइड चैलेंज बच्चों को लगातार कोई न कोई काम देता रहता है, जो उसे हर रोज रात दो बजे बाद तक पूरा करना होता है। इसमें आधी रात कब्रिस्तान में सेल्फी लेना, अकेले में डरावनी फिल्में देखना जैसे एकाकी काम भी शरीक हैं। हैरान करने वाली बात यह भी है कि इनमें से अधिकतर काम खुद को नुकसान या पीड़ा पहुंचाने वाले ही होते हैं। इनमें अपने हाथ पर चाकू से कुरेद कर मछली की आकृति बनाने जैसे सनकीपन भरे काम तक करवाए जाते हैं। इस जानलेवा खेल में पचासवें दिन खेलने वाले को जान देकर विजेता बनने की बात कही जाती है। आभासी मालिक पचास दिन तक यूजर के मन-मस्तिष्क को काबू में रखता है। यही वजह है कई बच्चे इस अविश्वसनीय खेल के जाल में फंस कर अपनी जान गंवा बैठते हैं। ध्यान रहे कि कुछ समय पहले पोकोमॉन गो नाम से भी एक लोकेशन बेस्ड गेम खासा लोकप्रिय हुआ था। जिसकी वजह से कई लोग मोबाइल स्क्रीन पर देखते हुए हादसों के शिकार हए हैं। ब्लू व्हेल या पोकोमॉन गो जैसे गेम्स बच्चों की जान के दुश्मन बने हुए हैं। साइबर संसार की अनदेखी-अनजान दुनिया में अपनी समझ और दिमाग को उलझाने का यह कैसे संजाल है?

दरअसल तकनीक से घिरी जिंदगी में कोई व्यक्ति समाज और मानवीय संवेदनाओं से कब कट जाता है, इसका अंदाज़ उसे खुद भी नहीं होता। बच्चों को आधुनिक तकनीक से लैस मोबाइल या कम्प्यूटर जैसे साधनों की लत तो लगा दी गई है, पर उनमें यह समझ पैदा नहीं हो सकी है कि वे उनका उपयोग खुद को नुकसान पहुँचाने की कीमत पर न करें। हाल के वर्षों में रोजमर्रा के जीवन को आसान बनाने में लोगों की निर्भरता जितनी तेजी से आधुनिक तकनीकी से लैस साजो-सामान पर बढ़ती गई है, उसी क्रम में धीरे-धीरे घनिष्ट रिश्ते वालों या दोस्तों से भी दूरी बनती गई है। सीधे मेल-मुलाकात के बजाय मोबाइल, वाट्सएप या फेसबुक जीवन शैली बन चुका है। यहां तक कि अंतरंग सम्बन्धों पर भी यह तकनीक हावी हो चुकी है। जिस उम्र में बच्चों के मानसिक विकास के लिए उनका हमउम्र साथियों के साथ खेलना-कूदना, हंसना-बोलना जरूरी होता है, वे हाथ में मोबाइल लिए या फिर कम्प्यूटर में किसी कृत्रिम गेम में इतने मशगूल रहते हैं कि उन्हें पता ही नहीं चलता कि उनका जीवन बंद मुट्ठी से गिरती रेत बन गया है।

अभिभावकों की व्यस्तता के चलते भी बच्चे वर्चुअल दुनिया में काफी समय बिता रह हैं। अभिभावकों के लिए गंभीरता से यह जानना जरूरी है कि बच्चे स्मार्ट गैजेट्स पर क्या और कैसी सामग्री देख रहे हैं? ब्लू व्हेल पर पाबंदी लगाने की मांग राज्यसभा में उठ चुकी हैं। मद्रास हाईकोर्ट ने पहल करते हुए आईआईटी को तकनीकी हल ढूंढने को कहा है। केरल, मध्यप्रदेश, महाराष्ट्र सहित राज्य सरकारों ने केन्द्र सरकार को अपनी सिफारिशें भेजी है। केन्द्र सरकार आईआईटी एक्सपर्ट से सलाह-मशविरा कर रही है। सरकारी स्तर पर तत्काल कदम उठाने की ज़रूरत है, ताकि नौनिहालों को इस खूनी खेल से बचाया जा सके।

**-मदन पटेल**

Yogesh Chandra Sanadhya

Smt. Anita Sanadhya

# Happy Diwali

Tanmay Sanadhya
(Visma Wale)
Director
Mo. : 094141-62444

Tanmaya Sanadhya

# Shree Jagdamba Marmo Pvt. Ltd.

**Exporter, Dealer & Supplier**

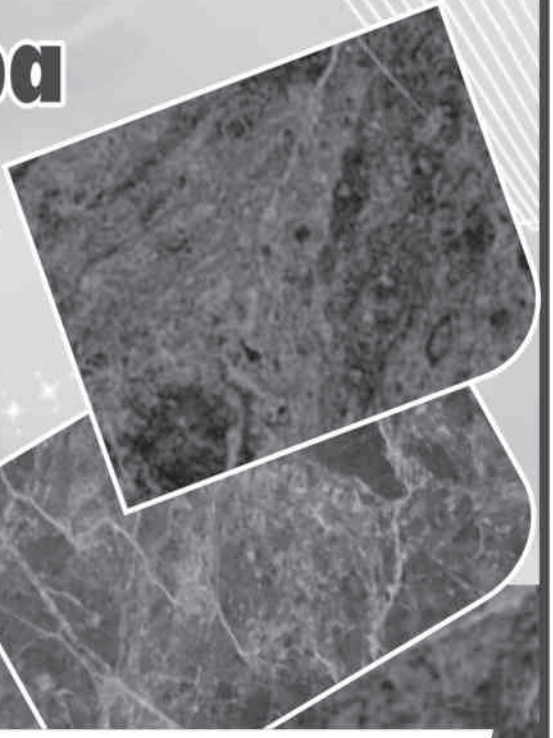

Residence : 12, Shrinath Colony, Pulla, Near Fatehpura, Udaipur (Raj.)
Factory : Opp. Bank of Baroda, N.H.8, Sukher, Udaipur (Raj.)
Fax : +91-294-2441244 (O), Tel : +91-294-2441444 (R)
E-mail : tanmay.sanadhya@gmail.com
Website : www.sjmarmo.com

Special Feature :
**Export Quality Green Marbles**

Product Specializations :
**Green Marble Slabe & Tiles**

## Sister Concerns

- JAI SHREE INDUSTRIES, SUKHER
- KRISHNA INDUSTRIES, SUKHER

शुभ दीपावली

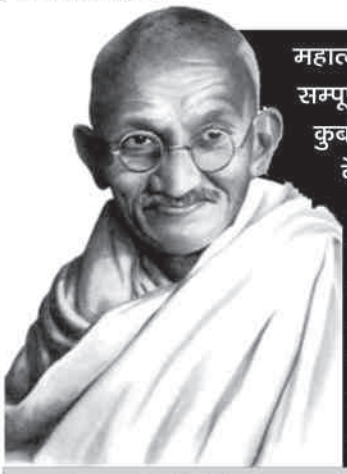



महात्मा गांधी और लालबहादुर शास्त्री ऐसे महापुरुष थे, जिन्होंने अपना सम्पूर्ण जीवन देश की स्वतंत्रता, नवनिर्माण, एकता और अखण्डता के लिए कुर्बान कर दिया। एक ने आजादी के लिए तो दूसरे ने आजादी के बाद राष्ट्र के उत्थान एवं अखण्डता के लिए अनगिनत काम किए। महात्मा गांधी अहिंसा के पुजारी के रूप में देश को स्वतंत्रता का उपहार दे गए तो लाल बहादुर शास्त्री ने पाकिस्तान के साथ युद्धकाल में देशवासियों का मनोबल बढ़ा कर 'जय जवान - जय किसान' का अमोघ मंत्र दिया। जिसके बल पर पड़ौसी राष्ट्र के आक्रमण का मुंह तोड़ जवाब दिया जा सका। दोनों महापुरुषों का जन्म 2 अक्टूबर को क्रमशः 1869 व 1904 में हुआ। प्रस्तुत है दोनों विभूतियों के कुछ महत्वपूर्ण व उपयोगी विचार।

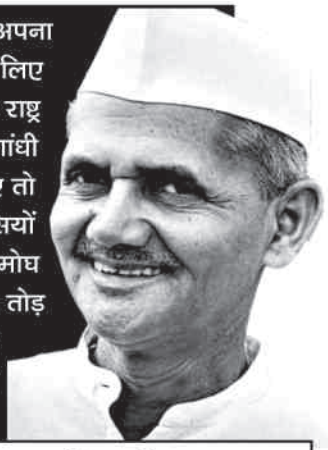



# मार्ग दिखाएगा भारत

..... अपने हृदय की गहराइयों में ...... यह अनुभव करता हूं कि दुनिया युद्ध के संहार से बहुत ज्यादा ऊब गई है। इससे बाहर निकलने का मार्ग दुनिया खोज रही है। मुझे यह विश्वास करने का लोभ होता है कि शायद प्राचीन भूमि भारत को ही शांति की भूखी दुनिया को वह मार्ग दिखाने का सौभाग्य प्राप्त होगा। .... अगर हिन्दुस्तान अपने कर्तव्य को भूलता है तो एशिया मर जाएगा। यह ठीक ही कहा गया है कि हिन्दुस्तान कई मिली-जुली सभ्यताओं और संस्कृतियों का घर है, जहां वे सब साथ-साथ पनपी हैं। हम सब ऐसे काम करें, जिससे हिन्दुस्तान एशिया, अफ्रीका या दुनिया के किसी भी हिस्से की दबी-कुचली और शोषित जातियों के लिए आशा का प्रतीक बन जाए और सदा वैसा ही बना रहे। ..... हम नहीं चाहते कि कोई हमारा शोषण करे। न हम खुद ही किसी दूसरे राष्ट्र का शोषण करना चाहते हैं। बुनियादी तालीम की योजना के द्वारा हम सब बालकों को उत्पादक बना कर सारे राष्ट्र की शक्ल बदलना चाहते हैं। क्योंकि इससे हमारा सारा सामाजिक ढांचा ही बदल जाएगा। लेकिन इसका यह मतलब नहीं कि हम सारी दुनिया से नाता तोड़कर सबसे अलग हो जाना चाहते हैं। विश्व में परस्पर आदान-प्रदान की निर्भरता तो रहेगी ही। लेकिन जो राष्ट्र दूसरे की आवश्यकताएं पूरी करें, उन्हें उनका शोषण नहीं करना होगा। अगर भारत सच्चे अर्थ में स्वतंत्र होगा तो वह मुसीबत के मारे पड़ोसी देशों की जरूर मदद करेगा। .......कोई यह सोचने की गलती न करे कि रामराज्य का अर्थ हिन्दुओं का राज्य है। मेरी कल्पना पृथ्वी पर 'ईश्वरीय राज्य' जैसी है। ऐसे राज्य की स्थापना का अर्थ केवल सारे भारतीय जनसमुदाय का कल्याण ही नहीं, बल्कि समूचे विश्व का कल्याण है। ....... पूर्ण स्वराज्य की मेरी कल्पना दूसरे देशों से कोई नाता न रखने वाली स्वतंत्रता नहीं, बल्कि स्वस्थ व प्रतिष्ठित स्वतंत्रता की है। ..... कानूनी सिद्धान्त उतने कानूनी नहीं हैं, जितने वे नैतिक हैं। अपनी सम्पत्ति का उपयोग इस तरह करो कि पड़ोसी की सम्पत्ति को कोई हानि न पहुंचे। ..... देश की खुशहाली के लिए आपसी भाईचारा व प्रेम संजीवनी बूटी है। एक-दूसरे के सहयोग से ही प्रगति का पथ प्रशस्त होगा।

**- महात्मा गांधी**

# चलें लक्ष्य की ओर

हमारा राष्ट्रीय लक्ष्य स्पष्ट रूप से निर्धारित व असंदिग्ध है। हमारा लक्ष्य है कि हर नागरिक के जीवन की मूलभूत आवश्यकताएं पूरी होनी चाहिए और अपनी इच्छा का जीवन जीने के लिए पूर्ण स्वतंत्रता होनी चाहिए। देश आपको निश्चित अधिकार देता है। जिन पर संविधान की मुहर होती है, लेकिन इन अधिकारों के साथ-साथ कुछ नियत जिम्मेदारियां भी हैं, जिन्हें समझ कर चलना चाहिए। .... संगठित समाज के हितों को ध्यान में रखते हुए इस स्वतंत्रता पर स्वैच्छिक पाबंदी भी रखी जानी चाहिए। .... मेरा मानना है कि ज़िंदगी में हर मोड़ की अपने आप में काफी अहमियत होती है। हर कार्य को पूरी क्षमता के साथ करने में बहुत संतुष्टि मिलती है। कर्तव्य चाहे जो भी हों, हमें उनके साथ पूरी ईमानदारी, सच्चाई और समर्पण के साथ पेश आना चाहिए। ....... अक्सर ऐसा होता है कि हम अपनी चिंता करने की बजाय दूसरों की निंदा में जुटे रहते हैं। ..... देश के प्रति निष्ठा अन्य किसी भी तरह की निष्ठा से कहीं ऊपर है। ...... हमारे देश का नौजवान भविष्य की जिम्मेदारियों के लिए दृढ़ संकल्पित और अनुशासित ढंग से कार्य करें। राष्ट्र का भविष्य नौजवानों की संकल्प शक्ति पर टिका होता है। इस वक़्त जब आप जिंदगी के नए मोड़ की दहलीज पर हैं, मैं आपसे यही आग्रह करूंगा कि अपनी भूमिका पूरे विश्वास और गरिमा के साथ निभाएं। .... ताकत का इस्तेमाल निर्माण में भी हो सकता है और विनाश में भी। यह हम पर निर्भर है कि इससे हरसंभव सम्पूर्ण लाभ लें। ...... इस वक्त दुनिया एक मुश्किल दौर से गुजर रही है। ..... अनुचित देरी के बिना समस्याओं का संतोषजनक और जहां तक संभव हो, स्थायी समाधान खोजा जाए। .....मतभेद व असाधारण समस्याएं समझदारी के माहौल में परस्पर संवाद से सुलझ जाएं, इसके लिए ईमानदार और दृढ़ प्रयास करने चाहिए और इसके लिए बल प्रयोग न हो। .... हमारी सांस्कृतिक विरासत अनगिनत सदियों से चली आ रही हैं। यह इस या उस समाज की विरासत नहीं, बल्कि यह इस देश में समय-समय पर हुए महान लोगों की संस्कृतियों का सम्मिश्रण है। .... मैं जानता हूँ, हमें अभी सीमित सफलता मिली है, किन्तु हमें लक्ष्य की प्राप्ति तक दृढ़ रहना है।

**- लाल बहादुर शास्त्री**

Darcl
Logistics

# Darcl Logistic Limited

(Formerly known as Delhi Assam Roadways Corporation Limited)

**Branch Office :**
2nd Floor, 26-NB Complex, Ahemdabad Road, Pratap nagar Chauraha, Udaipur (Raj.)
Tel. : +91-294-3296769, 3297688, Fax : +91-294-2494142
Email : surender.sharma@delhiassam.com | www.darcl.com

## राजस्थान कैडर के दो आईएएस

# रिटायरमेंट के बाद बड़ी जिम्मेदारी

***राजस्थान कैडर के वर्ष 1978 बैच के राजीव महर्षि और 1980 बैच के आईएएस अधिकारी सुनील अरोड़ा राजस्थान की ऐसी शख्सियतें हैं, जिन्हें केन्द्र सरकार ने सेवानिवृत्ति के बाद भी दो अहम पदों की जिम्मेदारी सौंपी है। महर्षि को देश का नया नियंत्रक एवं महालेखा परीक्षक( कैग ) बनाया गया है, जबकि अरोड़ा ने मुख्य निर्वाचन आयुक्त का पद भार ग्रहण किया है। इनसे पहले इतनी ही बड़ी जिम्मेदारी का निर्वाह राजस्थान के मुख्य सचिव रहे नरेश कुमार ने दिल्ली में केन्द्रीय कैबिनेट सचिव के रूप में किया था।***

**राजीव महर्षि** ने 25 सितम्बर 2017 को शशिकांत शर्मा के कार्यकाल की समाप्ति के तुरंत बाद भारत सरकार के नए नियंत्रक एवं महालेखा परीक्षक(सीएजी) के रूप में पदभार ग्रहण कर लिया। महर्षि जब केन्द्रीय वित्त सचिव थे, तभी मोदी सरकार ने उनकी कुशल कार्यशैली को देखते हुए दो वर्ष का एक्सटेंशन देकर केन्द्रीय गृह सचिव की जिम्मेदारी सौंपी थी। काम के प्रति गहरी लगन रखने वाले महर्षि की पत्रावलियों पर अंकित टिप्पणियां न केवल पढ़ने लायक बल्कि उनके अनुभव और कार्यशैली का बेहतर नमूना होती थी। जिससे प्रकरणों के शीघ्र और उचित निर्णय का रास्ता प्रशस्त होता था। यही वजह थी कि राजस्थान में पूर्व मुख्यमंत्री अशोक गहलोत व वर्तमान मुख्यमंत्री वसुंधरा राजे तथा प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी उनके काम के कायल रहे। उनके सहयोगी कार्मिकों के लिए भी उनके सान्निध्य में काम करने का अवसर ऐसा सौभाग्य बन जाता कि उन्हें अपने कार्यक्षेत्र में कभी विफलता का सामना नहीं करना पड़ा। उनकी छवि एक ईमानदार और खुशमिज़ाज अफसर की रही। अपनी नई जिम्मेदारी के निर्वहन से पूर्व महर्षि 2 सितम्बर को नाथद्वारा (राजस्थान) आए और श्रीनाथजी से आशीर्वाद लिया। वे नाथद्वारा मंदिर मंडल के सदस्य भी हैं। वर्ष 2015 में महर्षि जब 31 अगस्त को 60 साल की आयु पूरी होने पर वित्त सचिव पद से रिटायर हो रहे थे, उसी दिन शाम उन्हें दो साल का विस्तार देते हुए केन्द्रीय गृह सचिव बनाए जाने का आदेश मिला। दो साल बाद उनका कार्यकाल समाप्त हुआ तो ठीक उसी दिन 5 साल के लिए सीएजी बनाए जाने का आदेश मिला। वे इसे श्रीनाथजी की कृपा और दायित्व के प्रति अपनी निष्ठा व ईमानदारी को मानते हैं।

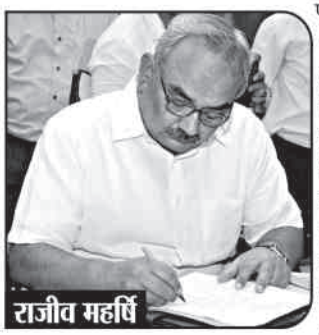
राजीव महर्षि

8 अगस्त 1955 को जयपुर में जन्मे महर्षि ने स्नातकोत्तर शिक्षा दिल्ली के सेंट स्टीफन कॉलेज से और यूके से मैनेजमेंट की डिग्री हासिल की। एक वर्ष तक वे उसी कॉलेज में व्याख्याता भी रहे। मूलतः भरतपुर निवासी महर्षि के पिता रिटायरमेंट के बाद जयपुर में बस गए थे। भारतीय प्रशासनिक सेवा में चयन के बाद जुलाई 1978 को बतौर अंडर ट्रेनी सरकारी सेवा यात्रा शुरू करते हुए महर्षि ने राजस्थान के विभिन्न जिलों के बड़े पदों और राज्य सरकार के महत्त्वपूर्ण पदों पर काम किया। सन् 2013-14 में ये राजस्थान के मुख्य सचिव बने। बाद में इन्हें पुनः दिल्ली बुला लिया गया। जहां इन्हें सचिव इकोनॉमिक्स अफेयर्स और उसके बाद केन्द्रीय वित्त सचिव की जिम्मेदारी दी गई। प्रधानमंत्री ने इनकी कार्यक्षमता और कुशलता से प्रभावित होकर दो साल का सेवा विस्तार देते हुए 2015-17 में गृह सचिव के अहम पद पर नियुक्त किया और वहां से निवृत्ति के पश्चात् अब उससे भी अधिक महत्त्वपूर्ण नियंत्रक एवं महालेखा परीक्षक का पद सौंपा गया है। महर्षि 4 सितम्बर 1987 में पहली बार केन्द्र में प्रतिनियुक्ति पर गए। इनकी पत्नी मीरा महर्षि राजस्थान में आईएएस अधिकारी के रूप में विभिन्न पदों पर कुशलता से कार्य कर चुकी हैं। दोनों बेटे मल्टीनेशनल कम्पनियों में हैं।

**सुनील अरोड़ा** ने 1 सितम्बर 2017 को चुनाव आयुक्त पद संभाला। वर्ष 1980 राजस्थान बैच के आईएएस अधिकारी अरोड़ा ने नरेश कुमार और राजीव महर्षि की ही तरह राजस्थान और दिल्ली में अपने काम की छाप छोड़ी है। सुनील अरोड़ा का जन्म 13 अप्रैल 1956 में पंजाब के होशियारपुर जिले में हुआ। उच्च शिक्षा ग्रहण करने के साथ ही 26 वर्ष की आयु में इनका भारतीय प्रशासनिक सेवा में चयन हुआ और पहली पोस्टिंग माउंट आबू(सिरोही) में एसडीएम के रूप में हुई। इसके बाद अलवर, धौलपुर, जोधपुर, नागौर आदि जिलों में कलेक्टर रहे। सन् 1993 में ये राजस्थान सरकार में कैबिनेट सचिव बने। एक वर्ष बाद इन्हें मुख्यमंत्री का सचिव बनाया गया। इस पद पर 4 साल रहे। राजस्थान में कई महत्त्वपूर्ण पदों पर सेवाएं देने वाले 61 वर्षीय अरोड़ा ने दिल्ली में वर्ष 2003-04 में घाटे में चल रही इंडियन एयरलाइन्स कम्पनी को चेयरमैन के रूप में संभालने के बाद मुनाफे में लाकर सर्वाधिक सुर्खियां बटोरी थी। वर्ष 2001-02 में इंडियन एयर लाइन्स कम्पनी करीब 247 करोड़ रुपए के घाटे में थी।

सुनील अरोड़ा

बतौर चेयरमैन-सीएमडी जिम्मेदारी निभाते हुए एक वर्ष के भीतर ही इन्होंने कम्पनी को 44 करोड़ के मुनाफे में ला दिया। करीब पांच साल अरोड़ा इस पद पर रहे। वे वर्ष 1999-2002 के दौरान नागरिक विमानन मंत्रालय में संयुक्त सचिव भी रहे।

चुनाव आयुक्त के रूप में दो-तीन माह बाद ही उन्हें गुजरात व हिमाचल प्रदेश में विधानसभा चुनावों की जिम्मेदारी उठानी है। ये राजस्थान में 1993-98 तक मुख्यमंत्री भैरोसिंह शेखावत तथा 2005 में मुख्यमंत्री वसुंधरा राजे के सचिव रहे। दिल्ली में इनकी पहली प्रतिनियुक्ति 1998-99 में हुई। 30 अप्रैल 2016 को ये सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय में सचिव पद से सेवानिवृत्त हुए थे।

**- प्रस्तुति : उमेश शर्मा**

# महिला सहकारी बैंकों का जयपुर में सम्मान

दी उदयपुर महिला समृद्धि अरबन को-ऑपरेटिव बैंक

अवार्ड प्राप्त करते बैंक अध्यक्ष विद्या किरण अग्रवाल, पूर्व अध्यक्ष डॉ. किरण जैन, सीईओ विनोद चपलोत एवं अन्य।

दी उदयपुर महिला अरबन को-आपरेटिव बैंक

अवार्ड प्राप्त करते दी उदयपुर महिला अरबन को-आपरेटिव बैंक बैंक के सीईओ एस.एल. अलावत एवं अन्य।

**उदयपुर।** आईटी एवं बैंकिंग की राष्ट्रस्तरीय फ्रन्टियर्स मैग्जिन की ओर से पिछले दिनों जयपुर में आयोजित एक भव्य समारोह में सहकारिता के क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान देने वाले सहकारी बैंकों को सम्मानित किया गया।

**महिला समृद्धि बैंक को तीन अवार्ड :** दी उदयपुर महिला समृद्धि अरबन को-ऑपरेटिव बैंक लिमिटेड को सहकारिता क्षेत्र में सर्वश्रेष्ठ सेवाओं के लिए राष्ट्रीय स्तर के तीन बेस्ट ई-पेमेंट, बेस्ट एचआर प्रेक्टिस और बेस्ट फाइनेंशियल लिटरेसी अवार्ड प्रदान किए गए। बैंक अध्यक्ष विद्या किरण अग्रवाल ने बताया कि सहकारिता, आईटी एवं बैंकिंग की राष्ट्रीय स्तरीय मैग्जीन ने यह अवार्ड जयपुर में एक समारोह में प्रदान किए। देश के 1600 अरबन को-ऑपरेटिव बैंकों में से महिला समृद्धि को चुना गया। सीईओ विनोद चपलोत ने बताया कि राजस्थान सहकारिता में निरन्तर अवार्ड प्राप्त करने वाला महिला समृद्धि पहला बैंक बन गया। समारोह में पूर्व अध्यक्ष डॉ. किरण जैन आईटी हेड निपुण चित्तौड़ा, बैंक निदेशक विमला मूंदड़ा, मीनाक्षी श्रीमाली, चन्द्रकला बोल्या भी मौजूद थे।

**महिला अरबन को श्रेष्ठ बैंक अवार्ड :** दी उदयपुर महिला अरबन को-आपरेटिव बैंक उदयपुर को महिला बैंक की श्रेणी में बेस्ट बैंक का अवार्ड दिया गया। ये अवार्ड सहकारिता के क्षेत्र में उल्लेखनीय कार्य के लिए नोर्थ जोन में दिया गया। इस मौके पर पूर्व अध्यक्ष सविता अजमेरा को श्रेष्ठ अध्यक्ष और एस. एल. अलावत को श्रेष्ठ मुख्य कार्यकारी अधिकारी का अवार्ड दिया गया। वर्तमान अध्यक्ष पुष्पा सिंह ने बताया कि देश के करीब 1600 अरबन बैंकों में से उदयपुर महिला अरबन को ऑपरेटिव बैंक को अवार्ड मिलना गौरव की बात है। समारोह में मुख्य प्रबन्धक एस. सी. जैन भी मौजूद थे।

## पत्रकार दिलीप सम्मानित

**अजमेर (प्रसं)।** पटेल स्टेडियम में आयोजित जिला स्तरीय स्वाधीनता दिवस समारोह में दैनिक 'जलते दीप' के ब्यावर-वृत्त संवाददाता दिलीप सिंह को मुख्य अतिथि राज्य के शिक्षा एवं पंचायत राज मंत्री वासुदेव देवनानी ने पत्रकारिता में उल्लेखनीय कार्य के लिए सम्मानित किया। इस अवसर पर जिला कलक्टर गौरव गोयल, जिला पुलिस अधीक्षक राजेन्द्र सिंह चौधरी, नगर निगम आयुक्त हिमांशु गुप्ता, महापौर धर्मेन्द्र गहलोत, जिला प्रमुख वंदना नौगिया आदि भी उपस्थित थे।

## जसोदा बेन द्वारा रेस्टोरेन्ट का उद्घाटन

रेस्टोरेन्ट का उद्घाटन करती जसोदा बेन एवं उपस्थित नरेश बंदवाल, नीलम बंदवाल, दीपक माहेश्वरी एवं अन्य।

**उदयपुर।** प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की पत्नी जसोदा बेन ने शोभागपुरा में सौ फीट रोड स्थित अंगीरा मल्टीकूजिन रेस्टोरेन्ट का पिछले दिनों उद्घाटन किया। श्रीमती मोदी ने बालिकाओं को प्रेरणा दी कि वे जीवन में पढ़-लिख कर आगे बढ़ें। उन्होंने आश्रय सेवा संस्थान की बालिकाओं के साथ फीता काट कर रेस्टोरेंट का उद्घाटन किया। रेस्टोरेन्ट के पार्टनर दीपक माहेश्वरी एवं नरेश बंदवाल ने जसोदा बेन व अन्य अतिथियों का स्वागत सम्मान किया।

## सिडलिंग ने जीती वाद-विवाद प्रतियोगिता

सिडलिंग स्कूल में हिन्दी दिवस पर वाद-विवाद प्रतियोगिता के विजेता छात्र-छात्राओं के साथ स्कूल निदेशक हरदीप बक्षी, प्राचार्य कीर्ति माकेन एवं उपप्राचार्य शिखा कुलश्रेष्ठ।

प्रत्यूष

# घर-आँगन हों जगमग, मिटे दु:खों का अंधियारा

-शांतिलाल शर्मा

**खुशियों से सराबोर, जोश और उत्साह से लबरेज, सनातन भारतीय संस्कृति का पंचदिवसीय ज्योति पर्व इस बार 17 से 21 अक्टूबर तक हर्षोल्लास से मनाया जाएगा। आइए!**

**तन-मन एवं अवनि-अम्बर को ज्योतित करने वाले इस महोत्सव पर विश्व-बंधुत्व तथा सर्वमंगल की कामना करें।**

**मानव** सभ्यता के आरंभ से ही मनुष्य ऐसे क्षणों की खोज करता रहा है, जहां वह दु:ख, कष्ट व तनाव भूल सके। दीपावली भारतीय संस्कृति का अनूठा त्योहार है, जिसका बेसब्री से इंतजार रहता है। देशावासी अपने धार्मिक प्रतीकों व मान्यताओं से जुड़कर पूरे उत्साह से दीप पर्व मनाते हैं। धनतेरस से शुरू होने वाले पंचदिवसीय उत्सव का दूसरा आयोजन नरक चतुर्दशी या रूप चौदस कहा जाता है। अमावस्या की घनघोर अंधेरी रात में दीपमालाएं सजा कर हर घर-आंगन रोशनी से जगमग किया जाता है। उसके अगले दिन गोवर्धन पूजा उत्सव धूमधाम से मनाया जाता है। पर्व का समापन भाई दूज या यम द्वितीया पर होता है।

## आलोकित हो अन्तर्मन भी

दीप पर्व इस बात का संदेश भी है कि हम अपने मन व हृदय को भी आलोकित करें। भारत के विभिन्न प्रांतों में इस त्योहार को अलग-अलग रंग-ढंग से मनाया जाता है, लेकिन धन की अधिष्ठात्री महालक्ष्मी और रिद्धि-सिद्धि दाता गणपति की पूजा अवश्य की जाती है। लक्ष्मी ऐश्वर्य एवं समृद्धि की प्रतीक है तो गणेश विघ्नहरण एवं बुद्धिदायक। धन्वन्तरि पूजा से दीपावली की शुरुआत का अर्थ है हमारा तन, मन, बुद्धि व हृदय स्वस्थ रहे। ऐश्वर्य और धन केवल उस व्यक्ति, समाज और राष्ट्र के पास संचित रह सकता है, जो स्वस्थ, विवेकी, परिश्रमी और सात्विक हो। लक्ष्मी को चंचला भी कहा गया है, यानी आज यहां, कल वहां। वे स्थायी निवास वहीं करती हैं, जहां तन-मन और आचरण की शुद्धता हो। महालक्ष्मी की सहोदरा अलक्ष्मी यानी दरिद्रता है। आलसी, व्यसनी, रोगी, दुर्बुद्धि, झगड़ालू व दुर्बल व्यक्ति, समाज अथवा राष्ट्र को अलक्ष्मी अपने सम्मोहन में रखती है। इस पावन पर्व पर संकल्प करें कि हम स्वस्थ, सशक्त, सुविचारी, प्रसन्न, हितैषी व नैतिक बन कर समाज व राष्ट्र के प्रति अपना कर्तव्य निभाएंगे।

## एक नज़र इन पर भी

समुदाय में सभी लोग समान नहीं होते। दीपावली की खुशियों से वंचित वर्ग है ग़रीब परिवारों का। मिठाई की बात तो दूर कपड़े भी नहीं खरीद पाते हैं वे। सदियों से वंचित, बेसहारा, उपेक्षित, शोषित और कमजोर लोग आज भी गुरबत का जीवन बिताने को मजबूर हैं। उनकी दशा और दिशा पर चिंतन राष्ट्र और समाज के लिए जरूरी है। विपन्नता एक ऐसा चक्रव्यूह है जिसे सामूहिक स्तर पर प्रयास कर ही तोड़ा जा सकता है। हर व्यक्ति इसमें यथेच्छ सहयोग करे, तभी वे नारकीय जीवन से उबर सकते हैं। परमात्मा सम्पन्न लोगों को ऐश्वर्यशाली इसलिए भी बनाता है कि वे अपनी संपदा का कुछ भाग ऐसे बेसहारा और मज़लूम लोगों की मदद पर खर्च करें। फिजूलखर्ची या दिखावेपन को छोड़कर इन्हें भी खुशियों में शामिल कर इनकी उदास ज़िन्दगी में भी खुशियों के रंग भरें। इनकी मुस्कान आपकी खुशियां भी दुगुनी कर देगी।

## संवारें रिश्तों की बगिया

**हर त्योहार आपसी प्रेम, सौहार्द और एकता का मज़बूत आधार है। दीपावली समस्त भारतीयों का त्योहार है। जैन मतावलम्बी इसे तीर्थंकर महावीर से जोड़ते हैं। हिन्दू इसे भगवान राम की लंका विजय के बाद अयोध्या आगमन का उल्लास मानते हैं। सनातनी इसे महालक्ष्मी, गणपति और यक्षाधिपति कुबेर से जोड़ते हैं तो पुराण साहित्य में इसे अनेक प्रतीकों से जोड़ कर देखा जाता है। आस्था किसी भी नाम में हो, उसे हृदय से स्वीकार करना चाहिए। भारत के सभी लोग, होली, दीवाली, पर्यूषण, लोहड़ी, ईद और क्रिसमस एक साथ मिलकर मनाएं, तभी त्योहारों की सार्थकता है। दीपावली ऐसा त्योहार है जो सामूहिक तौर पर ही मनाया जा सकता है। दीपावली अंधकार को समाप्त करने का प्रतीकात्मक त्योहार है। समाज में धार्मिक भेदभाव, असहिष्णुता, वैमनस्यता, अशालीनता, ऊंच-नीच का तमस पसरा है। ऐसे में सद्भाव, प्रेम, मेल-मिलाप और एकता को बनाए रखने की मुहिम जरूरी है। 'सर्वे भवन्तु सुखिनः' के विराट आदर्शों पर चलकर प्रेम, मैत्री सद्भाव का हाथ बढ़ाएं।**

## घर-आंगन महके खुशहाली

अमावस्या की रात के वक़्त आंगन में जगर-मगर करता नन्हा-सा दीप अगणित कामनाओं का प्रतीक है। विजयादशमी पर वर्षाकाल समाप्त हो जाता है। कार्तिक माह का कृष्ण पक्ष एक तरह से दो ऋतुओं का संधिकाल है। घरों की साफ-सफाई करके लिपाई-पुताई व गृहसज्जा की जाती है। जहां अनुपयोगी वस्तुएं हों, गंदगी, कलह, रुदन, हाहाकार हो वही तो नर्क है। इसलिए जरूरी है दीपावली के पावन पर्व से पहले ऐसे हालातों का विसर्जन कर दिया जाए, जिससे बीमारियां न फैलने पाएं। महालक्ष्मी साफ-सुथरे, स्वस्थ, हर्षोल्लास और निष्कपट लोगों के घरों में स्थाई निवास करती है। दीपक की लौ अपवित्रता को समाप्त कर देती है। स्वच्छता से सम्पन्नता, नीरोगता, सद्बुद्धि और कर्मशीलता का गहरा नाता है। अपना घर-दरवाजा ही नहीं, अपितु सामूहिकता की भावना के साथ अपने आस-पास स्वच्छता का मिशन चलाएं। सजावट में कैंडल्स, फूल, रंग-गुलाल, दीए, बंदनवार, रंगोली, लाइटिंग, इंटीरियर के रंगीन कुशंस, परदे, प्लान्ट्स और रंग-बिरंगी झालरें इत्यादि की खरीददारी में सावधानी और बचत की जरूरत है। पटाख़ों के इस्तेमाल में काफी सावधानी की जरूरत होती है।

## धन सबकुछ नहीं

इतिहास के पन्नों को पलटें तो समय की प्राचीर पर अवसाद के गहराते निशानों की परछाई साफ़ नजर आती है। प्रतियोगिता बाजार और आपाधापी के जीवन में रुपैया ही सबसे सगा भैया बन गया। धन जुटाना, संपदा हथियाना ही जीवन का एकमेव लक्ष्य बन गया है। कलुषित और अन्यायपूर्ण ढंग से भी तिजोरी भरती रहे, बैंक बैलेंस बढ़ता रहे इसी गलाकाट स्पर्धा में आदमी ता-उम्र जुटा रहता है। और इसका परिणाम रोज सामने आते हैं फिर भी ध्यान नहीं दिया जाता। दीपावली को सिर्फ धन की पूजा का पर्व बनाया जा रहा है। रस्म और शगुन के नाम पर संभ्रान्त परिवार तक के लोग जुआ और सट्टेबाजी में लिप्त रहते हैं। जबकि मेहनत की कमाई ही फलदायी और टिकती है।

अनीतिपूर्वक अर्जित कमाई अपने साथ संतति को भी ले डूबती है। आए दिन ऐसे समाचार सुर्खियां बनते हैं, परन्तु हम हैं कि आंखें मूंदे हैं। आइए! इस दीपावली के पुनीत अवसर पर संकल्प करें कि नीतिपूर्वक और परिश्रम से अर्जित संपदा ही ग्रहण करेंगे। यही शुभ-लाभ है।

## रंग-बिरंगी रंगोली

दीपावली की सजावट में रंगोली की एक महत्त्वपूर्ण भूमिका है। देश के हर भाग में दीपावली व अन्य त्योहारों पर महिलाएं ऐसी चितार्कषक रंगोलियां उकेरती हैं कि घर-आंगन धमक उठते हैं। रंगोली भारत की प्राचीन सांस्कृतिक एवं पारम्परिक लोककला है। रंगोली के लिए प्रयोग में ली जाने वाली वस्तुओं में पिसा हुआ सूखा या गीला चावल, सिंदूर, रोली, हल्दी, सूखा आटा गेरू और अन्य प्राकृतिक रंगों का प्रयोग किया जाता है। आजकल रासायनिक रंगों का भी इस्तेमाल हो रहा है। रंगोली को द्वार की देहरी, आंगन के केन्द्र और उत्सव के लिए निश्चित स्थान के बीच या चारों ओर बनाया जाता है। इसे फूलों, लकड़ी के रंगीन बुरादे, खड़िया मिट्टी या सूखे रंगों आदि से भी बनाया जाता है। रंगोली को अल्पना भी कहते हैं। रंगोली हमारी धार्मिक और सांस्कृतिक आस्था की प्रतीक है। यह आध्यात्मिक अनुष्ठान का भी महत्त्वपूर्ण हिस्सा है। यज्ञ, हवन एवं अन्य आयोजनों में भी यह निर्मित की जाती है। दीप पर्व तो रंगोली के बिना अधूरा सा है। महिलाएं और बच्चियां बढ़-चढ़ कर मांडणे बनाती हैं। ग्रामीण अंचलों में मिट्टी के आंगन को बुहारकर पीली मिट्टी से लिपाई-पुताई के बाद महिलाएं मनमोहक चित्र बनाती हैं। जो उनकी कल्पना और समझदारी की उत्कृष्ट व रंगमयी सृजनात्मक अभिव्यक्ति है। रंगोली के चिह्न जैसे स्वस्तिक, कमल का फूल, लक्ष्मीजी के 'पगल्ये' इत्यादि समृद्धि और मंगलकामना के सूचक समझे जाते हैं। रीति-रिवाजों को सहेजती-संवारती यह कला आधुनिक परिवारों का भी एक अभिन्न अंग बन गई है। सभी मांडणे के प्रतीक हैं और हमारी सर्वमंगल की भावनाओं को साकार करते हैं। हर्ष और प्रसन्नता की प्रतीक रंगोली है। पुकोलम यानी फूलों की रंगोली एक तरह की अलंकरण कला है, जो भारत के अलग-अलग प्रान्तों में पृथक-पृथक सम्बोधनों से जानी जाती है। रंगोली का सबसे महत्त्वपूर्ण तत्व उसकी उत्सवधर्मिता है। इसके लिए शुभ्र प्रतीकों का चयन किया जाता है। आधुनिक युग में स्मार्ट होती पीढ़ी भी पारंपरिक रूप से इस कला को सीखती है और पुश्तैनी परम्परा को कायम रखती है। प्रमुख प्रतीकों में कमल का फूल, इसकी पत्तियां, आम, मंगल कलश, मछली, चिड़िया, तोता, हंस, मोर, मानव आकृतियां और बेलबूटे लगभग सम्पूर्ण भारत की रंगोलियों में पाए जाते हैं। विशेष अवसरों पर बनाई जाने वाली रंगोलियों में कुछ विशेष आकृतियां होती। जैसे दीपावली पर दीप, गणेश या लक्ष्मी। रंगोली दो तरह से बनाई जाती है। एक सूखी और दूसरी गीली। एक मुक्तहस्त से तो दूसरी बिन्दुओं को जोड़कर। आकृति बन जाने के बाद उसमें मनचाहे रंग भरे जाते हैं। मुक्तहस्त में सीधे ही जमीन पर आकृति बनाई जाती है। पारम्परिक मांडना बनाने में गेरू और सफेद खड़ी का प्रयोग किया जाता है। आजकल रंगोली के स्टिकर भी बाजार में उपलब्ध हैं, जिन्हें सीधे ही मनचाहे स्थान पर चस्पा कर दिया जाता है। इसके अतिरिक्त बाजार में प्लास्टिक पर बिन्दुओं के रूप में उभरी आकृतियां मिलती है, जिसे जमीन पर रख कर रंग डालने पर सुन्दर आकृतियां उभर आती है। कुछ सांचे भी मिलते हैं, जिनमें आटा या रंग भरकर जमीन पर भुरकाते हैं। सांचे के छेदों में से गिरने वाले रंगों से रंगोली आकार लेती है। आजकल रंगोली स्टेन्सिल भी उपलब्ध हैं।

MIRAJ GROUP

तन भी शुद्ध, मन भी शुद्ध... तो वस्त्र क्यों रहे अशुद्ध !

मिराज शुद्ध
ऑयल सोप
100% पशु चर्बी रहित

MIRAJ TRADECOM PVT. LTD.
Miraj Campus, Nathdwara - 313 301 (Raj.) India / Email : fmcg@mirajgroup.in / Web: www.mirajgroup.in
Contact us at : 88759 92317, 88759 33370

डिसाइड का वादा, कपड़े धुले साफ और ज्यादा

AADHAR PRODUCTS

डिसाइड®

वाशिंग पाउडर, डिटर्जेंट टिकिया एवं बर्तन बार

Mfd. & Mktd. by : AADHAR PRODUCTS PVT. LTD., UDAIPUR Trade Enquiry 7727864004 | visit us at : www.aadharproducts.in

# आँखें बड़ी अनमोल

*पिछली बार आँखों की जांच आपने कब करवाई थी? नहीं है, न याद? कोई बात नहीं, अब भी देर नहीं हुई। नेत्र रोग विशेषज्ञ से जांच कराएं। आप चश्मा नहीं पहनते हैं, तो भी नेत्र ज्योति की सलामती के लिए नियमित तौर पर आंखों की जांच कराएं।*

हम जब आंखों और उसकी सेहत की बात करते हैं तो बढ़ते वजन और अस्त-व्यस्त जीवन शैली को उसके साथ जोड़कर देखते ही नहीं। पर सच्चाई यह है कि हमारी खराब लाइफस्टाइल आंखों की रोशनी पर भी असर डालती है। कई घंटे तक लगातार कम्प्यूटर और लैपटॉप पर काम करने से भी आंखों पर असर पड़ता है। इसी तरह लंबे समय तक मोबाइल के इस्तेमाल से उसकी स्क्रीन से निकलने वाली इलेक्ट्रोमैग्नेटिक किरणें आंखों के विभिन्न हिस्सों रेटिना और कॉर्निया पर प्रतिकूल असर डालती हैं। आंखों को इन तमाम प्रभावों से मुक्त रखने के लिए नियमित जांच जरूरी है।

## वजन को रखें काबू में

मोटापे के शिकार लोगों के बीच एक सबसे आम बात यह होती है कि वे सभी आंखों से जुड़ी समस्याओं से ग्रस्त होते हैं। एक अध्ययन के मुताबिक ज्यादा वजन वाले लोग अगर कुल वसा का पांच प्रतिशत भी कम कर लेते हैं तो वे आंखों से जुड़ी अपनी परेशानियों पर काफी हद तक काबू पाने में सफल हो सकते हैं। आंखों की सेहत के लिए व्यायाम को अनदेखा न करें। नियमित व्यायाम से न सिर्फ दिल और फेफड़े सेहतमंद रहेंगे, बल्कि वजन भी नियंत्रण में रहेगा।

## गलत आदतों से रहें दूर

बहुत ज्यादा शराब पीने या धूम्रपान का असर भी आंखों पर पड़ता है। सिगरेट में ऐसे केमिकल्स होते हैं, जो शरीर के भीतर शरीर के अन्य अंगों के साथ-साथ आंखों को भी नुकसान पहुंचाते हैं। ज्यादा सिगरेट पीने से आंखों में लाल धब्बे तो होते ही हैं, आंखों से जुड़ी अन्य बीमारियों का खतरा भी बढ़ता है। रेटिना के केन्द्र को मेक्युला कहते हैं। हम आंखों की सीध में जिन चीजों को देखते हैं, व मैक्युला ही संभव बनाता है। उम्र बढ़ने खासकर 60 साल उम्र के बाद मेक्युला की कार्यक्षमता धीरे-धीरे कम होने लगती है। अगर आप धूम्रपान करते हैं या शराब पीते हैं तो इसकी कार्यक्षमता समय से काफी पहले ही कम होकर आंखें खराब हो जाती हैं।

## खान-पान में बरतें सावधानी

### खाएं साबुत अनाज

चीनी व मैदा से बने खाद्य पदार्थों का नियमित सेवन बढ़ती उम्र में आंखों से जुड़ी बीमारियों का खतरा बढ़ा देते हैं। इसलिए साबुत अनाज से बने ब्रेड या अन्य खाद्य पदार्थ चुनें। इनमें फाइबर होता है जो पाचन की प्रक्रिया को धीमा कर देता है और शरीर द्वारा चीनी और स्टार्च को ग्रहण करने की क्षमता को भी कम करता है।

### चुनें प्रोटीन का सही स्रोत

किसी भी खाद्य पदार्थ में वसा का स्तर और खाना पकाने का तरीका ही प्रोटीन को सेहतमंद या नुकसानदेह बनाता है। साथ ही सैचुरेटेड फैट के सेवन से बचें। सैचुरेटेड फैट बढ़ती उम्र से जुड़ी आंखों की बीमारियों के खतरे को बढ़ा देता है। अपनी डाइट में प्रोटीन के लिए मछली, मेवा और अंडे आदि को शामिल किया जा सकता है।

### ज्यादा सोडियम से बचें

खाने में नमक की ज्यादा मात्रा से मोतियाबिंद होने की आशंका बढ़ जाती है। खाने में नमक कम डालें, कोई भी पैकेज्ड फूड खरीदने से पहले उस में सोडियम की मात्रा जरूर जांच लें। हर दिन 2,000 मिग्रा से ज्यादा सोडियम न खाएं।

# माइक्रोन्यूट्रिएंस को न करें अनदेखा

आंखों को विटामिन सी, विटामिन ई, जिंक, ओमेगा-थ्री फैटी एसिड और ल्युटीन जैसे पोषक तत्वों की भी जरूरत होती है। आंखों को सेहतमंद रखने में ये सब अलग-अलग तरह की भूमिका निभाते हैं। ये पोषक तत्व अलग-अलग तरह के खाद्य पदार्थों से मिलते हैं, इसलिए जरूरी है कि संतुलित आहार लिया जाय। संतुलित आहार नहीं खाने से शरीर में जरूरी माइक्रोन्यूट्रिएंट्स की कमी होती है और धीरे-धीरे इसका असर आंखों पर पड़ता है।

– डॉ. आलोक व्यास

# प्यार से सहेजें प्यारी आंखें

- आंखों पर बहुत ज्यादा दबाव न डालें। अगर आंखें भारी लग रही हैं तो कुछ देर उन्हें बंद करके बैठ जाएं। अगर ऑफिस में हैं और काम का दबाव बहुत ज्यादा हैं तो भी अपनी सीट से उठें और वॉटर कूलर के पास जाकर एक गिलास पानी पी आएं। इतनी देर के लिए ही सही, आंखों को आराम मिल जाएगा।
- हर दिन 15 से 20 मिनट तक आंखों से जुड़े व्यायाम करके आंखों की रोशनी को ठीक रख सकते हैं। अपने अंगूठे को एक हाथ दूरी पर नाक की सीध में रखें। दोनों आंखों को अंगूठे पर केन्द्रित करें। अब अंगूठे को धीरे-धीरे नाक की ओर लाएं। आंखों से ऊपर-नीचे और दाईं-बाईं ओर देखें। यह एक्सरसाइज दस बार दोहराएं।
- किसी भी चीज को आंखों से 40 सेमी दूर रखकर पढ़ें। कम्प्यूटर पर काम कर रहे हैं तो हर 20 मिनट बाद 20 सेकेंड का ब्रेक लें और आंखों की मांसपेशियों को आराम करने और फिर ध्यान केन्द्रित करने का मौका दें।
- अच्छी नींद और आराम का संबंध आपकीआंखों की रोशनी से सीधे तौर पर है। सात-आठ घंटे की नियमित नींद आपकी आंखों को पर्याप्त आराम देगी।
- आंखों को नमी देने के लिए नियमित तौर पर मॉइस्चराइजिंग या ल्यूब्रिकेटिंग आई ड्रॉप का इस्तेमाल करें।
- सूरज की पराबैंगनी किरणों के असर से आंखों को बचाएं। धूप में अगर घर से बाहर निकल रहे हैं तो सनग्लॉस पहनना न भूलें। हमेशा अच्छी क्वालिटी का ही सनग्लॉस पहनें।

## 1965 युद्ध के हीरो मार्शल अर्जन सिंह नहीं रहे

भारत-पाक के बीच 1965 में हुए युद्ध के हीरो मार्शल अर्जन सिंह ( 98 ) 16 सितम्बर 2017 का पंचतत्व में विलीन हो गए। वायुसेना में फाइव स्टार पद पाने वाले अर्जन सिंह के पिता और दादा भी भारतीय सेना में रहे थे। राष्ट्रपति रामनाथ कोविंद, प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी, यूपीए अध्यक्ष सोनिया गांधी सहित कई नेताओं और राजनैतिक दलों ने उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित की है।

# True Cherishing of Stones

SAMRAT™

**Regular 168 Plus Products with constant R&D to add into products.**

**• Epoxy Resin • Color Convertor • Colorex • Shiner •**
**• Color Shiner • Rust Remover • Paste Pigment • Flocculant Abrasives •**
**• Floor Cleaner • Paint Remover • Marble Conditioner**
**• Cement Remover • Adhesive System • Cutting Powder Chemical •**

SC

## SAMRAT CHEMICAL INDUSTRIES

**Head Office :** No. 2/9, Meera Nagar, 100 Ft Road, Near Mahapragya Vihar, Bhuwana, Udaipur - 313004, Rajasthan, India, Ph : +91-294-2811144, Fax : +91-294-2441332, e-mail : samrat_chemicals@rediffmail.com

**Factory :** G1-104, IID Center, RIICO Industrial Area, Kaladwas, Udaipur

**Branch at BANGALURU:** Shop No. 8, OTIS Ring Road, Manchanhalli, Jigni Industrial Area, Anekal Taluk, Bangaluru-560105, India
Ph : +91-9243606294

**Contact :** +91- 900 121 7333, 941 415 6824, 829 092 7824
**Customer Care : info@samratchem.com, Web : www.samratchem.com**

प्रत्यूष

शुभ दीपावली

# युगदृष्टा आचार्य तुलसी

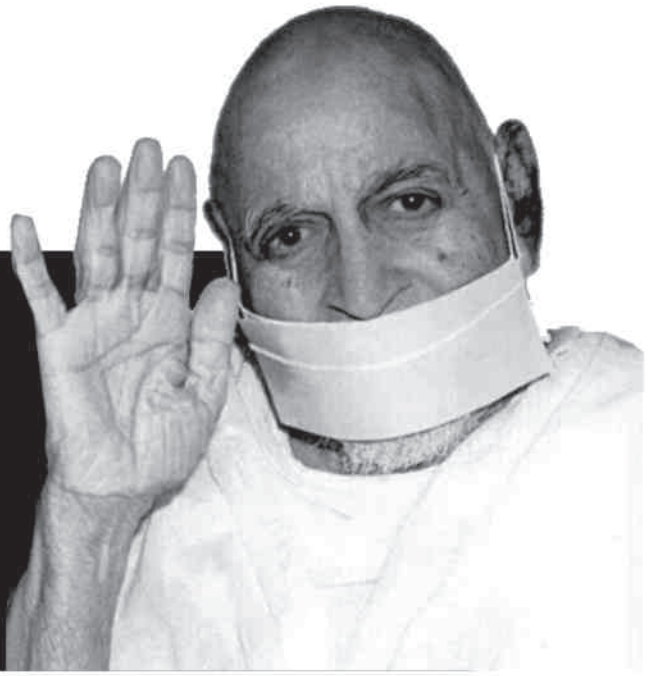

***सफलता, त्याग, तपस्या और नेकनीयत की सबसे बड़ी मिसाल आचार्य तुलसी ने अपना सम्पूर्ण जीवन जनकल्याण में समर्पित किया। बीसवीं सदी के प्रखर संत समुदाय के सदस्य आचार्यश्री ने युग के अनुरूप सामाजिक सरोकारों को नूतन आयाम प्रदान किए। सम-सामयिक आदर्शों और नैतिक आचरणों को मान-मर्यादा के नए निकष पर जांच-परख कर मानव मात्र को नई राह दिखाई।***

किसी भी व्यक्ति को विशेष बनाती है, उसकी सादगी, सरलता, त्याग और उसका निराभिमानी व्यक्तित्व। ये सब गुण जैन श्वेताम्बर तेरापंथ संघ के मार्गदर्शक आचार्य तुलसी की देहयष्टि में विद्यमान थे। आम व्यक्ति जीवन भर अर्जित करता है, लेकिन आचार्य प्रवर ने अपना समूचा जीवन संस्कारित व्यक्ति और समाज के निर्माण में लगा दिया।

आचार्य तुलसी 20वीं सदी की उन शख्सियतों में से थे, जिनके जीवन का हर कोण उपलब्धियों से युक्त था। साम्प्रदायिक सद्भाव की दिशा में वे सदा प्रयत्नशील रहे। उनका जन्म लाडनूं (राजस्थान) के एक सम्पन्न ओसवाल परिवार में 20 अक्टूबर, 1914 को हुआ। ग्यारह वर्ष की बालवय में ही वे सांसारिकता से विमुख हो गए। प्रथम तीर्थंकर भगवान आदिनाथ से चौबीसवें तीर्थंकर महावीर तक, जितने भी युगपुरूष हुए, वे सब वैभवशाली परिवारों से थे। लेकिन उन्होंने ऐश्वर्य और असीम संपदा को छोड़कर जन समान्य को मानवता व धर्म की सच्ची राह दिखाने के लिए सब कुछ त्याग कर संन्यस्त जीवन स्वीकारा। आचार्य तुलसी ने भी उनका अनुकरण किया। संयोगवश एक दिन लाडनूं की विशाल जन-परिषद् में श्री कालूगणजी व्याख्यान कर रहे थे। वहां उपस्थित अल्पवय बालक तुलसी ने उनसे कहा,'गुरुदेव! मुझे व्यापारार्थ परदेश जाने और विवाह करने का त्याग करवा दीजिए।' लोग सन्न रह गए कि यह क्या?'बालक है और बात त्याग की बड़ी कर रहा है। कालूगणी जी ने भी उसे इस वय में 'त्याग' की हठ न करने को समझाया और मौन हो गए। तुलसी बोले - 'गुरुदेव! आप मुझे त्याग नहीं करवा रहे, किन्तु मैं आपश्री की साक्षी में इनका त्याग करता हूँ।' समय का पहिया घूमा। कुछ दिनों बाद आचार्य कालूगणी ने उन्हें दीक्षा ही प्रदान नहीं की बल्कि अपना उत्तराधिकारी भी घोषित किया। समया बीता और करीब एक दशक बाद कालूगणी जी ने देह त्यागी और बाईस वर्षीय युवा तुलसी पर तेरापंथ धर्म शासन का दायित्व आ गया। उन्होंने जैन आगम ग्रंथों के गहन अध्ययन से प्राप्त नवनीत का आम जनता में वितरण किया और मानव मात्र की भलाई में संलग्न हो गए। 2 मार्च 1949 के दिन सरदार शहर की विशाल धर्मसभा में अणुव्रत आन्दोलन की नींव रखी गई। जिसकी मुख्य बातें थी - धर्म का स्थान पहला, सम्प्रदाय का दूसरा। सम्प्रदाय अनेक हो सकते हैं, धर्म सबका एक। धर्म राजनीति से अलग है, उसमें राजनीति का हस्तक्षेप नहीं होना चाहिए। इस आन्दोलन के अनुसार धर्म केवल परलोक सुधारने के लिए ही नहीं है, इससे वर्तमान भी सुधारा जा सकता है। जिसका वर्तमान नहीं सुधरता, उसका परलोक भी नहीं सुधरता। चरित्र धर्म का मुख्य पक्ष है, उपासना पक्ष गौण है। इस विचारधारा ने एक नई स्थिति का निर्माण किया। अणुव्रत कोई उपासना पद्धति नहीं, केवल नैतिक आचरण का संदेश है। जो धीरे-धीरे मानव-धर्म का मंच बनता चला गया। अध्यात्म की ऊर्जा के चिंतन से ही संस्कारित राष्ट्र और समाज का उद्भव होता है। अणुव्रती बनने वाला किसी को अस्पृश्य-अछूत नहीं मानता। आचार्य तुलसी श्वेताम्बर तेरापंथ समुदाय के नवम आचार्य थे। जैन तेरापंथ श्रमण संघ की स्थापना 250 वर्ष पूर्व संत भीखणजी ने की थी। 60 वर्ष की आयु में ही 1994 में आपने सुजानगढ़ के मर्यादा महोत्सव में युवाचार्य महाप्रज्ञ को अपना उत्तराधिकारी घोषित किया।

23 जून, 1997 को आचार्य तुलसी की आत्मा का ऊर्ध्वारोहण हुआ। लाखों श्रावकों ने गंगाशहर में नश्वर देह में अवतरित मानवता के विराट पुजारी को कोटि-कोटि प्रणाम के साथ विदा किया। महामानव तुलसी लाखों-करोड़ों लोगों को जीवन की सच्ची राह दिखा गए। जैन श्वेतांबर तेरापंथ श्रमणसंघ के एकादशम के रूप में आचार्य और महाश्रमण अणुव्रत की विचार क्रांति को पूरे देश में विस्तारित करते हुए सहयोग, सद्भाव और समरसता का संदेश दे रहे है।

**- जगदीश सालवी**

## जीवन्ता ने दिया नवजीवन

# 5 माह और 520 ग्राम के नवजात को बचाया

**उदयपुर।** आईसीयू में 102 दिन तक अपनी सांसों से जूझते रहे महज पांच माह के 520 ग्राम वजनी नन्हें शिशु को आखिरकार जीवन्ता चिल्ड्रन हॉस्पिटल के चिकित्सकों ने बचा लिया। यह प्रदेश का पहला मामला है जब सबसे कम वजन एवं कम दिन के प्रीमेच्योर नवजात शिशु को बचाया गया है। हॉस्पिटल के निदेशक शिशु रोग विशेषज्ञ सुनील जांगिड़ ने बताया कि हरियाणा निवासी एक दम्पत्ति को शादी के 18 साल बाद जुड़वां बच्चे का पता चला, लेकिन 24 सप्ताह यानि साढ़े पांच माह में ही क्रिटिकल प्रसव की स्थिति होने पर उन्हें हरियाणा से उदयपुर शिफ्ट किया गया। इमरजेंसी में सिजेरियन ऑपरेशन से जुड़वां बच्चों का जन्म गत 29 मई को हुआ। जन्म के वक्त पहले शिशु का वजन 520 ग्राम और दूसरे का मात्र 480 ग्राम था। शिशु स्वयं श्वास नहीं ले पा रहे थे, शरीर नीला पड़ता जा रहा था। उन्होंने, डॉ. निखिलेश जैन एवं उनकी टीम ने डिलीवरी के तुरंत पश्चात् नवजात शिशु के फेफड़ों में नली डालकर श्वास दी एवं एनआईसीयू में वेंटीलेटर पर भर्ती किया। जुड़वा बच्चों में 480 ग्राम वजनी शिशु के दिमाग में आंतरिक रक्तस्राव होने से उसे बचाया नहीं जा सका। दूसरे 520 ग्राम के शिशु में खून की कमी थी। दिल की दो धमनियों को जोड़ने वाली नस पीडीए खुली थी, जिससे दिल एवं फेफड़ों पर सूजन आ रही थी। प्रारंभिक दिनों में शिशु का वजन घटकर 420 ग्राम तक आ गया था। यह चिकित्सकों के लिए और जटिल केस बन गया। पेट की आंतें अपरिपक्व एवं कमजोर होने के कारण, दूध का पचन संभव नहीं था। ऐसी गंभीर स्थिति में शिशु को नसों के द्वारा सभी आवश्यक पोषक तत्व यानि ग्लूकोज, प्रोटीन्स एवं वसा दिए गए। धीरे-धीरे नली द्वारा बूंद-बूंद दूध देने के साथ ही शिशु में संक्रमण न हो, इसका भी विशेष ध्यान रखा गया। चिकित्सकों की टीम द्वारा शिशु की 102 दिनों तक आईसीयू में नियमित देखभाल की गई। शिशु के दिल, मस्तिष्क, आंखों का भी नियमित रूप से चेकअप किया गया। साढ़े तीन माह बाद बच्चे को डिस्चार्ज करते समय उसका वजन 1710 ग्राम हो गया है। शिशु रोग विशेषज्ञ डॉ. आर. के. अग्रवाल के अनुसार राजस्थान में इतने छोटे एवं कम वजन के नवजात शिशु के अस्तित्व की अब तक तो कोई रिपोर्ट देखने को नहीं मिली है। डॉ. एस. के. टांक, डॉ. प्रदीप सूर्यवंशी ने कहा कि ऐसे नवजात के सभी अंग अपरिपक्व, कमजोर एवं नाजुक होते हैं और इलाज के दौरान काफी कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। डॉ. जांगिड़ ने बताया कि जीवन्ता हॉस्पिटल ने अब तक 6 माह की गर्भावस्था एवं 600 ग्राम से एक किलो तक वजन के 75 बच्चों को बचाने में सफलता हासिल की है।

**डॉ. सुनील जांगिड़ बच्चे के माता-पिता एवं ऑपरेशन टीम के साथ।**


दीपावली की हार्दिक शुभकामनाएं

रितेश जैन

मै. ऋषि एन्टरप्राइजेज

(रेल्वे कॉन्ट्रेक्टर)

मकान नं. 2, न्यू बैंक कॉलोनी, लोकेन्द्र भवन कम्पाउण्ड, रतलाम-457001 (म.प्र.)

फोन : 07412-232858

# टोबा टेकसिंह

## सामप्रदायिक सद्भाव की विरासत

भारत में हम टोबा टेकसिंह को महान कहानीकार सआदत हसन मंटो के मार्फत जानते हैं। टोबा टेकसिंह विभाजन पर मंटों की सबसे प्रसिद्ध और त्रासद कहानी है। टोबा टेकसिंह पाकिस्तान में एक जगह का नाम है और यहां ऐतिहासिक ..... रेलवे स्टेशन भी है। कहानी का मुख्य पात्र इसी जगह का है। वह यहीं रहना चाहता था लेकिन एक दिन अचानक पाता है कि उसे बस इसलिए भारत भेजा जा रहा है क्योंकि वह सिख है। इस आघात को सह पाना उसके लिए बेहद मुश्किल साबित हुआ है और भारत और पाकिस्तान के बीच नो-मैंस लैंड में ही उसकी मौत हो गई है। हालांकि यह कहानी और इसके पात्र काल्पनिक हैं, मगर उस जगह का अस्तित्व आज भी कायम है। इसका इतिहास टेकसिंह नाम के एक व्यक्ति से जुड़ा है, जिसका काम इस क्षेत्र में आने वाले यात्रियों की मदद करना था। चूंकि यह स्टेशन कई रास्तों के संगम पर था, इसलिए यहां यात्रियों और राहगिरों का आना-जाना लगा रहता था। टेकसिंह इन्हें पास के एक तालाब से मटके में पानी लाकर पिलाया करता था। मटके को उर्दू में टोबा कहा जाता है। यह जगह विभाजन की क्रूरता से अछूता नहीं रही। न केवल यह हिंसा की साक्षी बनी, बल्कि इसने शवों से लदी गुजरती ट्रेनें भी देखी। आज़ादी के बाद कट्टरपंथियों ने इस जगह का नाम बदलने की कोशिश की, लेकिन गांव के लोगों ने विरोध किया और जगह के महत्व की इस विरासत को बचाया। एक सामाजिक कार्यकर्ता उमैर अहमद टोबा टेक सिंह के कोऑर्डिनेटर के तौर पर हर साल शहर में एक शांति कैलेंडर भी जारी करते हैं। उनका कहना है कि निश्चित तौर पर हम इतिहास की भरपाई अमन और भाईचारे के बीज बोकर ही कर सकते हैं।

टवारे के दो-तीन साल बाद पाकिस्तान और हिन्दुस्तान की सरकारों को खयाल आया कि साधारण कैदियों की तरह पागलों का भी तबादला होना चाहिए। यानी जो मुसलमान पागल हिन्दुस्तान के पागलखानों में हैं, उन्हें पाकिस्तान पहुंचा दिया जाए और जो हिन्दू और सिख पाकिस्तान के पागलखानों में हैं, उन्हें हिन्दुस्तान के हवाले कर दिया जाए।

सआदत हसन मंटो

मालूम नहीं यह बात ठीक थी या नहीं। बहरहाल बुद्धिमानों के फैसले के अनुसार इधर-उधर ऊंचे स्तर की कॉन्फ्रेंस हुई और आखिर एक दिन पागलों के तबादले का नियत हो गया। अच्छी तरह छानबीन की गई। वे मुसलमान पागल, जिनके अभिभावक हिन्दुस्तान में थे, वहीं रहने दिए गए और जो बाकी थे, उन्हें सीमा पार रवाना कर दिया गया। यहां पाकिस्तान से, क्योंकि करीब-करीब सब हिन्दू-सिख जा चुके थे, लिहाज़ा किसी को रखने-रखाने का सवाल ही न पैदा हुआ। जितने हिन्दू-सिख पागल थे, सबके सब पुलिस संरक्षण में सीमा पार पहुंचा दिए गए। उधर की मालूम नहीं, लेकिन लाहौर के पागलखाने में जब इस तबादले की खबर पहुंची तो बड़ी दिलचस्प और कौतुकपूर्ण बातें होने लगीं। एक मुलसमान पागल, जो बारह बरस से रोजाना बाकायदगी के साथ 'जमींदार' पढ़ता था। उसने जब उसके दोस्त से पूछा - 'मौलवी साहब, यह पाकिस्तान क्या होता है?' तो उसने बड़े सोच-विचार के बाद जवाब दिया - 'हिन्दुस्तान में एक ऐसी जगह है, जहां उस्तरे बनते हैं।'

यह जवाब सुनकर उसका मित्र संतुष्ट हो गया। इसी तरह एक दिन सिख पागल ने एक दूसरे सिख पागल से पूछा - 'सरदारजी, हमें हिन्दुस्तान क्यों भेजा जा रहा है? हमें तो वहां की बोली भी नहीं आती।' दूसरा मुस्करा दिया - 'मुझे तो हिन्दुस्तान की बोली आती है। हिन्दुस्तानी बड़े शैतानी आकड़-आकड़ फिरते हैं.....।' एक मुसलमान पागल ने नहाते-नहाते 'पाकिस्तान ज़िंदाबाद' का नारा इस बुलंदी से लगाया कि फ़र्श पर फिसलकर गिरा और अचेत हो गया। कुछ पागल ऐसे भी थे, जो पागल नहीं थे। इनमें अधिकतर ऐसे कातिल थे, जिनके रिश्तेदारों ने अफसरों को दे-दिलाकर पागलखाने भिजवा दिया था ताकि वे फांसी के फंदे से बच जाएं।

ये कुछ-कुछ समझते थे कि हिन्दुस्तान का क्यों विभाजन हुआ है और यह पाकिस्तान क्या है, लेकिन सभी घटनाओं से ये भी बेखबर थे। अखबारों से कुछ पता नहीं चलता था और पहरेदार सिपाही अनपढ़ और ज़ाहिल थे। उनकी बातचीत से ये कोई नतीजा नहीं निकाल सकते थे। उनको सिर्फ इतना ही मालूम था कि एक आदमी मोहम्मद अली जिन्ना है, जिसको कायदे-आज़म कहते हैं। उसने मुसलमानों के लिए एक अलग मुल्क बनाया है, जिसका नाम पाकिस्तान है। यह कहां है? इसकी स्थिति क्या है? इसके विषय में वे कुछ नहीं जानते। यही कारण है कि पागलखाने में वे सब पागल, जिनका दिमाग पूरी तरह से खराब नहीं था, इस ऊहापोह में थे कि वे पाकिस्तान में हैं या हिन्दुस्तान में। अगर हिन्दुस्तान में हैं तो पाकिस्तान कहां है? और अगर वे पाकिस्तान में हैं तो यह कैसे हो सकता है कि वे कुछ अर्सा पहले यहां रहते हुए भी हिन्दुस्तान में थे। एक पागल तो पाकिस्तान और हिन्दुस्तान तथा हिन्दुस्तान और पाकिस्तान के चक्कर में ऐसा पड़ा कि और ज्यादा ही पगलेट हो गया। झाड़ू देते-देते एक दिन दरख़्त पर चढ़ गया और एक टहनी पर बैठकर दो घंटे

लगातार भाषण देता रहा, जो पाकिस्तान और हिन्दुस्तान के नाजुक मामले पर था।

सिपाहियों ने उसे नीचे उतरने को कहा तो वह और ऊपर चढ़ गया। डराया-धमकाया गया तो उसने कहा - 'मैं न हिन्दुस्तान में रहना चाहता हूं न पाकिस्तान में, मैं इस पेड़ पर रहूंगा।' जब उसका दौरा ठण्डा पड़ गया, तो वह नीचे उतरा और अपने हिन्दू-सिख दोस्तों के गले मिल-मिलकर रोने लगा। इस ख्याल से उसका दिल भर आया कि वे उसे छोड़कर हिन्दुस्तान चले जाएंगे। एक एमएसी पास रेडियो इंजीनियर, जो मुसलमान था और दूसरे पागलों से बिल्कुल अलग-थलग बाग की एक खास रोश पर सारा दिन खामोश टहलता रहता था, में यह तब्दीली प्रकट हुई कि उसने अपने तमाम कपड़े उतारकर दफ़ेदार के हवाले कर दिए और नंग-धड़ंग बाग के चक्कर लगाना शुरू कर दिया। एक मोटा मुसलमान चनयूट जो कि मुस्लिम लीग का एक सक्रिय कार्यकर्ता रह चुका था और दिन में पन्द्रह-सोलह बार नहाया करता, एक दिन यह आदत छोड़ दी। उसका नाम मोहम्मद अली था। चुनांचे उसने एक दिन अपने जंगले में घोषणा कर दी कि वह कायदे-आज़म मुहम्मद अली जिन्ना है। उसकी देखा-देखी एक सिख पागल मास्टर तारासिंह बन गया। करीब था कि उस जंगले में खून-खराबा हो जाए, मगर दोनों को खतरनाक पागल करार देकर अलग-अलग बंद कर दिया गया।

लाहौर का एक नौजवान हिन्दू वकील था, जो मुहब्बत में पड़ कर पागल हो गया। जब उसने सुना कि अमृतसर हिन्दुस्तान में चला गया है तो उसे बहुत दुःख हुआ। उसी शहर की एक हिन्दू लड़की से उसे प्यार जो हो गया था। यद्यपि उसने उस वकील को ठुकरा दिया था, मगर दीवानगी कायम रही। चुनांचे वह उन तमाम मुस्लिम लीडरों को गालियां देता रहा, जिन्होंने मिल-मिलाकर हिन्दुस्तान के दो टुकड़े कर दिए थे। उसकी प्रेमिका हिन्दुस्तानी बन गई और वह पाकिस्तानी।

जब तबादले की बात शुरू हुई तो वकीलों ने समझाया कि वह दिल छोटा न करे, उसको हिन्दुस्तान भेज दिया जाएगा - उस हिन्दुस्तान में, जहां उसकी प्रेमिका रहती है, मगर वह लाहौर नहीं छोड़ना चहता था। इस ख़्याल से कि अमृतसर में उसकी प्रैक्टिस नहीं चलेगी। यूरोपियन वार्ड में दो एंग्लो-इंडियन पागल थे। हिन्दुस्तान को आजाद करके अंग्रेज चले गए तो उनको बहुत बड़ा दुःख हुआ। वे घंटों छिप-छिपकर बातचीत करते रहे कि हिन्दुस्तान के पागलखाने में उनकी हैसियत किस तरह की होगी।

एक सिख था, जिसको पागलखाने में दाखिल हुए पन्द्रह वर्ष हो चुके। हर समय उसकी जुबान में अज़ीबोग़रीब शब्द सुनने में आते थे। वह दिन को सोता न रात को। हिन्दुस्तान-पाकिस्तान और पागलों के तबादले पर चर्चा होती तो वह ध्यान से सुनता। वह बड़बड़ाता कि टोबा टेकसिंह कहां है ? लेकिन किसी को भी मालूम नहीं कि वह पाकिस्तान में है या हिन्दुस्तान में। सभी पागल इस उलझन में रहते कि सियालकोट पहले हिन्दुस्तान में होता था, पर अब सुना है कि पाकिस्तान में है। क्या पता लाहौर जो अब पाकिस्तान में है, कल हिन्दुस्तान में चला जाएगा। एक सिख पागल पन्द्रह वर्षों से यहां है, उसने किसी से झगड़ा-फसाद नहीं किया। टोबा टेकसिंह में उसकी कई ज़मीनें थीं। अच्छा खाता-पीता था कि अचानक ही उसका दिमाग उलट गया। उसके रिश्तेदार लोहे की मोटी जंजीरों में उसे बांधकर लाए और पागलखाने में दाखिल करा गए। उसका नाम विशनसिंह था, मगर उसे टोबा टेकसिंह कहते थे। वह बहुत कम नहाता था। इस कारण दाढ़ी और बाल आपस में जम गए। जब उसके स्वजन उससे मिलने आने को होते, तभी वह नहाता था। उसकी एक लड़की थी, जो हर महीने एक अंगुल बढ़ती-बढ़ती पन्द्रह वर्ष में जवान हो गई, मगर वह उसे पहचानता तक नहीं। जब वह बच्ची थी तब भी अपने बाप को देखकर रोती थी और अब भी उसकी आंखों में आंसू बहते थे।

पागलखाने में एक पागल ऐसा भी था जो अपने आप को खुदा कहता था। उससे जब एक दिन बिशनसिंह ने पूछा, टोबा टेकसिंह पाकिस्तान में है या हिन्दुस्तान में, तो उसने अपनी आदत के मुताबिक कहकहा लगाया और कहा - 'वह न पाकिस्तान में है न हिन्दुस्तान में, इसलिए कि हमने अभी तक हुक्म नहीं दिया।' बिशनसिंह ने उस खुदा से कई बार मिन्नत-खुशामद से कहा कि वह उसे हुक्म दे दे ताकि झंझट खत्म हो, मगर वह बहुत व्यस्त था, क्योंकि उसे और भी अनगिनत हुक्म देने थे। एक दिन वह तंग आकर उस पर बरस पड़ा कि जल्दी कर। तबादले के कुछ दिन पहले टोबा टेकसिंह का एक मुसलमान दोस्त फजलुद्दीन मुलाकात के लिए आया। वह बोला, 'अब मैंने सुना है कि हिन्दुस्तान जा रहे हो - ..... और मेरे लायक ख़िदमत हो, कहना।' बिशन ने फजलू से पूछा - 'टोबा टेकसिंह कहां है ?' उसने कहा वहीं है, जहां था। बिशन ने फिर पूछा - 'पाकिस्तान में या हिन्दुस्तान में ?' उसने कहा, पता नहीं।

तबादले की तैयारियां पूरी हो चुकी थीं। इधर-से-उधर और उधर-से-इधर आने वाले पागलों की सूचियां पहुंच गई और तारीख भी निश्चित हो गई। लाहौर के पागलखाने से हिन्दू-सिख पागलों से भरी लारियां पुलिस के दस्ते के साथ रवाना हुई, अफसर भी उनके साथ। बाघा बोर्डर पर दोनों और के सुपरिटेंडेंट एक-दूसरे से मिले और दोनों ओर के पागलों का तबादला शुरू हो गया, रात-भर जारी रहा। पागलों को लारियों से निकालना और उनको दूसरे अफसरों के हवाले करना बड़ा कठिन काम था। कुछ तो बाहर निकलते ही नहीं, जो निकलने को तैयार होते, उनको संभालना मुश्किल होता। कोई नंगे तो कोई अधनंगे। कोई गालियां बक रहा तो कोई गाने गा रहा था। कुछ आपस में लड़ रहे और कुछ रो रहे, बक रहे थे। कान पड़ी आवाज सुनाई नहीं देती। पागल स्त्रियों का शोरगुल अलग था और सर्दी इतने कड़ाके की थी कि दांत से दांत बज रहे थे।

अधिकतर पागल इस तबादले को नहीं चाहते थे। इसलिए कि उनकी समझ में नहीं आया कि उन्हें अपनी जगह से उखाड़ कर कहां फेंका जा रहा है। थोड़े से वे जो सोच-समझ सकते थे, 'पाकिस्तान ज़िंदाबाद' के नारे लगा रहे थे। दो-तीन बार झगड़ा होते-होते बचा, क्योंकि कुछ हिन्दुस्तानियों

और सिखें को ये नारे सुनकर तैश आ गया था। जब बिशनसिंह की बारी आई और जब उसको दूसरी ओर भेजने के सम्बन्ध में अधिकारी लिखत-पढ़त करने लगे तो उसने पूछा – 'टोबा टेकसिंह कहां हैं ? पाकिस्तान में या हिन्दुस्तान में ?' संबंधित अधिकारी हँसा और बोला पाकिस्तान में।' यह सुनकर बिशनसिंह एक तरफ हटा और दौड़कर अपने शेष साथियों के साथ पहुंच गया। पाकिस्तानी सिपाहियों ने उसे पकड़ लिया और दूसरी तरफ ले जाने लगे, किन्तु उसने चलने से इनकार कर दिया – 'टोबा टेकसिंह कहां है ?' और जोर-जोर से चिल्लाने लगा। उसे बहुत समझाया गया कि टोबा टेकसिंह अब हिन्दुस्तान में चला गया है – यदि नहीं गया तो उसे तुरंत भेज दिया जाएगा। किन्तु वह न माना। जब उसे जबरदस्ती दूसरी ओर ले जाने की कोशिश की गई तो वह बीच में ही एक स्थान पर इस प्रकार अपनी सूजी हुई टांगों पर खड़ा हो गया, जैसे अब कोई ताकत उसे यहां से नहीं हटा सकेगी। क्योंकि आदमी बेजरर था, इसलिए उसके साथ जबरदस्ती नहीं की गई, उसको वहीं खड़ा रहने दिया गया और शेष काम होता रहा। सूरज निकलने से पहले स्तब्ध खड़े बिशनसिंह ने गले से एक गगनभेदी चीख निकाली। इधर-उधर से कई अफसर दौड़े आए और देखा कि वह आदमी, जो पन्द्रह वर्ष तक दिन-रात अपनी टांगों पर खड़ा रहा था – उधर वैसे ही कांटेदार तारों के पीछे हिन्दुस्तान और इधर वैसे ही कांटेदार तारों के पीछे पाकिस्तान। बीच में जमीन के उस टुकड़े पर, जिसका कोई नाम नहीं था, टोबा टेकसिंह खड़ा था।

**वास्तु**

# पौधें जो दें सुकून

***बेहतर स्वास्थ्य और उन्नति के लिए वास्तु नियम के अनुसार लगाने लायक कई ऐसे पौधे हैं, जिन्हें घर-परिसर में लगाकर आप राहत अनुभव कर सकते हैं।***

घर के पीछे की ओर लगाएं केले का पौधा। केले के पेड़ को किसी ग्रह के साथ जोड़ें तो यह बृहस्पति देवता का स्वरूप है। भगवान विष्णु को प्रसन्न करने के लिए भी केले के पेड़ की पूजा की जाती है। केले का पेड़ लगाने से धन संबंधी परेशानियों से भी राहत मिलती है। छोटे-छोटे फूलों वाला हरसिंगार का पेड़ दिलाएगा लाभ और इसकी अद्‌भुत सुगंध से मिलेगी दिल को ठंडक। इस पौधे का संबंध चन्द्र ग्रह से है जो शांति और शीतलता पहुंचाने वाला ग्रह है। इस पौधे को घर के बीचों-बीच या पिछले हिस्से में लगाने से आर्थिक संपन्नता प्राप्त होती है। इसकी देखभाल में कोताही न करें, इस पौधे के सूख जाने से मनोमस्तिष्क पर बुरा प्रभाव भी पड़ता है। तुलसी का पौधा घर के बीचोंबीच रखना बहुत ही लाभदायक है और यह घर से नकारात्मक उर्जा को दूर कर वातावरण में सुख-शांति प्रदान करता है। जिनका शुक्र कमजोर है उन्हें रोज शाम को तुलसी के आगे दीप प्रज्ज्वलित करना चाहिए। अनार काफी फायदेमंद है। वास्तु विज्ञान और ज्योतिषशास्त्र में भी अनार को बड़ा महत्व दिया गया है। राहु-केतु का नकारात्मक प्रभाव व्यक्ति के जीवन को उलझा देता है और नित-नई परेशानियों से रूबरू होने को विवश कर देता है। तंत्र-मंत्र के बाद भी दूर नहीं हो रही जीवन की मुश्किलें तो वास्तु विज्ञान के अनुसार अनार का पेड़ घर के सामने लगाना फायदेमंद है। अनार के फूल को शहद में डुबोकर प्रत्येक सोमवार भगवान शिव को समर्पित करने से भारी से भारी कष्ट दूर होते हैं। शनि नाराज हैं और जीवन में बनते काम बिगड़ रहे हैं तो घर में लगाएं शमी का पौधा। शमी के पौधे को घर के मुख्य द्वार के बायीं ओर लगाएं और नियमित रूप से सरसों के तेल का दीपक जलाएं। इससे शनि की कृपा बनी रहेगी और हर काम आसानी से बनने लगेंगे। पीपल का बोनसाई पेड़ घर के पिछले हिस्से में लगाएं, यह उन्नति एवं स्वास्थ्य को बेहतर बनाए रखने में काफी सहायक है।

**– सुशील अग्रवाल**

**कविता**

# एक चिनगारी और...

**मेरे दोस्तों!** तुम मौत को नहीं पहचानते,
चाहे वह आदमी की हो या किसी देश की,
चाहे वह समय की हो या किसी वेश की,
सब कुछ धीरे-धीरे ही होता है।
धीरे-धीरे ही घुन लगता है, अनाज मर जाता है,
धीरे-धीरे ही दीमकें सब-कुछ चट कर जाती है,
धीरे-धीरे ही विश्वास खो जाता है, संकल्प सो जाता है।
मेरे दोस्तों! धीरे-धीरे कुछ नहीं होता,
सिर्फ मौत होती है.... सिर्फ मौत मिलती है।
मैं कब्र में नहीं हूं, जो हवा मर्सिया पढ़े,
वह यह न समझे कि वह झाडू की तरह आएगी,
और मैं सूखे पत्ते की तरह उसके साथ हो लूंगा।

मुकुट धारण किए, घूम रहा विज्ञापनबाज़ शासक।
और योद्धाओं की पोशाक बाजेवालों ने पहन रखी है,
आग जलायी जाती है पर डफ गरम करने के लिए।
जो भी आएगा समाजवाद और समानता
के नाम की ईटें पकाएगा,
मनमाने बेडौल सांचों में ढालेगा कच्ची मिट्टी
पर बुझा पड़ा रहेगा आवाँ, नाम गुलबिया चतुर झाँवा।
मैं जानता हूँ मेरे दोस्त!
हमारा-तुम्हारा और सबका गुस्सा
जंगली सूअर की तरह तेजी से सीधा
दौड़ता हुआ निकल जाएगा
और उस शिकारी का कुछ नहीं बिगाड़ पाएगा

जो पैंतरा बदल लेता है
सत्ता चतुर बनाती है और पाशविक भी,
सभ्यता बहुत चालाकी से आदिम
गुफाओं में बंद कर देती है।
बर्फ में पड़ी गीली लकड़ियां, अपना
तिल-तिल जलाकर
वह गरमाता रहा और जब आग
पकड़ने ही वाली थी
खत्म हो गया उसका दौर।
ओ मेरे देशवासियों एक चिनगारी और
..... एक चिनगारी और।

**- सर्वेश्वरदयाल सक्सेना**

# पेट में पत्थर लिए विचरता शुतुरमुर्ग

***शुतुरमुर्ग दुनिया में पक्षियों की सबसे बड़ी जीवित प्रजातियों में से है और मादा शुतुरमुर्ग अन्य पक्षियों की तुलना में सबसे बड़े और वज़नी अण्डे देता है। धरती के इस सबसे बड़े पक्षी के दांत नहीं होते। इसलिए अपने भोजन को पचाने के लिए पेट में पत्थर के टुकड़े रखता है। जन्म के बाद एक साल तक यह प्रति माह 10 इंच तक बढ़ता है। इसकी औसत आयु 40-45 वर्ष है।***

**शुतुरमुर्ग** की ऊंचाई 9 फीट और वजन 155 किलोग्राम तक होता है। यह मुख्य रूप से मैदानी और मरूस्थलीय क्षेत्र में समूहों में विचरण करता है। संकट की अवस्था में या तो यह जमीन से सटकर अपने को छिपाने की कोशिश करता है, या फिर अपनी लम्बी टांगों से सरपट भाग खड़ा होता है। यह आधा घंटे तक बिना विश्राम 70 किमी प्रति घंटा की गति से भाग सकता है। इसके बाद गति थोड़ी कम हो जाती है। वजन अधिक होने से उड़ नहीं सकता। फंस जाने पर अपने पैरों से घातक लात मारकर बचाव करता है। रफ्तार के समय यह स्वयं को सन्तुलित रखने के लिए 6 फीट लम्बे पंख का उपयोग करता है। लम्बे पैर और गर्दन वाला शुतुरमुर्ग मुख्य रूप से अफ्रीका में पाया जाता है। नर शुतुरमुर्ग को रोस्टर और मादा को हेन कहा जाता है। बीज, घास, छोटे पेड़-पौधे या उनकी पत्तियां और फल-फूल इसका आहार है। कभी-कोई कीट सामने पड़ गया तो उसे भी भोजन बनाने में परहेज नहीं।

दांत नहीं होने के कारण यह खाना साबुत निगल जाता है। जिसे पचाने के लिए उसे कंकड़ खाने पड़ते हैं। ये कंकड़ पेट की क्रियाओं से भोजन को महीन बनाने में सहायक बनते हैं। यह हर समय पेट में एक किलो से अधिक पत्थर के टुकड़े लिए चलता है। बिना पानी के कई दिन रह सकता है। जो घास-फूस, पौधे इसने खाए हैं, वे ही शरीर की आवश्यकतानुसार जलापूर्ति कर देते हैं, लेकिन जब भी इसे कहीं जल उपलब्ध हुआ तो, उसे गटागट पी लेता है और मौका मिला तो शरीर की साफ़-सफाई भी। यह प्राय: दिन में विचरण करने वाला जीव है। अपनी तीक्ष्ण दृष्टि और श्रवण शक्ति के कारण यह सिंह, बाघ जैसे परभक्षियों की आहट को दूर से ही भांप लेता है। इसकी आंख दो इंच लम्बी-चौड़ी होती हैं। धरती के किसी भी अन्य जीव की आंखें इतनी बड़ी नहीं होती। शुतुरमुर्ग 2 से 4 वर्ष की अवस्था में यौन परिपक्वता प्राप्त कर लेते हैं। ये बार-बार प्रजनन करने में सक्षम है। प्रजननकाल मार्च-अप्रैल में प्रारंभ होकर सितम्बर तक रहता है। शुतुरमुर्ग का अंडा भी सबसे बड़ा यानि 6 इंच लम्बा 5 इंच चौड़ा होता है। यह वर्ष भर में ऐसे 60 अंडे दे सकता है। एक अण्डे का वजन 1.6 किलोग्राम तक होता है। जो मुर्गी के 24 अण्डे के बराबर है। मादा अपने अण्डे एक सामुदायिक घोसले में देती है, जो 30 से 60 सेन्टीमीटर गहरा और लगभग 3 मीटर चौड़ा होता है। नर यह घोंसला जमीन से मिट्टी खोद कर बनाते हैं। इसका मीट रेड मीट माना जाता है। इसके अण्डे की काफी मांग है, क्योंकि भारत में भी इसकी फार्मिंग का चलन बढ़ रहा है। इसके पंख और चमड़े का उपयोग फैशनेबल बैग, कपड़े आदि बनाने में किया जाता है। हालांकि इसके संरक्षण की आज भी बेहद आवश्यकता है। नर शुतुरमुर्ग आम तौर पर श्यामवर्ण का होता है पर कहीं-कहीं इसके सफेद पंख भी देखे गए हैं। मादा शुतुरमुर्ग और उनके बच्चों का रंग भूरा और सफेद होता है। नर-मादा का सिर लगभग गंजा होता है। शुतुरमुर्ग के पांव में केवल दो ही अंगुलिया होती हैं, जिनमें खुर की तरह के नाखून होते हैं। चोंच चपटी और चौड़ी तथा सिरे पर गोल होती है। ■

**- डॉ. प्रीतम जोशी**

# स्वाद ऐसा, जो हमेशा रहे याद

-शिवनिका

*दीपावली के पारम्परिक त्योहार पर घर में ही तैयार करें लजीज़ मिठाई। खुद भी खाएं और मेहमानों की आवभगत भी करें। स्वास्थ्य को भी कोई खतरा नहीं। डिब्बे में पैक कर अपने प्रियजनों को भी दें दीपावली पर मीठा उपहार।*

## गुजिया

**सामग्री :** 200 ग्राम मैदा, खोया 100 ग्राम, मोयन के लिए शुद्ध घी 60 ग्राम, किशमिश, चिरौंजी, बादाम व पिस्ते बारीक कटे 3 बड़े चम्मच, कद्दूकस किया नारियल 2 बड़े चम्मच, बूरा 3 बड़े चम्मच, छोटी इलायची का चूर्ण 1/4 छोटा चम्मच, गुजिया तलने के लिए घी या रिफाइंड तेल।

**विधि :** एक कड़ाही में खोए को धीमी आंच पर गुलाबी होने तक भुनें। ठंडा करके इनमें सभी मेवे, इलायची चूर्ण, बूरा और नारियल मिलाएं। मैदे में गर्म घी का मोयन डालकर दूध से आटा गूंदे और पंद्रह मिनट के लिए उसे ढककर रख दें। आटे की छोटी-छोटी लोइयां तोड़कर पूरी के आकार में बेलें। भरावन भरकर पानी की मदद से किनारे चिपकाएं। किनारों को मिलाकर सांचे की मदद से गुजिया बना लें। गर्म घी में धीमी आंच पर गुजिया डालकर गुलाबी तल लें।

## बादाम फिरनी

**सामग्री :** 25 ग्राम भूरा चावल धुला, सूखा, 250 मिली दूध मलाई निकाला, 1 छोटा चम्मच इलायची पाउडर, 25 ग्राम बादाम, 5-6 रेशे केसर, 15 ग्राम चीनी।

**विधि :** चावल को मोटा पीस लें। किसी मोटे तले वाले बर्तन में दूध उबलने तक गर्म करें। इसमें चावल, इलायची पाउडर और बादाम डालकर कुछ मिनट पकाएं फिर आंच कम करें। चावल के पकने और दूध गाढ़ा होने तक इसे पकाएं। चावल तले पर न लगे इसलिए इसे लगातार चलाते रहें। केसर के रेशों को क्रश कर इन्हें कुछ चम्मच गर्म दूध में डालें और इसे चावल में मिलाते हुए अच्छी तरह चलाएं। चीनी डालकर कुछ देर दोबारा इसे चलाते हुए पकाएं। पकने पर आंच से उतारें और ठंडा करें। बचे हुए कटे बादाम से सजाकर सर्व करें।



## मेवा मोदक

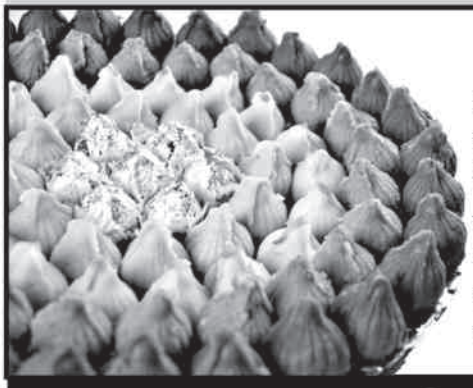

**सामग्री :** 500 ग्राम माावा, 500 ग्राम चीनी, 25 ग्राम घी, 250 ग्राम छुहारे, आधा लीटर दूध, 6 इलायची, 8 बादाम कटे हुए, 1 कप किशमिश, 10 काजू, 5 बूंद गुलाब जल व थोड़ी सी केसर।

**विधि :** आंच पर दूध पका कर आधा कर लें। छुहारे के बीज निकालकर छोटे-छोटे टुकड़े कर लें। उन्हें गरम दूध में डालकर दो घंटे भीगने दें। छुहारे सारा दूध सोख लेंगे। ठण्डे होने पर इन्हें महीन पीस लें। आंच पर कड़ाही में घी गरम करें और पिसा हुआ छुहारा, मावा, बादाम डालकर गुलाबी होने तक भूनें। अब इसमें पिसी इलायची, केसर, किशमिश और गुलाब जल छोड़ दें। चीनी पीसकर इस मिश्रण में मिला दें और गोल-गोल लड्डू बना लें। इन पर काजू सजा कर सर्व करें।

## लौकी की बर्फी

सामग्री : घी 4 छोटी चम्मच, चीनी 250 ग्राम, मावा 250 ग्राम, काजू 7-8 टुकड़े कतरे हुए, इलायची पिसी हुई, पिस्ते एक छोटी चम्मच। विधि : लौकी को छील कर उसका गूदा और बीज निकाल कर उसे कद्दूकस कर लें। अब कढ़ाई में दो चम्मच घी डालकर लौकी डालें और बिना पानी डाले हुए उसे ढक कर धीमी आंच पर रख दें। इसे बीच-बीच में चम्मच से चलाते रहें। लौकी को नरम होने तक पकने दें। अब लौकी में चीनी मिला दें। चीनी मिलाने के बाद लौकी में पानी आ जाता है, इसलिए पानी जलने तक लौकी को आंच पर रखें और बीच-बीच में चम्मच से चलाते रहें ताकि वह कढ़ाई की तली में चिपके नहीं। पकी हुई लौकी में घी डालकर उसे भूनें। भूनी हुई लौकी में मावा और मेवे डालकर उसे चम्मच से चलाते हुए तब तक पकाएं, जब तक कि वह जमने की अवस्था में न आ जाए। इसके लिये उंगलियों से चाशनी को चिपका कर देखिए कि वह उंगलियों से चिपकते हुए जमने सा लगता है। आंच बन्द कर दें और इलाइची पीस कर मिला दें। थाली में जरा सा घी लगाकर चिकना करें। ये मिश्रण थाली में डालकर एकसार करके जमने रख दें। बर्फी के ऊपर कतरे हुए बारीक पिस्ते डाल कर चिपका दें। करीब एक घंटे बाद बर्फी मनपसंद आकार में काट लें। लौकी बर्फी में मावे की जगह दूध भी इस्तेमाल कर सकते हैं।

## हिन्दी देश के माथे की बिन्दी

'प्रत्यूष' का हिन्दी दिवस पर आलेख सारगर्भित और बुनियादी हक़ीकत को बयां करता है। राष्ट्रभाषा, सम्पर्क भाषा और राजभाषा का प्रश्न आजाद भारत की सबसे बड़ी दुविधा है। राजनेताओं ने इसे उलझा दिया है। केन्द्र स्तर पर राजभाषा का पद हिन्दी को मिला, परन्तु अंग्रेजी को भी जारी रखते हुए हिन्दी के पांवों में बेड़ियां भी डाल दी गई। सियासतदां चाहे जो करते रहें, परन्तु जनता हिन्दी को उसका वास्तविक हक़ दिला कर रहेगी।

**किशोर जाम्बानी,** उद्योगपति

## ड्रैगन उल्टे पांव लौटने को हुआ मज़बूर

सितम्बर के अंक में प्रकाशित आलेख 'नहीं डरेगा ड्रैगन से भारत' पढ़ कर राष्ट्रीय गौरव का अहसास हुआ। 1962 के बाद कदाचित यह ड्रैगन को दूसरा करारा जवाब है। चीन तीन माह तक भारत को धमकी दे कर डराता रहा। फिर भी वह लाल सेना की आंख में आंख गड़ाए डोकाला में डटा रहा। इन मज़बूत इरादों को देखकर ड्रैगन उल्टे पांव लौटने पर मजबूर हुआ।

**के.एस. मोगरा,**
उद्योगपति-समाजसेवी

## प्रणबदा की सौम्यता

प्रत्यूष के पिछले अंक में 24 जुलाई को भारत के सर्वोच्च संवैधानिक पद से निवृत्त हुए प्रणव मुखर्जी का विदाई भाषण मन को छू गया। इसे कहते हैं महानता, सौम्यता, शालीनता और राष्ट्रपति पद का गौरव। जिस बड़प्पन के साथ प्रणव दा ने पद छोड़ा, क्या उसी बड़प्पन का निर्वाह उपराष्ट्रपति पद से विदाई लेते हामिद अंसारी नहीं दिखा सकते थे? वे एक दशक से देश के दूसरे सबसे बड़े संवैधानिक पद पर रहे। लेकिन 5 अगस्त को विदाई के दिन ही उन्होंने अल्पसंख्यक वर्ग के साथ भेदभाव की शिकायत कर खुद अपनी गरिमा को कमतर कर दिया। दुनिया जानती है कि भारत सर्वधर्म समावेशी और सहिष्णुता का सबसे अच्छा उदाहरण है।

**डॉ. लक्ष्मी झाला,** चिकित्सक

## पत्रिका का निखरता स्वरूप

सितम्बर अंक में सेन्टर पेज पर नवरात्रि का आलेख अच्छा लगा। राजभाषा हिन्दी, मोदी शरणम् गच्छामि, दुर्लभ होता खरमोर, पाक से बेदखल नवाज़ आलेखों की जानकारी काफी मेहनत से तैयार की गई लगती है। कवर पेज को आकर्षक बनाकर सुधार की जरूरत है। मैं पिछले एक दशक से पत्रिका का पाठक हूँ और मानता हूँ कि पन्द्रह साल तक मासिक पत्रिका का प्रकाशन कम चुनौतीपूर्ण नहीं है। फिर भी आशा करता हूं कि पत्रिका के कलेवर और विषयवस्तु में दिनोंदिन निखार आएगा।

**आशुतोष भट्ट,** एम.डी. (सहकारी उपभोक्ता भण्डार)

शुभ दीपावली

# इस माह आपके सितारे

पं. शोभालाल शर्मा

## मेष

माह का पूर्वार्द्ध विवादों का शमन कर इच्छित फल प्रदान करने वाला है। व्याधियों का शमन होगा, विद्यार्थियों के लिए समय अनुकूल है। पुरुषार्थ करें, भाग्य पूर्ण रूप से आपके पक्ष में है।

## वृषभ

9 अक्टूबर से कार्यक्षमता में वृद्धि होगी, स्थाई सम्पत्ति बढ़ने की सम्भावनाएँ प्रबल हैं। रोजगार के प्रयासरत जातकों को सफलता मिलेगी एवं उच्च अध्ययन कारगर सिद्ध होगा, घर में मांगलिक कार्य संभव, स्वास्थ्य उत्तम एवं सन्तान पक्ष से सुखद समाचार प्राप्त होंगे।

## मिथुन

यह माह सामान्य है। किसी भी कार्य में उतावलापन नुकसान दे सकता है, धैर्य रखें। कार्य क्षेत्र में अधिकारियों व कर्मचारियों से अच्छा समन्वय रहेगा, आय पक्ष मध्यम, विरोधियों से टकराव सम्भव, स्वास्थ्य के प्रति सावधानी बरतें।

## कर्क

विचारों में असमंजसता के चलते निर्णय में काफी समय व्यर्थ होगा। जिससे अकारण परेशानयां बढ़ सकती हैं, नए सम्पर्क बनने से आय पक्ष में वृद्धि होगी, प्रतियोगी परीक्षाओं में प्रतिभागियों को सफलता मिलेगी, स्वास्थ्य सामान्य, साझेदारी में मतभेद और विरोधियों से मेल-मिलाप की संभावनाएं बन सकती हैं।

## सिंह

17 अक्टूबर से आत्मबल में कमी का अनुभव करेंगे, कोई आकस्मिक घटना हतप्रभ कर सकती हैं। दौड़-धूप ज्यादा रहेगी, जिसके दूरगामी किन्तु श्रेष्ठ परिणाम होंगे, माह के पूर्वार्द्ध में नई योजना लाभप्रद होगी, भाग्य साथ देगा, सन्तान पक्ष अनुकूल, दाम्पत्य जीवन उत्तम, स्वास्थ्य में गिरावट से खिन्नता रहेगी।

## कन्या

प्रभावशाली एवं बुद्धिजीवियों से सम्पर्क बनेंगे एवं लाभ भी प्राप्त होगा। मित्रों एवं सहयोगियों का भी अच्छा सहयोग मिलेगा, माह का पूर्वार्द्ध अच्छे देने वाला है, लाभ उठाएं, भाग्य पूर्ण सहयोग करेगा। राजकीय एवं शासकीय मामलों में सफलता प्राप्त होगी, स्वास्थ्य उत्तम, सन्तान पक्ष मध्यम रहेगा।

## तुला

माह मिश्रित फलप्रद है। सन्तान की चिन्ता और अनावश्यक भय बना रहेगा। तीर्थ यात्रा सम्भव है, आध्यत्मिकता की ओर अग्रसर हो सकते हैं। आय पक्ष उत्तम तो सद्कर्म में खर्च भी होगा। कर्म क्षेत्र में कुछ उलझनें आ सकती हैं, राज्य कर्मियों के स्थानान्तरण के योग बनेंगे।

## वृश्चिक

स्वास्थ्य कारणों से परेशान रह सकते हैं। माह का पूर्वार्द्ध कार्य क्षेत्र में नई जिम्मेदारियाँ दे सकता है। व्यवसायिक गतिविधियों में कमी, आय पक्ष उत्तम, सन्तान पक्ष से खिन्नता व भाई-बहनों से वैचारिक मतभेद होंगे। अपने स्वभाव में रूखापन अनुभव करेंगे।

## धनु

11 अक्टूबर से स्वभाव में परिवर्तन महसूस करेंगे, उग्रता के कारण मानसिक तनाव में रह सकते हैं, नई योजनाओं में बाधाएँ आ सकती हैं, शासकीय मामले उलझ सकते हैं परन्तु न्यायिक मामले आपके पक्ष में रहेंगे। स्वास्थ्य सामान्य, जीवन साथी से मधुरता, सन्तान पक्ष से सुखद समाचार।

## मकर

वाहन का सावधानीपूर्वक प्रयोग करें। स्वास्थ्य में गड़बड़ी की सम्भावना। अकारण विवाद उत्पन्न होगा, कार्य क्षेत्र में रूकावटें एवं बाधाएँ। आय पक्ष मज़बूत, भाग्य सामान्य, सन्तान पक्ष से हर्षोल्लास, प्रतियोगी परीक्षाओं के आश्चर्यजनक परिणाम प्राप्त होंगे, अपने सोच-विचार में परिवर्तन लाभदायक सिद्ध होगा।

## कुम्भ

कुछ नया कर पाने की ऊर्जा प्राप्त होगी, व्यवसाय विस्तार के लिए यह माह उपयोगी है। सुझबूझ से कार्य को नया आयाम देंगे, आय पक्ष सुदृढ़ एवं मित्रों एवं सहयोगियों का पूर्ण सहयोग मिलेगा। जीवन साथी के स्वास्थ्य में गड़बड़ी, मांगलिक कार्य के योग बनेंगे।

## मीन

आपके कार्य दूसरों के लिए लाभकारी रहेंगे, न्यायिक मामले आपके पक्ष में रहेंगे, अनियमित दिनचर्या से दुष्परिणाम प्राप्त होंगे, पुरुषार्थ के उपरान्त भी लाभ कम होगा। दाम्पत्य सुख में कमी, लम्बी दूरी की यात्रा सम्भव है। कर्म क्षेत्र में आकस्मिक फेरबदल संभव है।

# PACIFIC UNIVERSITY

20 Years of Excellence | 100 Acre Campus | 500 Faculty | 15,000 Students

**Record Placements in 2016-17**

Placements : 2460

No. Of Companies : 87

Highest Package 6.6 Lakh P.A.






Best Engineering Campus award – 2016 "Awarded by Edu Destination, New Delhi".

Times Education Achievers Award - 2016-17 (Dental, Commerce, Management, Pharmacy, Education)

Workshop on Remote Controlled Aircraft Modelling 2016-17

Consecutive Winner (6times) in Simulated Management Games Contest of AIMA, New Delhi held among top 270 Management Institute of the Country.

Pacificians at yet another milestone by achieving 1st Prize in Audacity - 2017 "Conducted by IIM, Udaipur".

4th place in west zone inter university Hockey Tournament 2015 - 16

## ADMISSION OPEN 2017-18

**ENGINEERING (AICTE Approved)**
**B.Tech.** : Civil / Mechanical / Electrical / ECE / CSE / Mining
**M.Tech.**
Mob. : 766 501 7791

**POLYTECHNIC DIPLOMA (AICTE Approved)**
**Diploma** : Civil / Mechanical / Electrical / Mining / CSE
Mob.: 953 036 0191

**HOTEL MANAGEMENT (AICTE Approved)**
Trade Diploma in Hotel Management
**Diploma:** Diploma in Hotel Management
**B.Sc.** Hotel Management
**Bachelor** of Hotel Management & Catering Technology (BHMCT)
**Master** of Tourism and Hotel Management (MTHM)
Mob.: 967 297 8016

**COMPUTER APPLICATION**
BCA / BCA+MCA / PGDCA
MCA / M.Sc. IT / MCA in 2 Yrs. (Eligibility: BCA with Maths)
Mob.: 958 789 2884

**AGRICULTURE**
**B.Sc.** (Hons.) Agriculture
**M.Sc.** Agriculture
Mob.: 766 501 7854

**EDUCATION & PHYSICAL EDUCATION**
D.El.Ed., B.Ed.,
B.P.Ed., M.P.Ed.
Mob.: 967 297 8055

**MANAGEMENT (AICTE Approved)**
**MBA** (Dual Specialization) | **MBA** (Executive)
**MBA** : Hospital and Healthcare Management
**MBA** (International Business Management)
Mob.: 967 297 8034

**DAIRY TECHNOLOGY & FOOD TECHNOLOGY**
**B.Tech.** Dairy Technology
**B.Tech.** Food Technology
**B.Sc.** Nutrition & Dietetics
**Diploma** Clinical Nutrition & Dietetics
**Certificate** Nutrition & Fitness
Mob.: 967 291 7889

**LAW (BCI Approved)**
L.L.B.
B.A.+L.L.B.
B.Com.+L.L.B.
L.L.M. (1 Yr.)
L.L.M. (2 Yrs.)
Free R.J.S coaching & other tutorial classes
Mob.: 982 985 5566

**YOGA**
**Certificate, Diploma, PG Diploma & M.Sc.** in Yoga
Mob.: 766 501 7752

**GYM TRAINING & MANAGEMENT**
**Certificate, Diploma, PG Diploma** (Personal Trainer & Gym Management)
Mob.: 823 911 0077

**DENTAL (DCI Approved)**
B.D.S., M.D.S.
Mob.: 766 501 7760

**SOCIAL SCIENCES AND HUMANITIES**
**B.A. / B.A.** (Hons.)
(Free Coaching for Competitive Exams like IAS, RAS, RPSC, SSC, BANK, PO, CDS, PSI, CONSTABLE, PATWARI & CLERICAL EXAMS)
**M.A. / M.S.W.**
Mob.: 967 297 0962

**COMMERCE**
**BBA:** Global Business Management
(Free Educational foreign tour every year)
**B.Com.** (Synchronised with competitive exams)
**BBA** (Synchronised with competitive exams)
**B.Com.** (Hons.) (Synchronised with CA / CS)
**M.Com.**
Mob.: 988 726 2020

**MASS COMMUNICATION**
Diploma Journalism and Mass Communication (DJMC)
**BA** (Journalism and Mass Communication)
**MA** (Journalism and Mass Communication)
Mob.: 988 726 2020

**BASIC SCIENCE**
**B.Sc.** (Both Maths & Bio Group)
**B.Sc.** (Hons.) (Physics / Chemistry / Maths / Computer Science / Statistics / Botany / Zoology)
**M.Sc.** (Physics/Chemistry/Maths/Computer Science/Statistics)
Mob.: 766 501 7783

**PHARMACY (PCI Approved)**
**B.Pharma**
**M.Pharma**
Mob.: 766 501 7717

**FIRE AND SAFETY MANAGEMENT**
**B.Sc.:** Fire & Industrial Safety Management
**Diploma:** Fire & Safety Management / Industrial Safety & Disaster Mgmt. / Health Safety & Environment
**PG Diploma:** Industrial Safety Management / Fire & Safety Management / Health, Safety & Environment
Mob.: 967 297 0953

**FASHION TECHNOLOGY**
**Diploma:** Fashion Designing / Jewellery Designing / Textile Designing / Fine Arts & Graphics
**Interior Designing**
Drama / Acting / Graphic Web Designing / Modelling / Animation / Accessory Designing / Event Management / Architecture
B.Sc. & M.Sc.: Fashion Designing / Interior Designing / Jewellery Designing / Textile Designing / Fine Arts & Graphics
**MBA** : Design Management / Fashion Designing / Textile Designing
Mob.: 967 297 8017

**RESEARCH AND DOCTORATE**
**M.Phil. & Ph.D.** (In all the streams listed above)
Mob.: 967 297 8030

**PACIFIC UNIVERSITY** | Pacific Hills, Pratapnagar Extension, Airport Road, Debari, Udaipur - 313024 | Email : info@pacific-university.ac.in Ph : 0294-3065000, 9672970940, 7665017787, 9672927863

www.pacific-university.ac.in

# प्रत्यूष समाचार

## डॉ. अरविन्दर का सोलापुर में सम्मान

**उदयपुर।** अर्थ डायग्नोस्टिक के सीईओ डॉ. अरविंदर सिंह को सोलापुर में सम्पन्न नेशनल कांफ्रेंस में महाराष्ट्र पैथॉलोजिस्ट एसोसिएशन द्वारा सम्मानित किया गया। डॉ. सिंह ने इस अवसर पर अपना व्याख्यान दिया और ऑटोमेटिक मशीन पर रक्त परीक्षण पर विचार व्यक्त किए। डॉ. सिंह ने 3 टू 6 अपग्रेड के बारे में समझाते हुए बताया कि किस प्रकार से रक्त की एक बूंद 30 से अधिक जांचें कर विभिन्न बीमारियों को डायग्नोस किया जाता है।

डॉ. अरविंदर सिंह सम्मान प्राप्त करते हुए।

## डॉ. लोकेश अध्यक्ष

**उदयपुर।** राजस्थान राज्य भारत स्काउट व गाइड उदयपुर संघ की बैठक में द स्कॉलर्स एरिना विद्यालय के प्रशासक डॉ. लोकेश जैन को सर्वसम्मति से कार्यकारिणी समिति का अध्यक्ष चुना गया। सचिव सेम्यूल फ्रांसिस ने बताया कि बैठक में राज्य संगठन आयुक्त गोपाराम माली, सहायक राज्य संगठन आयुक्त मान महेन्द्र सिंह भाटी, सीईओ स्काउट रेखा शर्मा, सहायक जिला कमिश्नर उर्मिला त्रिवेदी, संजय दत्ता, खेल शंकर व्यास आदि भी उपस्थित थे।

## चन्द्रा हुण्डई पर वैश्विक स्तर की कार लॉन्च

**नेक्स्ट जेन वरना कार लॉन्च करती पिंकी माण्डावत, निदेशक अंशुमन सिंह तंवर, के. बी. ठाकुर एवं अन्य।**

उदयपुर। वाहन निर्माता कम्पनी हुंडई मोटर्स इंडिया की स्टाइलिश और ताकतवर, प्रीमियम कार नेक्स्ट जेन वरना की लॉन्चिंग चन्द्रा हुण्डई के निदेशक अंशुमन तंवर की मौजूदगी में हुई। मुख्य अतिथि महिला समृद्धि अरबन कॉ-ऑपरेटिव बैंक उपाध्यक्ष पिंकी माण्डावत थी। जीएम इन्दरपाल सिंह सलूजा ने बताया कि नए मॉडल में बाहरी और आंतरिक साज-सज्जा में काफी बदलाव किए गए हैं। सुरक्षा की दृष्टि से छः एयर बैग्स, सन रुफ, एविएन, क्रूज कन्ट्रोल, इको कोटिंग टेक्नोलॉजी दी गई है। बदलाव के साथ छह रंगों में उपलब्ध कार गतिशीलता, आराम, सुरक्षा और स्टाइल के पहलुओं पर खरी उतरती है। जीएम(सर्विस) अबरार अहमद ने कार की तकनीकी जानकारी दी।

## सोजतिया में नेत्र जांच

**उदयपुर।** सोजतिया कॉम्पिटशन क्लासेज एवं एएसजी नेत्र चिकित्सालय के संयुक्त तत्वावधान में पिछले दिनों सेक्टर-3 स्थित क्लासेज परिसर में नि:शुल्क नेत्र रोग जांच शिविर का आयोजन हुआ। उद्घाटन सोजतिया ग्रुप के फाउण्डर प्रो. रणजीत सिंह सोजतिया ने किया। निदेशक डॉ. महेन्द्र सोजतिया ने बताया कि बालकों के सर्वांगीण विकास के लिए शिक्षा के साथ-साथ उनका स्वस्थ रहना भी जरूरी है और सोजतिया क्लासेज समय-समय पर ऐसे शिविरों का आयोजन करता रहा है। डॉ. मंजू गांग व डॉ. अनिता सोजतिया ने भी विद्यार्थियों को सम्बोधित किया।

## सचान व्यावसायिक प्रकोष्ठ के सहसंयोजक

**उदयपुर।** भारतीय जनता पार्टी के प्रदेशाध्यक्ष अशोक परनामी के निर्देशानुसार भाजपा व्यावसायिक प्रकोष्ठ के प्रदेश संयोजक दुर्गाराम चौधरी ने व्यावसायिक प्रकोष्ठ के प्रदेश संयोजक दुर्गाराम चौधरी ने व्यावसयिक प्रकोष्ठ की प्रदेश कार्यकारिणी की घोषणा करते हुए केएस माइक्रोकेम के निदेशक धीरेन्द्र सिंह सचान को व्यावसायिक प्रकोष्ठ का प्रदेश सह संयोजक बनाया है। सचान को उद्योग जगत से जुड़े अनेक लोगों ने बधाई। सचान ने कहा कि जो जिम्मदारी उन्हें दी गयी है उसे पूरी ईमानदारी से निभाते हुए उद्योगों में जो भी समस्याएं आती है। उनके निवारण के लिए प्रयास करेंगे।

'क्षत्रिय रत्न' सम्मान समारोह

# समाज की नामचीन हस्तियां सम्मानित

**उदयपुर।** मेवाड़ क्षत्रिय महासभा संस्थान का प्रथम 'क्षत्रिय रत्न' सम्मान समारोह 9 सितम्बर को प्रात: मीरा मेदपाट भवन चित्रकूट नगर में हुआ। कार्यक्रम में समाज के राजनीतिक, सामाजिक, प्रशासनिक क्षेत्र में अनुकरणीय योगदान वालों को समान रत्न से नवाजा गया। महासभा के अध्यक्ष बालूसिंह कानावत ने बताया कि कार्यक्रम के मुख्य अतिथि राजस्थान हाईकोर्ट के न्यायाधीश रामचंद्र सिंह झाला थे। कार्यक्रम में झाला का अभिनन्दन किया गया। समारोह में क्षत्रिय रत्न सम्मान पूर्व विधायक श्रीमती श्यामा कुमारी सेंगर, विधायक रणधीर सिंह भीण्डर, कांग्रेस जिलाध्यक्ष लालसिंह झाला, भूपाल नोबल्स संस्थान के पूर्व निदेशक तेजसिंह बांसी, सेवानिवृत्त लेफ्टिनेंट जनरल एन के सिंह, डॉ. भोपाल सिंह चुंडावत, शिक्षाविद् डॉ. औंकार सिंह राठौड़, भारत सिंह सिसोदिया व सज्जन सिंह राणावत को शॉल व प्रशस्ति पत्र के साथ प्रदान किया गया। कार्यक्रम में पूर्व मंत्री मांगीलाल गरासिया व क्षत्रिय समाज के स्त्री-पुरुष बड़ी संख्या में मौजूद थे। महंत प्रयागगिरी महाराज ने छात्रावास की बालिकाओं को श्रीमद्भगवद् गीता की प्रतियां भेंट की।

न्यायाधीश रामचंद सिंह झाला को क्षत्रिय रत्न सम्मान प्रदान करते हुए महासभा के अध्यक्ष बालू सिंह कानावत व मनोहर सिंह कृष्णावत।

## सुहालका भवन में वृक्षारोपण

**उदयपुर।** सुहालका संगिनी महिला मण्डल ने पिछले दिनों सेक्टर 14 स्थित सुहालका भवन में वृक्षारोपण किया। अध्यक्ष लक्ष्मी सुहालका ने कार्यकारिणी सदस्यों से अधिक से अधिक संख्या में पेड़ लगाने का आव्हान किया। कार्यक्रम में डॉ. सुनिता सुहालका, नीलू सुहालका, अनुराधा सुहालका, चन्दा सुहालका व अन्य सदस्याएं उपस्थित थीं।

## चैम्पियन सैलून एण्ड अकेडमी का शुभारंभ

**उदयपुर।** सेलिब्रेशन मॉल ने चैम्पियन सैलून एण्ड अकेडमी का शुभारंभ मांगीलाल-भंवरीदेवी सेन ने किया। सैलून के निदेशक दुर्गेश सेन, कमलेश सेन तथा जमनेश सेन ने बताया कि यह एक फेमेली सैलून है, जहां हेयर कट, हेयर डिजाइनर, कलर हेयर ट्रीटमेन्ट किया जाएगा। साथ ही स्क्रीन ट्रीटमेन्ट भी होगा जिसमें सौंदर्यता और स्कीन से जुड़ी समस्याओं का निवारण होगा। इसके अलावा सेलून में टेटू, नेल आर्ट, बॉडी स्पा, हेयर एक्सटेंशन की सुविधाएं भी प्रदान की जायेंगी। सैलून के साथ यहां अकेडमी की भी शुरूआत की जा रही है। यहां कम फीस में इंटरनेशनल एज्यूकेशन के साथ ही इंटरनेशनल हेयर एण्ड ब्यूटी प्रतियोगिता का कोर्स किया जा सकेगा।

# प्रदेश का दूसरा हीरो श्योर आउटलेट

**उदयपुर।** हीरो मोटोकॉर्प के प्रदेश के दूसरे हीरो श्योर आउटलेट का शुभारंभ गुमानियावाला नाला स्थित रॉयल मोटर्स पर कंपनी के जोनल मैनेजर राहुल शिवानी, कुमार राजीव व क्षेत्रीय प्रबंधक नीरज तिवारी ने किया। कंपनी के क्षेत्रीय अधिकारी रोहित अवस्थी ने बताया कि आउटलेट को खोलने का मुख्य उद्देश्य सैकण्ड हैंड टू-व्हीलर्स का बाजार संगठित कर विक्रेताओं और खरीदारों को अपने वाहन की पारदर्शी तरीके से उचित मूल्य व सही एक्सचेंज वेल्यू दिलाना है। रॉयल मोटर्स के शेख शब्बीर मुस्तफा ने बताया कि पूर्व में हीरो कंपनी द्वारा वर्ष में दो या तीन बार एक्सचेंज स्कीम निकाली जाती थी लेकिन अब कंपनी द्वारा स्थापित यह प्लेटफॉर्म 365 दिन काम करेगा। समारोह में कंपनी के टेरिटरी मैनेजर अभिषेक जैन, मनामा मोटर्स के हुसैन मुस्तफा एवं वीएसएस हीरो के सतपालसिंह भी मौजूद थे।

# डीपीएस तैराकी में चैम्पियन

शुभ दीपावली

**उदयपुर।** माध्यमिक एवं उच्च माध्यमिक विद्यालयों की जला स्तरीय तैराकी प्रतियोगिता में मेजबान दिल्ली पब्लिक स्कूल ने सर्वाधिक पदक जीत कर जनरल चैम्पियनशिप जीती। एमएमपीएस ने उपविजेता का खिताब जीता। मुख्य अतिथि उपनिदेशक माध्यमिक शिक्षा भरत मेहता ने विजेताओं को पुरस्कृत किया। खेलगांव स्थित तरणताल में हुई प्रतियोगिता में डीपीएस की गौरवी सिंघवी, सौम्या शर्मा, भानुश्री चुण्डावत, कनुप्रिया सिंह, रितांक खण्डेलवाल, रितांश खण्डेलवाल व राघव खण्डेलवाल ने स्वर्ण पदक जीते।

# बालगृह के बालकों को स्वर्ण पदक

संस्थान अध्यक्ष प्रशांत अग्रवाल के साथ पदक विजेता बालक।

**उदयपुर।** 62वीं जिलास्तरीय माध्यमिक एवं उच्च माध्यमिक छात्र खेलकूद प्रतियोगिता राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय, मटून में गत दिनों सम्पन्न हुई। नारायण सेवा संस्थान द्वारा संचालित भगवान महावीर निराश्रित बालगृह के छात्र रतन सिंह ने जिम्नास्टिक वाल्टिंग टेबल, पेरेललबार व व्यक्तिगत स्पर्द्धा( 19 वर्ष) में तीन स्वर्ण पदक प्राप्त किए। बालगृह के ही श्रवण गमार ने जिम्नास्टिक( 17 वर्ष ) में द्वितीय और ऑल राउण्ड प्रदर्शन में तृतीय स्थान प्राप्त किया। कृष्णा मीणा ने जिम्नास्टिक-पोमल में तथा अभियाराम ने जिम्नास्टिक - वाल्टिंग टेबल में तृतीय स्थान हासिल किया।

# जिनेन्द्र चेयरमैन व मीरा वाइस चेयरमैन निर्वाचित

**पाली।** पाली अरबन को-ऑपरेटिव बैंक के चेयरमैन व वाइस चेयरमैन का फैसला पर्ची से हुआ। चेयरमैन पद के दावेदार भाजपा जिला कोषाध्यक्ष सोहनलाल कवाड़ व पूर्व सांसद पुष्प जैन के भाई जिनेन्द्र जैन को 6-6 मत मिले। उपाध्यक्ष पद पर कवाड़ पैनल के दामोदर शर्मा व जिनेन्द्र पैनल की मीरा गुप्ता को भी इतने ही वोट मिले। पर्ची से जिनेन्द्र जैन चेयरमैन व मीरा गुप्ता वाइस चेयरमैन निर्वाचित घोषित किए गए। अध्यक्ष पद के लिए कवाड़ व जैन को तथा उपाध्यक्ष के लिए शर्मा व मीरा गुप्ता को 6-6 वोट मिले। इस पर निर्वाचन अधिकारी राजेन्द्र प्रसाद ओझा ने दोनों पदों की निर्वाचन प्रक्रिया डाल कर करवाई।

# बुजुर्गों की सेवा चार धाम जैसी : गालव

**उदयपुर।** तारा संस्थान, उदयपुर के आनंद वृद्धाश्रम में बुजुर्गों व जन समूह को सम्बोधित करते हुए राजस्थान वरिष्ठ नागरिक बोर्ड के कार्यकारी अध्यक्ष प्रेम नारायण गालव ने कहा कि बुजुर्गों की सेवा चार धाम की यात्रा जैसी है। बुजुर्गों के अनुभव का लाभ भी लिया जाना चाहिए। कार्यक्रम में समाज कल्याण विभाग, उदयपुर के उपनिदेशक गिरीश भटनागर एवं अधिकारी के. के. चंद्रवंशी भी उपस्थित थे। संस्थान अध्यक्षा कल्पना गोयल ने बताया कि आनंद वृद्धाश्रम में न केवल वृद्धों की सुविधा का ध्यान रखा जाता है अपितु उनके सम्मान और भावनाओं को कभी कोई ठेस ना पहुंचे यह भी संस्थान का मूल ध्येय है। संस्थान सचिव दिपेश मित्तल ने अतिथियों का वृद्धाश्रम में निवासरत वृद्धों से परिचय करवाया।

शुभ दीपावली

# टू-व्हीलर चलाने का दिया प्रशिक्षण

**उदयपुर।** होण्डा मोटरसाइकिल एवं स्कूटर इंडिया की ओर से बलीचा स्थित इण्डो अमेरिकन इंस्टीट्यूट में आयोजित तीन दिवसीय सड़क सुरक्षा कार्यक्रम का समापन 11 सितम्बर को हुआ। शुभारंभ होण्डा कम्पनी के प्रमुख यू होसूकावा, नवनीत कौशल कॉलेज के प्राचार्य आदेश भटनागर ने किया। लेकसिटी होण्डा के एमडी वरूण मुर्डिया ने बताया कि कम्पनी के ट्रेनर संदीप गुप्ता व नमिता कालरा ने बालिकाओं व महिलाओं को दुपहिया वाहन चलाने का प्रशिक्षण दिया।

## पगारिया अध्यक्ष, खोखावत मंत्री

**उदयपुर।** जैन सोशल ग्रुप इंटरनेशनल फैडरेशन ने गत दिनों जैन सोशल ग्रुप 'अर्हम' का गठन किया। प्रथम परिचय सम्मेलन बड़ी रोड स्थित रिसोर्ट में हुआ। जोन कोर्डिनेटर मोहन बोहरा ने जेएसजी फैडरेशन की जानकारी दी। नॉर्थ रिजन जनसम्पर्क अधिकारी आर सी मेहता ने कार्यकारिणी की घोषणा की। संस्थापक अध्यक्ष आलोक पगारिया, संस्थापक मंत्री अर्जुन खोखावत, उपाध्यक्ष राज सुराणा, कोषाध्यक्ष भगवती सुराणा, सहमंत्री विमल डागलिया को सम्मानित किया।

आलोक पगारिया

अर्जुन खोखावत

## ब्लू व्हेल गेम से बचाव का वीडियो

**उदयपुर।** ब्लू व्हेल गेम से बचाव हेतु जागरूकता के लिए एम स्क्वायर प्रोडक्शन चार वीडियो यूट्यूब पर लांच करेगा। जिसकी शूटिंग शुरू हो चुकी है। वीडियो निर्देशक कुणाल चुघ व प्रोडक्शन के मुकेश माधवानी ने बताया कि वीडियो में डॉ. स्वीटी छाबड़ा, खुशी छाबड़ा एवं अरविन्दर सिंह मुख्य भूमिका निभाएंगे।

## भुवनेश्वर में इंदिरा आईवीएफ का 27वां सेंटर

**उदयपुर।** फर्टिलिटी चेन इंदिरा आईवीएफ हॉस्पिटल प्राइवेट लिमिटेड ने हैदराबाद में 25वें, मुजफ्फरपुर में 26वें और भुवनेश्वर में 27वें सेंटर की पिछले दिनों शुरुआत की। इन सेंटरों पर अत्याधुनिक तकनीकी से नि:संतान दम्पतियों का एक्सपर्ट डॉक्टर्स की टीम उपचार करेगी। भुवनेश्वर में बरगढ़ संसदीय क्षेत्र के सांसद प्रभास कुमार सिंह ने सेन्टर का उद्घाटन किया। ग्रुप के चेयरमैन डॉ. अजय मुर्डिया ने कहा कि नि:संतानता का इलाज संभव है।

ग्रुप के मेडिकल डायरेक्टर डॉ. क्षितिज ने कहा कि टेस्ट ट्यूब जैसी आधुनिक तकनीकों ने नि:संतान दंपतियों के जीवन में उम्मीद की किरण जगा दी है। सेंटर के आईवीएफ विशेषज्ञ डॉ. ए. के. महापात्रा ने बताया कि आईवीएफ तकनीक से पूरी दुनिया में 50 लाख से अधिक संतानें जन्म ले चुकी हैं। डॉ. सस्मिता नायक ने भी विचार व्यक्त किए। कार्यक्रम में ग्रुप के लैब डायरेक्टर नितिज मुर्डिया, फाइनेन्स डायरेक्टर आशीष लोढ़ा भी मौजूद थे।

भुवनेश्वर में 27वें सेंटर का उद्घाटन करते बरगढ़ के सांसद प्रभास कुमार सिंह साथ में डायरेक्टर क्षितिज मुर्डिया व अन्य।

## विष्णु प्रजापत सचिव मनोनीत

**उदयपुर।** मेवाड़ा प्रजापत समाज सेवा संस्थान की बैठक कैलाशपुरी में हुई। अध्यक्ष रोशनलाल कुम्हार ने कार्यकारिणी की घोषणा की। अशोक प्रजापत नाथद्वारा उपाध्यक्ष, विष्णु प्रजापत उदयपुर सचिव, जगदीश प्रजापत लोयरा कोषाध्यक्ष, शंकर प्रजापत खेरोदा महासचिव व सुरेश प्रजापत सहकोषाध्यक्ष के मनोनीत हुए।

## बच्चों का वन भ्रमण

**उदयपुर।** बच्चे फूलों की भाषा बोलते हैं और हवा की सरसराहट से उसे समझते भी हैं। यह बात द यूनिवर्सल सीनियर सैकण्डरी स्कूल के बच्चों के वनभ्रमण के दौरान प्राचार्या मोनिका सिंघटवाड़िया ने कही।

# इंटक की मजबूती का आह्वान

शुभ दीपावली

**उदयपुर।** राजस्थान टेक्सटाइल वर्क्स फेडरेशन एवं हिन्दुस्तान जिंक वर्कर्स फेडरेशन(इंटक) की गत दिनों देबारी स्थित जिंक स्मेल्टर मजदूर संघ कार्यालय में बैठक हुई। मुख्य अतिथि यू. एम. शंकरदास थे। अध्यक्षता गौतमलाल मीणा ने की। फेडरेशन अध्यक्ष गौतम मीणा ने आव्हान किया कि टेक्सटाइल श्रमिक अपने-अपने संस्थानों में इंटक संगठनों को मजबूत करते हुए हक की लड़ाई में भागीदार बनें। मुख्य अतिथि यू. एम. शंकरदास ने कार्यकर्ताओं को सच्चे मन से श्रमिकों की समर्पण भावना से सेवा करने का आव्हान किया। बैठक में इंटक नेताओं ने मजदूरों के न्यूनतम वेतन और सुविधाओं के बारे में विस्तार से चर्चा की। राष्ट्रीय यूथ इंटक सचिव पद पर शमीम कुरैशी व संयुक्त सचिव पद पर जय कुमार और भानुप्रताप सिंह की नियुक्ति पर इंटक नेताओं ने हर्ष जताया। कल्याण सिंह, घनश्याम सिंह राणावत, प्रकाश श्रीमाल, मांगीलाल अहीर, छोटूसिंह पुरावत, जिला प्रवक्ता अशोक तम्बोली, एम. रफीक आलम, पंकज शर्मा आदि मौजूद थे।

## प्रदेश महिला कांग्रेस कार्यकारिणी संभाग से चार बनीं उपाध्यक्ष

शांता प्रिंस

सीमा पंचोली

रतन देवी भराड़ा

शारदा रोत

**उदयपुर।** प्रदेश महिला कांग्रेस की अध्यक्ष रेहाना रियाज ने हाल ही प्रदेश कार्यकारिणी की घोषणा की। जिसमें उदयपुर संभाग से चार महिलाओं को प्रदेश कार्यकारिणी में बतौर उपाध्यक्ष मनोनीत किया गया है। बीते तीन साल से उपाध्यक्ष पद संभाल रही शांता प्रिंस को फिर से इस पद की जिम्मेदारी सौंपी गई है। इसके अलावा पूर्व महिला शहर जिलाध्यक्ष सीमा पंचोली और पूर्व जिला परिषद् सदस्य शारदा रोत तथा डूंगरपुर की पूर्व जिला प्रमुख रतन देवी भराड़ा को भी उपाध्यक्ष बनाया गया है। प्रदेश कार्यसमिति में प्रदेश महिला कांग्रेस की पूर्व अध्यक्ष डॉ. गिरिजा व्यास सहित सभी पूर्व अध्यक्षों को कार्यसमिति में सदस्य बनाया गया है। महासचिव के रूप में मेवाड़ ऑयल से भीलवाड़ा की इन्दिरा सोनी को मनोनीत किया गया है, जो भीलवाड़ा नागरिक सहकारी बैंक की डायरेक्टर है।

इन्दिरा सोनी

## सावनसुखा का अभिनन्दन

समाजसेवी किरणमल सावनसुखा का अभिनन्दन करते डॉ. यशवन्त कोठारी, मोहनराज, राजमल, अरूण कोठारी, इकबाल सागर एवं अन्य।

**उदयपुर।** उदयपुर सिटीजन फोरम की ओर से पिछले दिनों वयोवृद्ध समाजसेवी किरणमल सावनसुखा का कुंभा सभागार में अभिनन्दन किया गया। समारोह के मुख्य अतिथि महाराणा प्रताप कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. उमाशंकर शर्मा, विशिष्ट अतिथि रोटरी के पूर्व गवर्नर रमेश चौधरी, एसएस कॉलेज ऑफ इंजीनियरिंग के चेयरमैन मोहनराज सिंघवी व डॉ. प्रेम भंडारी थे।

अध्यक्षता डॉ. बी. पी. भटनागर ने की। फोरम के अध्यक्ष डॉ. यशवंत कोठारी ने रेल मंत्रालय से मांग की कि राणा प्रतापनगर रेलवे स्टेशन का नाम महाराणा प्रताप नगर रेलवे स्टेशन किया जाए। संचालन महासचिव सुशील दशोरा ने किया। कार्यक्रम में एडवोकेट फतहलाल नागोरी, राजमल मेहता, प्रकाश तातेड़, के. पी. तलेसरा, एच. एल. कुणावत, अरूण कोठारी सहित बड़ी संख्या में गणमान्य उपस्थित थे।

## परिणय पुस्तिका का विमोचन

**उदयपुर।** जेएसजी लेकसिटी चेरिटेबल ट्रस्ट के आर. सी. मेहता के संपादन में जैन युवक-युवती परिचय निर्देशिका का विमोचन चौगान मन्दिर में हुआ। मुख्य अतिथि यूसीसीआई के पूर्व अध्यक्ष के. एस. मोगरा, विशिष्ठ अतिथि जेएसजी नार्थ रिजन के कोर्डिनेटर मोहन बोहरा, तेजसिंह बोल्या, बी.एस. नाहर, पारस सिंघवी, हिम्मतसिंह मेहता थे। मोगरा ने कहा कि जैन समाज के युवक-युवतियों के गैर समाज में हो रहे विवाह तथा विवाह पश्चात् बढ़ रहे तलाक के मामले समाज के लिये चिंता का विषय हैं। इसमें कहीं न कहीं हमारे संस्कारों में कमी दिखाई देती है। उन्होंने घोषणा की कि उपरोक्त दोनों बातों पर शोध करने वाले विद्यार्थियों को उनकी ओर से एक लाख रुपए दिए जाएंगे। समाजसेवी किरणमल सावनसुखा ने समाज में शिक्षा एवं स्वास्थ्य के लिए 5 करोड़ का फंड बनाने की पेशकश की, ताकि समाज के निर्धन लोगों की मदद की जा सके।

पुस्तिका का विमोचन करते के. एस. मोगरा, मोहन बोहरा, बी. एस. नाहर, पारस सिंघवी, हिम्मत सिंह मेहता एवं अन्य।

# जायसवाल महिला सभा ने ली शपथ

**उदयपुर।** राजस्थान प्रान्तीय जायसवाल सर्ववर्गीय महिला महासभा का शपथ ग्रहण समारोह पिछले दिनों सुहालका भवन में हुआ। मुख्य अतिथि अनिवासी भारतीय महिला महासभा की राष्ट्रीय अध्यक्ष सरला गुप्ता, राष्ट्रीय संरक्षक बालेश्वरदयाल जायसवाल, राष्ट्रीय अध्यक्ष पन्नालाल जायसवाल, विशिष्ट अतिथि राष्ट्रीय अध्यक्ष निर्वाचित किशोर हेमराज जायसवाल, प्रान्तीय अध्यक्ष कैलाश चौधरी थे। जबकि अध्यक्षता सर्ववर्गीय कलाल संगिनी की संरक्षक चन्द्रकला चौधरी ने की। महिला संगठन की राष्ट्रीय अध्यक्ष सरला गुप्ता ने नवनिर्वाचित अध्यक्ष मनीषा सुहालका, शर्मिला बसेर, गायत्री चौधरी, रागिनी सुहालका, नम्रता चौधरी, रेणु चौधरी, वंदना मेवाड़ा, सपना गुप्ता सहित कोटा, जयपुर, जोधपुर एवं उदयपुर संभाग की 40 से अधिक महिलाओं को पद एवं गोपनीयता की शपथ दिलाई। समारोह में सरला गुप्ता ने कहा कि समाज को एकसूत्र में पिरोने का कार्य महिलाओं के लिए नवीन रोजगार सृजन के तहत सिलाई केन्द्र की स्थापना, गृह उद्योग खोलने और निर्धन बालिकाओं की शिक्षा में मदद के माध्यम से किया जाएगा।

शपथ ग्रहण करती मनीषा सुहालका, शर्मिला बसेर, रागिनी चौधरी, रेणु चौधरी एवं अन्य।

# वृद्धाश्रम का अवलोकन

**उदयपुर।** तारा संस्थान संचालित तारा नेत्रालय और वृद्धाश्रम का अवलोकन आरएसएस के राजस्थान क्षेत्र सेवा प्रमुख शिवलहरी ने किया। अध्यक्ष कल्पना गोयल ने संस्थान गतिविधियों की जानकारी दी। सीईओ दीपेश, एचआर विजय सिंह व समन्वयक राजेश जैन ने चित्तौड़ प्रांत कार्यालय मंत्री गोपाल कनेरिया, उदयपुर विभाग सेवा प्रमुख नाहर सिंह तंवर व दीपक तम्बोली का सम्मान किया।

क्षेत्र सेवा प्रमुख शिवलहरी के साथ कल्पना गोयल, विजय सिंह एवं दीपेश मित्तल।

# जिला क्रिकेट एसोसिएशन चुनाव : मनोज अध्यक्ष, महेन्द्र सचिव

**उदयपुर।** जिला क्रिकेट एसोसिएशन के 16 सितम्बर को हुए चुनाव में मनोज भटनागर अध्यक्ष निर्वाचित किए गए। वहीं सचिव पद पर महेन्द्र शर्मा, डिप्टी प्रेसिडेंट विवेकभानसिंह राणावत, वाइस प्रेसिडेंट अनीस इकबाल, कोषाध्यक्ष महिपाल सिंह, संयुक्त सचिव मो. शाहिद एवं पीआरओ पद पर आर. चन्द्रा निर्वाचित हुए। चुनाव बाद हुई वर्किंग कमेटी की बैठक में पूर्व यूडीसीए अध्यक्ष लक्ष्यराज सिंह मेवाड़ को सर्वसम्मति से एसोसिएशन का चेयरपर्सन बनाया गया।

# पेसिफिक में सिंगल डोनर प्लेटलेट्स मशीन का उद्घाटन

**उदयपुर।** पेसिफिक अस्पताल भीलों का बेदला में अब डेंगू के मरीजों को सिंगल डोनर प्लेटलेट्स की सुविधा मिलेगी। पेसिफिक मेडिकल कॉलेज एवं हॉस्पीटल के चेयरमैन राहुल अग्रवाल ने ब्लड बैंक में सिंगल डोनर प्लेटलेट्स मशीन का उद्घाटन किया। इस अवसर पर डॉ. एम. जी. वार्ष्णेय, शंकर सुखवाल आदि उपस्थित रहे। इस दौरान ब्लड बैंक के 55 वर्षीय अनिल सहदेव ने सिंगल डोनर प्लेटलेट्स देकर एक मरीज की जान बचाई।

मशीन के उद्घाटन अवसर पर उपस्थित चेयरमैन राहुल अग्रवाल एवं ब्लड डोनेट करते अनिल सहदेव।

# शोक समाचार

## वरिष्ठ कांग्रेस नेता नागदा का निधन

**उदयपुर।** कांग्रेस के वरिष्ठ नेता **श्री रोशनलाल जी नागदा** (86) का 17 सितम्बर 2017 को उनके सीसारमा स्थित आवास पर देहावसान हो गया।

मेवाड़ में कांग्रेस को मज़बूत बनाने के लिए उन्होंने मोहनलाल सुखाड़िया, हनुमान प्रभाकर, हीरालाल देवपुरा, गुलाब सिंह शक्तावत आदि के साथ कंधा से कंधा मिलाकर काम किया। वे जिला कांग्रेस के अध्यक्ष, प्रदेश कांग्रेस सचिव, गिर्वा पंचायत समिति के प्रधान, कृषि उपज मंडी के प्रथम निर्वाचित अध्यक्ष, अपेक्स बैंक राजस्थान के निदेशक एवं राजस्थान रोडवेज के भी निदेशक रहे। उनका अन्तिम संस्कार 18 सितम्बर को सीसारमा में किया गया। उनके निधन पर प्रदेश के पूर्व मुख्यमंत्री अशोक गहलोत, प्रदेश अध्यक्ष सचिन पायलट, गृहमंत्री गुलाब चंद कटारिया, श्रीमती किरण माहेश्वरी, पूर्व केन्द्रीय मंत्री डॉ. सी. पी. जोशी, डॉ. गिरिजा व्यास, पूर्व सांसद रघुवीर मीणा सहित विभिन्न राजनैतिक संगठनों के नेताओं व पदाधिकारियों ने शोक व्यक्त किया है। नागदा अपने पीछे व्यथित हृदय धर्मपत्नी श्रीमती चन्द्रा देवी, पुत्र रमेश कुमार, देवेन्द्र व चितरंजन नागदा, पुत्रियां विजया व शीला नागदा तथा पौत्र-पौत्रियों व दोहित्र-दोहित्रियों का समृद्ध परिवार छोड़ गए हैं।

**उदयपुर। महाराज श्री पृथ्वीसिंह जी शिवरती** का आकस्मिक स्वर्गवास 20 अगस्त 2017 को हो गया। वे अपने पीछे व्यथित हृदय पुत्र हरीशचन्द्र सिंह, दिलीप सिंह व पुत्री सुधा कुमारी सहित सम्पन्न एवं भरापूरा परिवार छोड़ गए हैं।

**उदयपुर।** श्री वर्धमान स्थानकवासी जैन श्रावक संघ एवं श्री अम्बा गुरु शोध संस्थान, उदयपुर के अध्यक्ष-समाजसेवी **श्री अम्बालाल जी नवलखा** (भूताला वाला) का 25 अगस्त 2017 को देवलोकगमन हो गया। वे अपने पीछे शोकाकुल पुत्र नरेन्द्र कुमार, धर्मेश एवं प्रवीण नवलखा, पुत्रियां सुमित्रा वदाया व मीना तलेसरा तथा पौत्र-पौत्रियों व दोहित्र-दोहित्रियों तथा भाई-भतीजों का भरापूरा परिवार छोड़ गए हैं।

**उदयपुर।** स्व. प्रताप सिंह जी बाबरवाल (कुमावत) की धर्मपत्नी **श्रीमती नर्बदा देवी जी** का दिनांक 20.8.17 को देहावसान हो गया। वे अपने पीछे पुत्र भवानी सिंह, राजेन्द्र सिंह व मदन सिंह (अतिरिक्त संगठन मंत्री, सेवादल) तथा पुत्र संगीता सहित भरापूरा परिवार छोड़ गई हैं।

**उदयपुर। ठाकुर उदयसिंह जी चूण्डावत** (95) का 6 सितम्बर 2017 को ठिकाना ब्यावर में देवलोकगमन हो गया। वे अपने पीछे पुत्र भगवत सिंह, भूपेन्द्र सिंह, भोपाल सिंह व डॉ. अर्जुन सिहं (पूर्व प्रधान भदेसर) तथा उनका समृद्ध व सम्पन्न परिवार छोड़ गए हैं। पौत्र कृष्णपाल सिंह चूण्डावत ने बताया कि दादोसा आजीवन परोपकार एवं धार्मिक कार्यों में प्रवृत्त रहे। उनके निधन पर पूर्व मुख्यमंत्री अशोक गहलोत, प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष सचिन पायलट, न्यायमूर्ति रामचन्द्र सिंह झाला, पूर्व सांसद डॉ. गिरिजा व्यास, उदयलाल आंजना, उदयपुर देहात कांग्रेस जिला अध्यक्ष लालसिंह झाला, राजसमन्द के पूर्व जिलाध्यक्ष शिवदयाल शर्मा, उदयपुर शहर जिलाध्यक्ष गोपाल शर्मा, प्रदेश सचिव पंकज कुमार शर्मा, पूर्व मंत्री नरपत सिंह राजवी सहित अनेक नेताओं ने शोक व्यक्त किया है।

**उदयपुर।** आबकारी विभाग, उदयपुर के पेट्रोलिंग ऑफिसर एवं **कवि श्री चावण्ड सिंह जी विद्रोही (राणावत)** ठिकाना सिरोही का 30 अगस्त, 2017 को आकस्मिक निधन हो गया। वे अपने पीछे शोकाकुल पत्नी श्रीमती दुर्गा कंवर, पुत्र हेमेन्द्र सिंह राणावत, पुत्री संध्या कुंवर सहित भरापूरा परिवार छोड़ गए हैं। उनके निधन पर साहित्यिक संस्थाओं ने गहरा दुःख प्रकट किया है। 'प्रत्यूष' कार्यालय में भी उन्हें श्रद्धासुमन अर्पित किए गए।

**उदयपुर।** विश्व हिन्दू परिषद्, उदयपुर के पूर्व अध्यक्ष-संरक्षक एवं समाजसेवी **श्री राजनाथ जी सिंघल** का 31 अगस्त, 2017 को निधन हो गया।

उनके निधन पर विभिन्न राजनैतिक दलों, सामाजिक संस्थाओं, अग्रवाल समाज आदि ने गहरा शोक प्रकट किया है। वे अपने पीछे शोकाकुल पुत्र वीरेश सिंघल, पुत्रियां श्रीमती वीना व श्रीमती आशा सहित पौत्र-पौत्रियों व दोहित्र-दोहित्रियों का सम्पन्न एवं समृद्ध परिवार छोड़ गए हैं।

**उदयपुर।** स्व. श्री मीट्ठालाल जी भटेवरा (लसानी) की धर्मपत्नी **श्रीमती नजर बाई** का 5 सितम्बर, 2017 को आकस्मिक देहावसान हो गया। वे अपने पीछे पुत्र बाबूलाल, उत्तमचंद, कुन्दन व मनोहर भटेवरा तथा पुत्री श्रीमती पिस्ता भंडारी सहित पौत्र-पौत्रियों व दोहित्र-दोहित्रियों का सम्पन्न परिवार छोड़ गई हैं।

**उदयपुर।** स्व. श्री रामचंद्र जी मंत्री की धर्मपत्नी **श्रीमती हगाम बाई** का 20 अगस्त, 2017 को देहावसान हो गया। वे अपने पीछे शोकाकुल पुत्र राधेश्याम, राजेन्द्र कुमार व सत्यनारायण पुत्रियां कमल लड्ढा, ललिता माहेश्वरी व निर्मला सोमानी तथा पौत्र-पौत्रियों व दोहित्र-दोहित्रियों का समृद्ध परिवार छोड़ गई हैं।

TMTL

# समझौता क्यों ?

## आज ही सबसे बढ़िया जेनरेटर लायें !!

*T&C Apply

5 to 125 kVA Genset

फाइनेंस सुविधा उपलब्ध

5 Years* WARRANTY

अधिकृत विक्रेता : सुभाष मोटर्स

C/o सचिन मोर्ट प्रा. लि., 46, ए, पंचवटी उदयपुर

डिविजनल कमीश्नर ऑफिस के सामने, उदयपुर मो नं. 94141 57508

A Product of अर्चना Panch 5 mani Fragrance

अर्चना एक्टिव डिटर्जेन्ट वॉशिंग पाउडर

कपड़े रहे एक्टिव अर्चना एक्टिव डिटर्जेन्ट के साथ

आधुनिक एवं सर्वश्रेष्ठ तकनीक का आविष्कार एक्टिव डिटर्जेन्ट पाउडर

1 Kg. वाले कट्टे में 25 पाउच

500 Gram वाले कट्टे में 40 पाउच

200 Gram वाले कट्टे में 80 पाउच

निर्माता : पंचमणी फ्रेगरेन्स

कार्यालय : ने. हा. 76, एयरपोर्ट रोड
ग्लास फैक्ट्री चौराहा, खेमपुरा की तरफ
उदयपुर-313001 (राजस्थान)

वेबसाईट : www.archanaagarbatti.com
ई-मेल : sales@archanaagarbatti.com
www.facebook.com/Archana Agarbatti

फोन : 0294-2492161, 2490899

व्यावसायिक पूछताछ एवं डीलरशिप हेतु आर्थिक रूप से सुदृढ़ पार्टियां (वितरक रहित क्षेत्र में) सम्पर्क करें।

मो.: +91-98290 42705, +91-99508 15555

Varju Villa
A Boutique Hotel
• 32 Rooms
• Air Conditioner
• Wi-Fi
• Mini bar
• 24 hr Room Service
• Iron/Iron boards
• Karoke Room
• Parking on site
• E Safe
• Bar
• LED With Satellite Channels
• Tea/Coffee Maker in Room
• Security Enabled Locks
• Plush Mattresses
• Hair Dryer
• Transport Facility
• Foreign Exchange
• Airport Transfers
7DAYZ
Multi Cusine Restaurant
HOTEL
Varju Villa
Deluxe Room
Rooms
BAR
Super Deluxe Room
Email
info@varjuvilla.com
manager@varjuvilla.com
Website
www.varjuvilla.com
Near Nand Bhavan, 100 Feet Road,New Bhopalpura, Udaipur 313001
Phone :- 0294-2980923/924 Mobile No. :- 98284 68685

दीपावली की
हार्दिक शुभकामनाएं

स्वर्गीय श्री पटेल रामलाल जी काटका

Kuber Lal Dangi
9413771495

E-mail Id
patel3341@gmail.com

# PATEL FILLING STATION

Dealer : HINDUSTAN PETROLEUM CORPORATION LTD.

Zamar Kotada Road, Eklingpura, Udaipur (Raj.)
Ph.:- 0294-6999991

दीपावली की हार्दिक शुभकामनाएं

Ghanshyam Dangi
9660963341

Dinesh Dangi
8233782359

# Shree Ram Weigh Bridge

## 100 Ton Capacity Full Computerized

Zamar Kotada Road, Eklingpura, Udaipur (Raj.) 313001
Email :- shreeramweighbridge@yahoo.com

॥ श्री कुंथुनाथसागराय नमः ॥

**Amit Jain**
9829874881
9414160881

# KUNTHU MACHINERY MART

## Popular Brand's With Us

SAMSUNG · Panasonic · TRANE · MITSUBISHI ELECTRIC AIR CONDITIONING SYSTEMS · Godrej · htc · KENT Health Care PRODUCTS HOUSE of PURITY · iPhone · NATARAJ · PHILIPS · VU · NOKIA Connecting People · Microsoft · eltech · Whirlpool · VESTAR INTELLIGENT COOLING · lenovo · SONY · oppo · ALMONARD · TOSHIBA · BOSCH · gorenje · IFB

**Payment - Debit Card, Credit Card, KMM Easy Pay**

**Finance Available with BAJAJ FINSERV with 0% Interest**

5-B, Nakoda Complex, Kunthu Tower, Hiran Magri,
Sector-4, Main Road, Udaipur 313001 (Raj)

Phone : 0294-2467881 Email : jain.amit929@gmail.com